

शैति - शृंगार

सम्पादक

डा० नगेन्द्र, एम० ए०, डी० लिट्

प्रकाशक

गौतम पुस्तक टिपो
78 मदन, दिल्ली

प्रवाराव

गौतम बुक डिपो
नई सडक, टि-ली

१९५४

प्रथम बार

मूल्य पाँच रुपया

मुद्रव

यूनिवर्सिटी प्रस
टि-ली यूनिवर्सिटी टि

श्रामुख

गीति-शृंगार गीति परम्परा के शृंगार मुक्तियों का मरम्मत है। हिन्दी काव्य में गीति की परम्परा हम को अत्यन्त निर्भङ्गिणी क समान प्रवाहित है। अभी तक उसका कोई प्रतिनिधि संरक्षण न होना वास्तव में हमारा माहित्य का एक बड़ा अभाव था—प्रस्तुत पैर के सम्पादन द्वारा इसी भक्ति युक्ति का रिक्त प्रयत्न किया गया है। इन छन्दों का चयन गीति-काव्य के अनेक मुद्रित अमुद्रित ग्रंथों में किया गया है, और यथा-सम्भव गीति-शृंगार के गीति-शृंगार-विशिष्ट गीति-परम्परा का प्रतिनिधि संरक्षण बनाने का प्रयत्न किया गया है। गीतिपदों का हिन्दी में आवृत्ति का दुर्लभ है—यहाँ की उपधा के कारण मुद्रित ग्रंथ भी अभाव्य है, अमुद्रित ग्रंथों के रिक्त में तो कहा ही क्या! एकी भक्ति में हम संरक्षण का तैयार करने में और प्रतिनाटकों का सामना करना पड़ा है। इन छन्दों के अवन में भी हम का या यह कहना चाहिए कि गमन का ही प्रमाण माना है क्योंकि गीति काव्य पर उत्तर ही परन्तु साधारण है। मन्त्र है कि जो छन्द शृंगार की परिभाषा में प्रयुक्त होते, परन्तु उनका काव्य चमत्कार लक्षण की अपेक्षा अति प्रबल है। पाणिनिपर दृष्टि से आवृत्ति, पदान्तर, वाधा तथा व्यङ्ग्य की रचना भी गीति परम्परा के अन्तर्गत नहीं आती, किन्तु काव्य का शारद्रीय कल्पना के आधार पर प्रमाता का द्वारा अमुक्त प्रत्य-विधियों से परिचित बना के अभाव भी संरक्षण न कर रहा। यही तो गीति-शृंगार के शृंगार है।

अन्त में, एक धना-वाचना सुम्मे करी है और यह वह कि प्रस्तुत परम्परा में पाठ-जोधा पर भी विचार भ्रान्त नहीं करता। विभिन्न मुद्रित ग्रंथों एवं अमुद्रित ग्रंथों में अनेक-विधों के निष्कर्ष-विषय के अन्वेषण के द्वारा हमें ज्ञान का उत्तर विचारण का प्रश्न का सामना आया, परन्तु हमें ज्ञान का उत्तरण के लिए अनेक ही साधन, समय तथा धनता तानों का अभाव था, उक्त हमें काव्य के लिए अनेक ही साधन का उत्तरण नहीं था—अन्त में। हमें प्रश्न का उत्तरण का प्रश्न का प्रश्न ही नहीं किया और हमें प्रश्नों में प्रश्न विचारों को यथा-संभव रखा गया है। अन्त में का

आचार्य ने वेद्या-तर-स्पर्श-शून्य कहा है—अतः मेरा विश्वास है कि सहृदय पाठक को छन्दों के रसास्वादन में इन छोटी-मोटी त्रुटियों का ज्ञान भी नहीं रहेगा ।

इस ग्रन्थ का आरम्भ गौतम बुद्ध डिपो के स्वामी स्वर्गायि श्री दिलार सिंह के जीवन-काल में ही हो गया था—दैव के विधान से इसकी समाप्ति से पूर्व ही उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई । आज यह आमुखा लिखते हुए उनका वह हंसमुख चेहरा अनेक बार मेरी कल्पना में साकार हो गया है । उनकी विवगता आत्मा को सजल स्नेहाञ्जलि अर्पित करता हुआ मैं यह रीति-शृंगार सहृदय पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करता हूँ ।

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

नगेन्द्र

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
	पूर्व-रीति	
१	शुभाराम	१
२	गंग	४
	रीति	
३	पेशवदाम	११
४	सुन्दर	२५
५	सुराकर	२८
६	सायनि	३०
७	शितामणि त्रिपाठी	४१
८	बिहारी	५०
९	मनिगम	५६
१०	भूषण	६६
११	बृहन्नि मिश्र	७७
१२	सुराकर मिश्र	८८
१३	कान्तिदाम त्रिपाठी	९८
१४	भालम और शेर	१००
१५	रमनिधि	१११
१६	दय	१२१
१७	एन भाल	१३०
१८	श्रीरति	१४१
१९	मन्नाथ	१५०
२०	मन्नाथ	१६०
२१	कवि उदयाथ	१५०
२२	मन्नाथ	१६१
२३	मन्नाथ	१७०
२४	मन्नाथ	१८१

२५	दूलह	१८५
२६	वेनी प्ररीन	१८६
२७	बोधा	१९२
२८	ठामुर	१९७
२९	पमाकर	२०६
३०	प्रतापसाहि	२१८
३१	ग्वाल	२२७
३२	च द्रशेरसर वाजपेया — 'शेरसर	२३०
३३	पजनेस	२३५
३४	डिनदव	२३८

उत्तर-रीति

३५	सरदार	२४६
३६	लखिराम	२४८
३७	हरिश्चद्र	२५१
३८	रलामर	२६०
३९	हग्निश्रीध	२७२

पूर्व-रोति

कृपाराम

(हित-तरंगिनी से)

अह्न अह्न जावन ल्यो, नवल नु के आज ।
लघु सिमुना ज्यो देखिण, भोर-तरैयन साज ॥

सिम्हरति हँसति लजाति पुनि, चितवति चमरति हाल ।
सिमुता चाना की ललरु, भरे बधू तन रयाल ॥

नवल बधू तन तरुनई, नई रही है छाड़ ।
दे चसमा चर चनुरई, लघु सिमुना लवि जाइ ॥

ऐसो हॉस न कीजये, जाते रूसै हाल ।
नवल बधू की ना मिटी, अजहँ हिलरी लाल ॥

अति प्रीन पह सुदरी, मोहा को हित आँकि ।
सररी दीठि बचाइ के गई करामनि भाँकि ॥

नाइन पे नाहिन बन्यो, देत महारर पाइ ।
निरसि बधू की सर सररी, हुलसि दियो जदुराइ ॥

माहि रचे साई करै, अनि उदार प्यो जानि ।
मो मनसा घर है सदा, करे फोन विधि मान ॥

रोलति चोर-भिहीनी, निनु सरि डीठि बगाइ ।
भ्याम दुरे तिहि को मे, दुगत लग उर लाइ ॥

दिन गेरे दिन में हसे, दिन में नहु बनराइ ।
गहँ मौन दिन में बधू, दिन दगनन उपनाइ ॥

गण रूमि जदुपति सगी, निरति तधि सो मान ॥
बदनाम ते निपम उर, उपजा विरह वृगान ॥

इन्द्रधनुष सी पति अघरन की शोभा ।
 निरसि यधु-भा उपजो पूरन क्षोभा ॥

पति आया परदग ते, रितु यमन की मानि ।
 भमकि भमकि निनु महल में, टहलें करे मु रानि ॥

आय माहा गौर त, मुनि हुलसी उर नारि ॥
 परन उरन यगान दग, तरकत तनी निहारि ॥

लानन परन कटाक्ष मर, अनियारे रिप परि ।
 मन-सृग यधे मुनिन क, जाजा महित चिसूरि ॥

गग

तल में दुरी है, जैसे कमल की कलिका है,
 उरजन पेसे दी-ही सरुचि दिखाई सी
 गग करि सौंभ सी सोहाई तरुनाई आई,
 लरकाई माँभ कळ में न लगि पाई सी ॥
 स्याम की सलौनी तन, तामें दिा द्वैक माँभ,
 फिरी ही चहत मनमय की दुहाई सी ।
 सीसी में सलिल जसे, सुमन पराग तैसे,
 सिसुता में कलकति जावन की भाँई सी ॥

मृगहृ न सरस निराजत निसाल दग,
 देगिण न अति दुति झीलहु के दल में ।
 गग धन दुज से लसत तन आभूपन,
 टाढ़े द्रुम छोंह देग की गई यिकन में ॥
 चरा चित चाय भरे शामा के समुद्र माँभ,
 रही ना सभार दगा श्रीरे भई पल में
 मा मेरो गरुआ गयो री घुडि में न पायो,
 नीन मेरे हरये तिरन रूप-जल में ॥

चारी मोहै सोहै रॉमी नितवन मन माहै,
 चारो मोती नेमर अघर पर कर्यो ।
 कहै करि गंग तेरे उचकि उचकि कु
 गति न रहत निरसत भरा भर जो ॥
 आता की उपमा तैं मरन विरन भइ,
 मन्नी गोमा लै रहया निल कपोल पर को
 पंक्त्र के पीन आनी अति गो ममाइ तहों,
 मातो गी विद्धि छोरा घैठयो मधुकर को

गयं की चुगट खाल मैदहो को संर चार्यो
 मुग ज चंद चोर्या नामा चागी कोर का ।
 गिगनि क नैन चार्या दिशनि क येन चार्या,
 घाट तर लाग चोर्या देन दुदि हीर र्द ॥
 यहो करि गग येना नाग तै चुगटे लार्द,
 भाह ता दमान एन अत्र न क तीर की ।
 ना तुम छुट रे पुसरत यहैया नृ पै,
 एतनि की चागी रडा लुगगी अहरि की ॥

मग अत्र भोगी भोगी अत्र अनुग भीज,
 अथर तमार भीज रिडन मे म्पनर ।
 गनि भीजी अत्रर सहज माहे माह भोगी ,
 लाग नीनी गिनरनि श्रेम भीजी पम्प ॥
 आगे ल न गीरि दुदि देरी मगी दीट दीन्द ,
 जात नेपिन का निमि छीम अत्र म्पनर ।
 वरन विदुत भाव पूधि क विनाम गग
 रग भीजी अत्रन पुम्पन भीजी अत्र ॥

आत्र मन भाने वे विविधि विद्वाने जे,
 सकल सुहाने डराने से कै गया ।
 फुले फुले फूलनि में सेज क दकूलनि में,
 कालिदी क कूलन विसासी विस बे गयो ॥

धीर न धरति धरी दत्त विन जाति मरी,
 ऐसी रञ्जु करी दीयो घाड़नि में नौन है ।
 मुधि-मुधि टरी मानो साइ ठग धरी जीभ,
 रगी अरगी न गहति क्यों हूँ मोन है ॥
 लान परहरी सरी उघी न डरी काह,
 कहै रति गग ममुकहि सखी सा न है ।
 नौन टेर परी साठ्यो धरी कहै हरी,
 पूछ सहचरी अरी हरी तेरो कौन है ॥

हा हा नेकु आइ लेहु फूट लेति तेरो नेहु,
 केह हवे दिसाइ देहु डोरू ज्यों दगत है ।
 रहे रति गग काह व्याकुल इतर मान,
 साउ की कनाई कहाँ करेजे लगति है ॥
 फोले अचग डार मोलत डहारी लागे,
 डहडही जोह जी में डाह नी लगति है ।
 नुम त्रिनु मूनी गति कारी साँपु र्व है याति
 रति सेज देगि देसि छात उमगति है ॥

पेठी हे सखिन सग पियको गमन सुन्यो
 सुरसे ममूह में त्रियोग आग भरको ।,
 गग रहे त्रिनिध मुगध ले रको समीर,
 लागत ही ताके तन भई त्रया वर की ॥
 प्यारी को परसि पौन गयो मानमर पे सु
 लागत ही औरै गति भई मानसर की ।
 चतार जरे श्री सेगार जरि छार भई,
 जल जरि गया एक ममूह भति कानी ॥

येत सरीर हिये रिप म्याम ,
 कना फन गी मन जान चुहाई ।
 जीम मरीचि दमौ दिमि फेलति,
 फाटत जाहि त्रियोगिन ताड ॥
 मीम तें पृद्य लौं गात गर्यो पै
 टसे तिन ताहि परे न रहाई ।
 मेम के गोतके ग्मे हि होत है ,
 चन्द नहीं या फनिन्द है माई ॥

चरई रिद्धुरि भिन्नी तु न मिली प्रीतम सों ,
 गग फरि उहै एता क्रिय मान अन री ।
 अयय नद्यप्र गमि अथट न तेरी गिस,
 तू न परसन परमन भया मान री ॥
 तू न साना मृग सोला उव श्री गुलाम मृग,
 चली सीगी रायु तू न चनी, भा विहान री ।
 गति सर घटी नाही करनी ना घटी तेरी,
 दीपक मलीन न मलीन तेरो मान री ॥

अधर मधुर जेमे वदन अधिसनी छरि,
 रिधि माने रिधु कीहो रूप को उदधि कै ।
 फाह दगि आरत अमानर मुग्धि पर्यो,
 वदन छपाड गरियान लीही मधि कै ।
 मागि गईं गग हग गर रेधि गिग्घर ,
 आधी तिनगति नै अधीन कीहो अधिकै ।
 यात अधि अधि नरे का ग्योच लेत फेरि,
 अधि ननु न सोच लीही फरि अधि पै ।

रीति

केशवदास

केशोदाम लाग लाग भौतिन क अभिनाप,
 गरि दगी गगरी न वारि हिय हागी सी ।
 राभा हरि के री प्रीति सन ते अधि नानि,
 रति रतिनाह हू में देखा रति थोरी सी ।
 तिन हू में भदन भनानि हू पै पाग्यो नाइ,
 भागती की भारती है कहिय क भोगी-मी ।
 एके गति एक मति एके प्राण एके मन,
 देखिये का दह दने है नैनन की जारी सी ॥

जो हो कहुँ रहिय तो प्रभुना प्रसूट होत,
 चवन कहीं तो हित हानि नाही सहना ।
 भाये सो कहु तो उदाम भाव प्राणनाथ,
 साथ लै चलहु कमे लावनाज बहनो ।
 कंगो गय नी सी तुम मुनहु छरीले लाल,
 चलै ही वनन जो पै नाही आनु रहना ।
 नैगिये मिग्याग सीग्य तुमही मुनान पिय,
 तुमही चवन माहि जैमा कहु कहना ॥

पूरा कपर पान राये के मी मुनराम,
 अधर अरण रति सुधामी सुधारे है ।
 विप्रिन कगोल लाल लागन मुनर मैन,
 अमर मन्तर मन्तरनि माहि मारे है ।
 भुंकी कटिल जैमी नैमी नरिय हू हादि,
 आनी एमी आगे कंगो गय हरि हाह है ।

काहे को शृंगारि कै निगारति है मेरी आली,
तेरे अङ्ग सहज शृंगार ही शृंगारे हैं ॥

भूपण सकल धनसार ही कै धनश्याम,
कमुम रलित केसरहि छवि छार्द सी।
मोतिन की लरी शिर, कठ कठमाल हार,
और रूप ज्योति जात हरत हेराई सी।
चदन चढाये चारु सुन्दर शरीर सन,
राखी शुभ शोभा सन उसन बसाई सी।
शारदा सी दखियनु देखौ जाद नेशौराय
ठाढी वह कुँवरि जुहाई मे अहाई सी।

शिशुता-महित भई मदगति लोचननि,
गुणनि सों चलित ललित गति पाई है।
भौहनि की होजहोइ हरे गई कुटिल अति,
तेरी चानी मेरी रानी सुनत सुहाई है।
शौदास मुसहास ही सिखे ही, फटि तटि —
छिन छिन सृद्धम छनीली छनि छार्द है।
वार बुद्धि घालनि के साथ ही उढी है वीर
मुचन क साथ ही समुच उर आई है ॥

कोमल अमलता की रगभूमि कैधौ यह,
शामियत आँगन नै शोभा क सदन को।
अरण्य दलनि पर कीनो के तरणि कोप,
जीत्यो निधौ रजोगुन रात्रि के गन को।
पल पल प्रणय नग्न निधौ कशौदास,
लागि रहयो पूनानुगग पिय मन को।
० री वृषभानु की कुमारी तेरे पाँय सोहै
गानक को रग के मुहाग सौतिनन को ॥

कीमल अमल चन चीरने चिकुर चार
 विनये ते चित चक्रोधिगत रेशोदाम ।
 मुनहु न्द्रीली राधा छूट त छत्रे न्द्रीनि,
 नरे मटनारे हैं सुभाष ही मदा सुखाम ॥
 मुनिरे प्रसास उपहास निगि-नामर रं
 कीनी है मुन्तरा मुषाम जाय के अराम ।
 यद्यपि अनेक चद्र माय मोरपत्त तउ
 जात्यो पर चद्र मुग्ग रूप तेरे रगधाम ॥

तन आपने भाये शृगार नहीं,
 ये शृगार शृगार शृगारे वृथा हा ।
 ब्रज भूषण नेननि भूष हैं जारी
 मु ता पे शृगार उतार न जाही ॥
 मर होत सुगध नहीं तो सुगध,
 सुगध में जाति सुगध वृथा ही ।
 मयि ताहि ते हैं मर भूषण भूषित
 भूषण तो तुर भूषिन नाहा ॥

लोचन रीत चुभी मयि राय री,
 कश्य रंभे ह जानि न सन्ती ।
 मानहु मेरे गही अनुरागिनि,
 कृ म्म पक अन्धस्ति रादी ॥
 मग यो लागि रही तनुता जनु,
 यो घुमि नीत निरात री वाग ।
 मर ही मानो हिय रह मूषति
 यो अरस्ति दिय मुन अदी ॥

नीत निरात दुगद कश्य,
 विमोदस्ति ही विम अन्धस्ति तादी ।

जानि परी हसि बोलति, भीतर
 भाजि गइ अमलोकति मोही ॥
 बूमिने की जक लागी है काहहि,
 केशव क रचि रूप लिलोही ।
 गोरस की सा यग भी सों तोहि,
 कियार लगी कहि मेरी सों कोही ॥

मोहन मरीचिना सो हास घ सर कैमो,
 वास मुख रूप कैमी रेखा अमदात ह ।
 केशोदास बशीतौ त्रिनेत्रीसी बनाइगुही ।
 जामे मेरे मनोरथ मुनि से अहात ह ॥
 नेह उरके से नैन देखिने को निरुके से ।
 त्रिभुनी सी भौहें उरके से उरजात हे ।
 दनी सी बनाई विधि कौन की है जाई यह,
 तेरे घर जाइ आजु कही कैसी बात ह ॥

मत्त गयदन साथ सदा इहि,
 धार जंगम जतु पिदार्यो ।
 ता दिन ते कहि केशव वेधन,
 वेधन के वहधा विधि मार्यो ॥
 सो अपराध सुधारन शोधि,
 इहै इनि साधन साधु विचार्यो ।
 पावक पुज तिहारे हिये यह
 चाहत है अरु हार निहार्यो ॥

मद्ध सिनासित वाद्धनी केशव,
 पातुर ज्यो पुत्ररीन विचारो ।
 कोटि कटाक्ष नचे गति भेद,
 नचायत नायक नेह निहारो ॥

राजत है मृदु हास मृदग सा,
दीपति दीपनि का उन्वियारो ।
दसत हो हरि देति तुम्हें यह
हातु है आग्नि नैच असारो ॥

दशन वसन माहि दरमे दशन-द्युति,
वरपि मदन रस कस्त अनेन ही ।
झोंड भलरति लोल लोचन कपालन में,
माल लेत मनरुम वजन समन ही ॥
मोहै कह दत भाउ कहा मरी भावनी के,
भार ते छरील लाल मौन कौन हत ही ।
केशव प्रसाग हास हनि कहा लहुग तु,
एसे ही हसेन तो हिय का हरि लत ही ॥

ज्यो ज्यो हुलास सो केगदाम,
विलास निगम हिय अररेग्या ।
स्यौ स्यौ बड्या उर-वप बड्य,
भ्रम भीत भया सिधी गीत सिमरश ॥
मुद्रित हात मनी बरही मर
नैन सरानि साच के लेग्यो ।
त तु कहया भुग माहन का
अगदि सा है सा तो चंद सो देग्या ॥

पैयै सगीन की राभे मना,
मर ही क तु नैनन मोंक बरै ।
भूम्हो ते बात बगड कहै,
मन ही मन केगदाम हरे ॥
सोपनि है इत सप्त उने निव,
चित्त विचारत यो दिग्मै ।

आँसिन सों बंधे अन्न काहू की न भागी भूख,
 पानी की कहानी रानी प्यास क्यों बुझाई है ॥
 येरी मेरी इंदुमुखी इदीअर-नन लिखे,
 इदिरा के मंदिर क्यों सम्पात सिधाई है ।
 ऐसे दिन ऐसे ही गँवारति गँवार कहा,
 चित्र देखे मित्र व मिले को सुख पाई है ॥

खेलत ही सतरंज अलिन में आपुहि ते,
 तहाँ हरि आये किधौं काहूके बुलाये री ।
 लागे मिलि खेलन मिलै के मन हरे हरे,
 दिन लागे दाबु आपु आपु मन-भाये री ॥
 उठि-उठि गई मिस मिसहा जितैही तित,
 केशोराय की सों दोऊ रहे छवि छाये री ।
 चोकि चोकि तिहि छिन राधाजू के मेरी आली,
 जलज-से लोचन जलद-से हँ आये री ॥

कौ लो पीहो खान-रस रूप की बूझै है प्यास,
 केशोदास कैसे नयनन भरि पीचिये ।
 वीर की सों मेरी वीर गारी है जुनारी आन,
 नैक हसि हौं कर बलाइ तेरी लीजिये ।
 घरसक माँझ यह वैस अलपेली बीते,
 देहो सुख सगिन क्यों अत्र ही न दीजिये ।
 य री लड़नारी अहीर गमी बूमो तोहिं,
 नाही सों सनेह कीजे नाह सों न जीजिये ॥

नाह लगे मुरा सोनि दहे दुख,
 नाही लग दुख देह दहेगो ।
 नाभी अर्थ मुरा देत है केशव,
 नाह दुख मुरा देत रहेगा ॥

नाही ते नाहि री नाहि भलाइ ,
 भलो सब नाह हिते पे कहेगो ।
 नाह सो नेह निनाहि बलाइ ल्यो ,
 नाही सों नेह कहा निरहेगो ।

मिते हारी सती डरपाइ हारी कादरिनी ,
 दामिनी दिताइ हारी दिशि अचिरात की ।
 भुकि-भुकि हारी रति,मारि-मारि हारयो मार,
 हारी म्कमोरति त्रिविध गति बात की ।
 दड निरदर्ई याहि ऐसी काहि मति दर्ई ।
 जारत जु रेन ऐन दाह ऐसी गात की ।
 कैसे हूँ न माने ही मनाइ हारी केशोदास ,
 थोलि हारी कोकिल, धुलाइ हारा पातकी ॥

छरिमो छरीली वृषभानु की कुँवरि आज ,
 रही हुती रूप-भद मान-भद छकि के ।
 मारह ते सुकुमार नंद के कुमार ताहि ,
 आये री मनावन सयान सर तकि के ॥
 हँसि हँसि सौह करि-करि पाँय परि-परि ,
 केशोराय की सो जन रहे तिय जकि के ।
 ताही समै उठे घन घोर-घोर, दामिनी-सी
 लागी लौटि श्याम-घन-उर सो लपकि के ॥

भेषन ज्यो हँमि हंसन हेरत ,
 हंसन ज्यो घन रूपन पीवे ।
 कंजन ज्यो चित चंद न चाहत ,
 चंद ज्यो कंजनि फ्यो ह न दीरे ॥
 ताल ते यागति याग ते तालनि ,
 ताल तमाल की जाननि सोरे ।

उसी है केशव न युवता सुनि,
 एसी दशा पिय नी पल जीव ॥

भैं पठइ मति लेन सखी सु
 रही मिलि को मिलिने कहँ अन ।
 नाय मिले दिन ही दगदूत,
 दयाल सा देह दशा न रगाने ॥
 प्रेरत पैन किय तन प्राणनि,
 योग क और प्रयोग निधान ।
 लान त मोल न पाऊँ न केशव,
 ऐसे ही कोऊ कहा दुस जान ॥

आय त आयेगी आँगिन आगे ही,
 डोलि है मानहु मोल लई है ।
 माँ न सोवन देय न यो,
 तन सौँ इनमें उन साग्न दई है ।
 मेगिय भूल कहा कइँ केशव,
 सोति कहँ ते सहली भइ है
 म्वाय ही हित है समरे
 परदेश गय हरि नीद गइ है ॥

केशव कैसे ह मारि उपायनि,
 अन सुता उर लागति है ।
 चरचाधिनि सी चिनै चितमें,
 चित सोमत हँ मह चागत है ॥
 परदश प्रिया पल मोहि पत्यानि,
 न जान का यात्री कहा गति है ।
 ननि नैनन नीद नगान बधु
 लहु आधिरु गत त भागति है ॥

भोरिनि ज्यो भावन रहत उन प्रीधमान ,
 हंमिनि ज्यो मृदुल मृणालिस चहति है ।
 पिउ-पिउ गटत रहत चित चातरी ज्यो ,
 चन्द चिते चरु च्या चुप हने रहति है ।
 हगनी ज्या हेरति न कगकि क वानन को ,
 केस मुनि याली ज्यो मिलान ही रहति है ।
 कशान मुँस काह सिगह निहारे केसी ,
 मुरति न राधिस की मूरति गहनि है ॥

राघ दरीन बसे कशानदाग रगरी ज्यो ,
 केसरी को देव उनरगी ज्यो खैपत है ।
 चागर की संपदा चरार ज्यो न चितवत ,
 चरुना च्यो चद ही ते चौगुनी चरत है ॥
 रना मुनि च्याल च्यो प्रितात जात घनम्याम ,
 घननि की घोरनि ववाने च्यो तपत है ।
 भोर ज्या भवत घन योगी ज्या तगतनिशि ,
 चातर ज्यो ज्याम नाम तेराइ खपत है ॥

चही चही दूरे तही जौहपमी तग-भगे ,
 केने हूँ त केगव दुगड ल्याउ रंग की ।
 पवन का पव अलि अति क पीछे अली ,
 अलिनि ज्यो लागी गहे जिहे साथ रंग की ।
 त्रिपट अमिल यह तूहे मिलिप की जर ,
 केमे के मिलाऊँ गनि मो दे न विहस की ।
 इठ ता दमह दग देनि हुनी, दुनि हूँ त
 बीग विवेचिप गात भट पार अरु की ॥

शीतल गमीर गर चंद्र-चंद्रिय निगर
 लेगे ही तो कशादाग हगप हगत के ।

फूलनि फेलाइ डारु भारि डारु घनसारु ,
 चंदन को डारु चित चौगुनो पिरातु है ।
 नीरहीन मीन मुरभाइ जीवे नीर ही ते ,
 झोरते छिरीके कहा धीरज धिरातु है ।
 पाए है ते पीर निधौ यों ही उपचारु करै ,
 आगिही को डाढो अग आगि ही सिरातु है ॥

खेलत न खेल कछु हाँसी न हँसत हरि,
 सुनत न कान गान तान बान-सी वहै ।
 ओढत न अम्बरनि डोलत दिगम्बर से,
 शम्बर-ज्यो शम्बरारि दु स देह को कहै ।
 भूलिहू न सूँधे फूल फूलि फूलि कुँभिलात
 जात, खात बाराहू न बात काहू सो कहै
 दरि-देति मुसचन्द केशव चकोर सम
 चद्रमुसी चद्र हू के विच-त्यो चितै रह ॥

फूल न दिराउ, शूल फूलत है हरि विनु,
 दूरि करि माल बाल ध्याल सी लगति है ।
 चर चलाउ जिन धीनन हलाउ मति
 केशन सुगध-वायु वाइ री लगति है ।
 चंदन चढाउ जिन ताप सी चढाति तन
 कु कुम न लाउ अग आगसी लगति है ।
 बार बार चरजति बारि है बारो आन
 विरी ना सगाउ वीर विप-सी लगति है ॥

चपला न चमकनि चमक हथ्यारन की
 बोलत न मोर बंदी सयन समान के ।
 जहाँ तहाँ गाजत न धाजत दमामे दीह
 देन न दिखाई दिन-भणि सीने लाज के ॥

चलि चलि चन्द्रमुग्धी सामरे सत्ता पे जेगि
 शोपक जु कन्नादास अरि सुल साज के ॥
 चदि चदि पनन-तुरगन गगन घन
 चाहत फिगत चद याघा यमराज के ॥

असियॉनि मिली ससियॉनि मिली,
 पतियान मिली बतियोँ तजि भॉन ।
 ध्यान निधान मिली मनही मन
 ल्यो मिले एक मनो मिल सोन ।
 रगर जेमेहुँ बेगि मिलौ नतु
 हवे है यहै हरि जो कन्द हॉन ।
 पूरण प्रेम समाधि मिले
 मिलि जेहे तुम्है मिलि हो तर रौने ॥

आतु मिले शृपभानु-चुमारिहि
 नन्द कुमार नियोग तिते के ।
 रूप की राशि गम्या रम केशर ,
 हास विलासनि रोम रिते रे ।
 रागे क भीतर देगि हिये नरा ,
 नेनन वाइ रही सु इते के ।
 पूनहि मे भ्रम भूनि मनो
 मरुते सगमीन्ह चंद चिते के ।

शुभन ही वह गापी गुणान्हि ,
 आतु यह हैमि क गुण गापहि ।
 लमे मे कहत छी नाम मगी यहि
 केमे धी आइ गयो मजनापहि ।
 गानि : सरारति हा जु रिरी ,
 सु रही मृग की मृग हाय की हाथहि ।

आनुर ह्वै उन आँसिन, तें अँसुना,
निकमे असरानि के साथहि ॥

सौह का सोच न सकोच काह सोच नी को,
पाँछो प्यारे पीन लीक लोचन किनारे की ।
मागन की चोरी की है योरां योरी मोहँ सुधि,
जानत कहा किशोरी भोरी है जु चारे की ।
मरी ये कुमति और कहा कहौ कशोदास,
लागत न लाल लाज इहाँ पग धारे की ।
एती है भुठई वाहि अन ही रठई,
यह छार ह तो छूटी नहीं पाँइन के पार की ॥

रग रनि मोहि घर जान देहु घनश्याम,
घरिक में लागी उर देगिनी ज्यो दामिनी ।
हाइ कोऊ ऐसी-चैसी आये इत उत हने नै,
वे ऊ ग्रपभानु जू नी रैटी गज-गामिनी ।
यादित का आयो अन्त आयो रनि रलि जाउँ,
आगत है वे ऊ रनि आई अर यामिनी ।
राम न डरन तुम कुज गयो केशोदास,
भौरन के भवन भवन गह्या भामिनी ॥

सुन्दर

मानों भुजगिन न न चढ़ी
 मृग उपर आय रही अलने ली ,
 रागी महा सटकागी है सुन्दर ,
 भीति रही मिल सौधन ही सौ ।
 लटकी लट न लटकीली तें और
 गड़ उड़िके छवि आनन की यो
 आँफ उठे दिये दूजी निरागी ने
 होत रपेयनु तं मुहर ज्यों ॥

दगति नैन की फोरन ला
 अधगति ही में मुमस्यानि की बानी ।
 चावति गोल मा कठ ही में,
 चलते पग पे न रहँ अहरानौ ॥
 सुन्दर राप नहीं सपने ,
 अरु चा भयो तो मन ही में विलानी ।
 हे वमुधाण मुधाण सरी ,
 पर यासी मुधाइ मुधाण है मानो ॥

कह उनमाल कहँ गुँजनिनी मान कहँ ,
 मंग-गरा ग्यात एमे हाल भूति गये है,
 कहँ मोगाद्रिस लखट कहँ पीन-यट
 भुगली-भुगुट कहँ दागि दये है ।
 वु डल अडोत कहँ सुन्दर न चोने गोल
 लोरा अलान माती पाहू हर लप है ।

घूँघट की झोट हँके चितयो कि चोट करी,
लालन तो लोट-पोट तन ही ते भये ह ॥

मकुची न मखीन सो, सौतिन सो,
सपने हूँ न सासु की कान रहँ ।
कृनमान की तीयन सो किहँ भौति,
डराए ते हौ न डरी कन्हँ ॥
कहि सुन्दर नदकमार लिप,
तन कौ तनकौ नहिँ चैन कहँ ।
हरि के हित में तौ करी इतनी,
हरि कीहीं जु आप नहीं अजहँ ॥

प्रीतम गौनु किधौ जियगौनु कि
भौनु कि भारु भयानक भारो,
पावस पावक फूल कि सूल
पुरन्दरचाप कि सुंदर आरो ।
सीरी बयारि किधौ तरवारि है
वारिदवारि कि वान पिपारो
चातक बोल कि चोट चुभै चित,
इन्द्रधनु कि चकोर मो चारो ॥

भोर भये मधुग को चलेंगे
यो यात चली हरि नन्द-सल्लाकी,
बोल सनी न सरोचनि ते,
पीरी भई मुखभोति तिया की ।
सुनि हाथ टिकाइ ललाट सौ बथी
इहँ उपमा कवि सदरत, नी,
देते मनो तिय आयुके आतर
और पछु है रहे बच गरी ॥

साग मौ मशरिके गुलान माँहि ओग डागि,
 मीतल चयारि हें मौ नार नार उगिये,
 चैन न परत दिनु चम्पक ते चन्दन ते,
 चद्रमा ते चाँदनी ते चौगुनी वे जगिय ।
 सुन्दर उमीर चीर उतरै ते दूनी पीर,
 कमल कदुर कोरि एक टौर करिय,
 पौ मागि सिग्हागि उठी तन माँक लागि,
 सोड होति आगि चाड आगे लाड धगिय ॥

उधावू मदसो नाहि रहयो जाइ कहा कहे,
 जेमी कगी काह तेमी कोऊ न वस्तु है,
 नीम ता हमारो एक कहीं लागि नहीं परै,
 जी में निनी कहीं तिनी परोह ना सरतु है ।
 झग्गा नमनु हरि सुन्दर समुद्र ही में,
 इहो पर्याह जाइ सिंधु में परतु है,
 जानि है ये जमुना क जन ही तें जाकी जाल,
 जतधि में परया पटवानत जगु है ॥

कसे गण बगल पतटि आग बगन,
 मु मरा पद्म बग न रसन उर लाग ही ।
 भाँहि निग्दोहें करि सुन्दर मुजान साहँ,
 कद्म अलमोहें गोहँ जाक रम-बागे ही ।
 परमा में पाँय हुने परतो में पाय गहि
 परसो व पाय निगि जाके अनुगाग ही ।
 कौन बनिना के हो नू कौन बनिना क ही मु,
 कौन बनिना के बनि, ताफ मंग जग ही ?

मुनारक

(अलक शतक—तिल शतक)

अलक छटी लपटी उदन देसो दुति दग दौरि ।
चढी भाग तै भाल तिय मनु सिंगार की बौरि ॥

तिय नहात जल अलक तै चुअत नया की कोर ।
मनु सजन मुस देत अहि अमृत पौंछि निचार ॥

तिल कपोल पर अलक भुकि भलकत ओप अपार ।
मनो मयन के धीच तै उपजी लता सिंगार ॥

अरन चीर के घूँघटे भलके अलक सुदार ।
मनु सोहाग-सर में परे रचि-सेगार-शृंगार ॥

घूँघट प्रीति दुकूल के भलकत अलक सोहाय ।
मनु अनुराग समुद्र में विसहरि निरह नहाय ॥

तिल तरनी के चिनुक में सो आरसी अनूप ।
मन मुस दैसे आपनो सूकै काम अनूप ।

तन कंचन हीरा हसन विद्रुम अघर बनाय ।
तिल मनि स्याम जडे तहाँ विधि-जरिया उजराय ॥

बेनी तिग्वेनी यनी तहँ मन माघ नहाय ।
इक तिल के आहार तै सन दिन रैन निहाय ॥

हाम सतो गुण रन अघर तिल तम दुति चितरूप ।
मेरे दग जोगी भये लये समाधि अनूप ॥

मोहा कार क्यम को काम दियो तिल नोहि ।
अन जन अरियन में परे मोहि लैत मन मोहि ॥

(स्फुट)

कनक-चरन बाल जगन लमन भाल,
 मॉनिन के मात्र उर माई भली भॉति है ।
 चद्रमे चदर्भ चारु चम्पुवी मोहिनी-मी,
 प्रात ही अहाड पगु धारे ममसाति है ॥
 तुनगी विचित्र ग्याम सचि के मुबारक तू,
 डॉकि नयन-सिग ने निपट सद्बुचानि है ।
 चद्रमे लपटि र समेटि के नरत मानो,
 तिन को प्रणाम किय गत चनी जानि है ॥

काह री गौरी चितौनि चुभी
 मुदि काल्हि ही भ्रात्री है ग्यालि गसाद्धनि ।
 दगी है नोगी-सो चागी-मी कोरनि,
 आद्रे फिर उभरे चित जा छनि ।
 मार्या समार हिये म मुबारक,
 ये सहने कवगर मृगाद्धनि ॥
 सोक ल काव्र दे री गौरीनि
 आंगुरी तेरी कंगी मृगाद्धनि ॥

हमको तुम गर, अनेक तुम्है,
 उनही के निक बनाड यही ।
 इत राह निहागी रिहागी,
 न्ते मरमा के नह मदा निरही ।
 अर फीरो मरागर नाड फरी,
 अनुगमना तिन घाद दही ।
 घनम्याम मुगी रहौ आग मो
 तुम तीर रही, जाही क गही ॥

तिसुर मर पुनुमिन डारि दे,
 मार ययानि परे जा मरगन ।

सेनापति

(ऋचित्त-रत्नाकर)

लाह सों लसति नग सोहत सिगार हार
छाया मोन जरद जुही की अति प्यारी है ।
जाकी रमनीय रौस पाल है रसाल यनी
रूप माधुरी अनूप रभाउ निगामी है ।
जाति है सरस सेनापति बनमाला जाहि
सींचे घन रस फूल भरी म निहारी है ।
सोभा सत्र जोवन की निधि है मृदुलता की
राजै नत्र नारी मानो मदन की धारी है ॥

चाहत सरल जाहि रति क भ्रमर हे जो
पुनरति होम उरनसी की विसाल है ।
भल्ली त्रिधि कीनी रस-भरी नत्र-नावनी है
सेनापति प्यारे बनमाली की रसाल है ।
धरति सुवास पूरे गुन की निवास अत्र
फूली सत्र अ ग ऐसी कौन कलिजाल है ।
ज्यो न कुम्हिलाइ कठ लाइ उर लाइ लीन
लाई नत्र पाल लाल मानो फूल-माल है ॥

कम रहै भारे मित्र करमो सधारे तेरे
ताही मॉक पैयत मधुर अनि रस है ।
तपति बुभाइन की द्विय सियराइये की
रभा ते सरस तेरे तन के परस है ।
आन धाम धाम पुरइन है कहाया नाम
जाक हिंसत मैलो चद की दरस है ।
सेनापति प्यारी ते हा भुवन की साभा धारी
नृ है पदमिनि तेगी मुरत तामरस है ।

निरह हुनासन करत उर ताके रहै
 बाल मही पर परी भूस न गहति है ।
 सेरती कुमुम हूँ तैं कोमल सरल अग
 सून सेज रत काम केलि की कर्ति है ।
 प्रानपति हेत गेह अग न सुधारे जाके
 घरी है घरम तन में न सरसति है
 देखौ चनुराइ सेनापति कर्तिआई की जु
 भोगिनि की सरि की बियोगिनी लहति है ॥

राधिका के उर उड्यो काह को निरह-ताप
 धीने उपचार पे न होति सितलाइये ।
 गुरचन देखि कहा सरिन सी मन में की
 सेनापति बरी है फचन चतुराइये ।
 माधव क विदुरे तैं पल न परति कल
 परी है तपनि अति मानी मन ताइये ।
 सी० रगमान की न रहै तो जरनि क्यू
 छाया घनम्याम की जा पूरे पुन पाइये ॥

कुट से दसन धन, फदन धरन तन
 कुद सी उतारि धरी फ्यौ बने विदुरि के ।
 साभा सुरा फद देख्यो चाहिये बदन-बंद
 प्यारी जय भंद मुमक्यति नैफ मुरि के ।
 सेनापति फमल से फूलि रहै अचल मै,
 रहै दग चंचल दुराण हू न दगि के ।
 पलकें न लागे देगि ललकें तन्न-मन
 भ्रमकें रगोल रही अवरकें विधुरि के ॥

शंद दनि भंद बनि, नखिन मखिन तै ही,
 तो ते दर अगनाऊ रभाखि तर है ।

सेनापति

(रघुचिन्त-रत्नाकर)

लाह सो लसति नग साहत सिंगार हार
छाया सोन जरद जुही की अति प्यारी है ।
जात्री रमनीय रौस बाल है रसाल बनी
रूप माधुरी अनूप रभाउ निवागी है ।
जाति है सरस सेनापति वनमाला जाहि
साचै घन रस फूल भरी म निहारी है ।
सोभा सत्र जोवन की निधि है मृदुलता की
राजै नर नारी मानौ मदन की वारी है ॥

चाहन सफल जाहि रति के भ्रमर है जो
पुनरति होस उरजसी की विसाल है ।
भली विधि कीनी रस-भरी नर-जावनी है
सेनापति प्यारे वनमाली की रसाता है ।
धरति सुवास पूरे गुन की निवास अत्र
फूली सत्र अग पेसी कौन रलिकाल है ।
ज्यौ न कुम्हिलाइ न ठ लाइ उर लाइ लीन
लाई नर बाल लाल मानो फूल-माल है ॥

केम रहै भारे मित्र जरसौ सधार तर
तोही माँक पेयत मधुर अति रम है ।
तपति उभादन की हिय सियगडवे की
रंभा ते मरस तर तन का परस है ।
आन धाम धाम पुरइन है कहायो नाम
जाइ निहसत मेली चद की दरस है ।
सेनापति प्यारी ते ही भवन की साभा धारा
नू है पदमिनि तेगी मुरत तामरस है ।

विरह हुनासन धरत उर ताके रहे
 बाल मही पर परी भूख न गहति है ।
 सेवती कुमुम ह वै कोमल सखल अग
 सून सेज रत काम केलि को करति है ।
 प्रानपति हेत गेह अग न सुपारे जाके
 धरी है बरस तन में न सरसति है
 देवी चनुराइ सेनापति कबिताई की जु
 भोगिनि की सरि को बियोगिनी लहति है ॥

राधिका के उर चढ्यो काह को विरह-ताप
 कीने उपचार प न होति सितलाइये ।
 गुरुजन देखि फहा सरिन सी मन में की
 सेनापति कगी है कचन चतुगड्ये ।
 माधव न विदुर तै पल न परति कन
 परी है तपति अति मानो मन ताइये ।
 सी, टगमान की न रहे तो जरनि क्यू
 छाया घनस्थाम की जा पुगे पुन्न पाइये ॥

कुट से दसन धन, वदन परन तन
 कुद सी उतारि धरी पयो बने विदुरि के ।
 माभा सुख कद देख्यो चाहिये बदन-चंद
 प्यारी जन भंद मुमसति नैर मुरि के ।
 सेनापति कमल से फूलि रहे अचल में,
 रहे दग चरण दुराण ह न दगि के ।
 पलके न लागे देखि ललके तग्न-भा
 भक्तके कपोल रही अलक विधुरि के ॥

पद दति मंद बजने, नमिन ममिन ते ही,
 ता ते देव अगनाऊ रंभातिक तर है ।

तोसी एक तुही, और तोसे तेरे प्रतिनि,

सेनापति ऐसे सब कवि कहत रहै ।

समुझै न वेइ, मेरे जान यो कहत जेइ,

प्रतिविब वैह, तेरे भेष निरतर हैं ।

यातै में विचारी प्यारी परै दरपन बीच,

तेरे प्रतिनिनी पे न तेरी पटतर है ॥

तेरो मुख देखे चंद देरी न सुहाइ, अरु

चंद के अक्षत जाको मन तरसत है ।

मेरे तेरे मुख सो कहत सन कवि ऐस,

देखौ मुख चंद के समान दरसन है ।

वे ती समझ न कछू, सेनापति मेरे जान,

चंद तौ मुखारविद तेरो सरसत है ।

हैंसि हैंसि, मीठी मीठी बातो कहि कहि ऐसे

तिरछे कटाच्छ कन चंद घरसत है ॥

छूट्यो ऐवो जैवो, पेम पाती को पटयो छूट्यो,

छूट्यो दूरि दूरि हू तें देखियो दगन तें ।

जेते मधियाती सब तिन सौं मिलाप छूट्यो,

कहिबो सैंदस हू को छूट्यो सकुचन ते ।

पती सन बातो सेनापति लोरु-लान काज

दुरजन प्रांस छूटी जतन-जतेन ते ।

उर अरि रही, चित चुभि रही दसौ एक

प्रीति की लगनि क्यो हूँ अटति न मन ते

फूलन सौं बाल की घनाइ गुही धनी लाल,

भाल दीनी चैंदी मृगमद की असित है ।

अग अग भूपन घनाइ मज-भूपन नृ,

वीरी निज घर के रगाइ अति हित है ॥

हैं वे गम-धम जन दीने को महाजर के,
सेनापति रथाम गह्यौ चरन ललित है ।
चूम हाय नाथ कू लगाइ रही अभिन सौ,
कहीं प्रानपति यह अनि अनुचिन है ॥

जोते प्रानप्यारे पदमे को पधार तौते,
निगह ते मइ तेमा ता तिय की गनि है ।
अरि कऊ ऊपर कपालहि कमल नेनी
सेनापति अनमनी पाठ्यै रहति है ।
सगहि उड़ान, कौह कौह कौ सगुनौती,
कौट बेठि अरधि क वासर गनति है ।
पदि पदि पानी सौह फरि के पदति, कौह
प्रीनम को भिन्न मे सरूप निरखति है ॥

बाल, हरिलाल क रियाग ते विहाल, रेनि
यामर परावे बेठि उर को निमानी मौ ।
बाल ? कौन बल ? कऊ गन चलाने कौन ?
रहत है प्रान प्रानपति की कहानी सौ ।
लागि रही सेन मौ अनेन ज्यौ, न जानी जानि,
सेनापति चरनन चनन न बानी सौ ।
रही इतरक, मानौ जनु, गिर निय
रचक निन्दी है काः कचन क पानी सौ ॥

मान है कर्माल परावार क अपार, तऊ
जमुना लहरि मर हिय को हरनि है ।
सेनापति नीरि पटवाप ह ते मज-रज,
पागिनात ह ते बन-स्तना सगमनि है ।
अग मुकुमारी रुग मारह सहस गनी,
तऊ दिन एक पं न रथा बिमगनि है ।

कचन अटा पर जराऊ परजक, तऊ
कुजन की सेनें वे करेजे खरकति हैं ॥

कौनें निरमाए, कित छाए, अजहूँ न आए,
कैसे सुधि पाऊँ प्यारे मदन गुपाल की ।
लोचन जुगल मेरे ता दिन सफल हूँ है,
जा दिन बदन-ञ्चरि देखौ नंदलाल की ।
सेनापति जीवन अघार गिरिधर त्रिन,
और कौन हरे गलि त्रिथा मो त्रिहाल की ।
इतनी कहत आँसू बहत, फरकि उठी
लहर लहर दग बाँई बज बाल की ॥

सरस सुधारी राज-मंदिर में फूजवारी,
मोर करँ सोर, गान कौकिल विराज के ।
सेनापति सुसद समीर ह, सुगंध मद,
हरत सुरत-सम-सीहर सुभाज के ।
प्यारी अनुकूल, कौह करत करन-फूल,
कौह सीसफूल, पावडेऊ मृदु पाँव के ।
चेत में प्रभात, साथ प्यारी अलसात, लाल
जात मुसकात, फूल नीनत गुलाज के ॥

रूप को तरनि तेज सहसौ धिरन करि,
ज्वालन के जाल निराल बरसत है ।
तचति धरनि, जग जरत भरनि, सीरी
छाह को पररि पंथी-पल्ली धिरमत है ।
सेनापति नैक दुपहरी के दरत, होत
धमका निपम, ज्यौ न पात सरकत है ।
मेरे जान पौनी सारी छौर को पररि कौना,
धरी एक घंठि कहूँ घामे नितरत है ॥

दूरि जदुगड, सेनापति सुगदाई देसो,
 आइ रितु पाउस, न पार प्रेम, पतियाँ ।
 धीर जलधर की, सुनत धुनि धरकी, है
 दरमी सुहागिल की छोह भरी छतियाँ ।
 आइ सुधि चर की, हिये में आनि सरमी नृ
 मेरी प्रान्प्यारी यह पीतम की रतियाँ ।
 नीती औधि आपन की, लाल मन-भावन की
 डग मई वासन की, सासन की रतियाँ ॥

सारग धुनि सुनाये घन रस परसाये,
 मोर मन हरपाये, लागे अति अमिराम है ।
 जीवन अपार बनी गरब कवन हार,
 तरति हरनहार देत मन फल है ।
 सानिल मुमग जाकी छाया जग, सेनापति,
 पावत अधिक तन-मन निमिराम है ।
 सपे सग लीने सनमुस तेरे धरसाऊ,
 आयी घनभ्याम मरि मानौ घनस्थाम है ॥

मूरें तनि भाजी, बात करनि मी जय मुनी,
 हिम की हिमाचल वे चमू उतरनि है ।
 आग अगहन, फनि गहन दहन ह की,
 तित ह वे चनी, कहें धीर न धरनि है ।
 हिय में परी है हल दौरि गहि, तजी नूल,
 अर निच मूल सेनापति सुमिरनि है ।
 पूर में प्रिया के ऊँचे कुच-वनस्यवन मे,
 गदरे गरम भरे, सीत सी लगनि है ॥

गिरि में सति की सम्प पाये मरिनाऊ,
 धान ह में चाँदनी की दुनि दनरनि है ।

सेनापति होत सीतलता (?) हे सहस गुनी,
 रजनी की भाँई चासर (?) में भ्रमकति है ।
 चाहत चक्रोर, सूर और दग छार करि,
 चक्रा की छाती तजि गीर घसकति है ।
 चटके भरम होत मोद है कमोदनी की,
 ससि अक परजिनी फूलि न सकति है ॥

सिसिर तुषार के चुखार से उत्सारत है,
 पूस बीते होत सुन हाथपाइ ठिरि कै ।
 घोन मी छटाई की बडाई करी न जाइ,
 सेनापति पाई कडू सोचि कै सुमरि कै
 संत ते सहस कर सहस चरन है कै,
 ऐसे जात भाति तम आवत है धिरि कै ।
 जो ली कोरु कोरी कौ मिलत तो लौं होति राति,
 कोक अधरीव ही तैं आवत है फिरि कै ॥

अन आयी माह प्यारे लागत हैं नगह, रनि
 करत न दाह, जैसी अररेगियत है ।
 जानिये न जात, बात कहत मिलात दिन,
 छिन सौ न तातैं तनको निरेखियत है ।
 उलप सी राति, सो तो सोण न सिराति क्योंह
 सोइ सोइ जागे पै न प्रीत पेखियत है ।
 सेनापति मेरे जान दिन हू तैं राति भई,
 दिन मेरे जान सपने में देखियत हैं ॥

कच दिन दूलह के अरन-धरन पाइ,
 पादहौ सुभग, चिन्हें पाइ पोर जाति है ।
 ग्मे मनोरथ, माह मास मी रजनि, जिन
 प्यान सौ गयोई, आन प्रीति न सुहाति है ।

सेनापति ऐसी पद्मिनी को दिराइ नैरु,
 दूर ही तैं द कै, जात होन इह भँति है ।
 बद्ध मन पूनी रही कडू अनपूनी, जेमे
 तन मन पूलिते श्री साध न बुझाति ह ।

पर त तुसार, भयो म्भार पतम्भार, रही
 पीरी सन डार, सो नियोग सरसति है ।
 चोलत न पिरु, सोइ मौन ही रही है, आस—
 पास निरजास, नैन नीर चरसति है ।
 सेनापति केनी विन, सुनरी सहेली । माह
 मास न अकली वन-वेती मिलसति है ।
 निरह तै छीन तन, भूपन-निही । दीन,
 मानहुँ धर्मत-कन काज तरसति है ॥

तन न सिधारी साय, मीडति है अन हाय
 सेनापति जदुनाय विना दूर न सहै ।
 चले मन-रचन के, अंजन की मूलि सुधि,
 मंथन की कहा उनही के गुँदे केम है ।
 विन्द्रे गुपाल, लागे फागुन वगल, ताते
 भर्न है विहाल, अति मले तन-भेम है ।
 पूल्यो है रसाल, सो तौ भयो उर साल, सररी
 डार न गुलाल, प्यारे लाल परदेम है ।

उगल विगोरी भोरी वनरि ते गोरी, छैन
 हागी मै ग्ही हो मद जोवन फ छरि के ।
 धपे वंमी भोज, अति उन्नत उरोज पीन,
 जाके सोभ रीन फटि जाति है लचरि के ।
 लाम है चलायो, सलगाई लामना को देखि,
 उपगो उर, उपगो ओर तकि के ।

सेनापति सोभा को समूह कैसे कह्यो जात,
रह्यो है गुलाल अनुराग सो भूलकि कै ।

सीता अरु राम, जुग खेलत जनक धाम
सेनापति देखि नैन नैकहू न मटके ।
रूप देखि देखि रानी, वारि फेरि पियै पानी,
प्रीति सो बलाइ लत कैयो कर चटफ ।
पहुंची के हीरन में दपति की भाँई परी,
चद विवि भानी मध्य मुकुट निकट के ।
भूलि गयी खेल, दोऊ देखत परसपर,
दुहुन के दृग प्रतिबिम्बन सो अटके ॥

चिंतामणि त्रिपाठी

इरु आनु मे कुदन बलि लरी,
 मनिमंदिर की रचि वद भरे ।
 कुरिद न पल्लव इ दु तहो,
 अरिदन ते मरद करे ।
 उत बुदन क मुनुनागन ह्य,
 फन मुन्दर भे पर आनि परे ।
 लसि यो दुति-बंद अनंद-कला,
 नदनद मिलाद्रय रूप धरे ॥

राधा जू के अंग-अंग रचि ल्यो रचिर तामु
 गुलासन क रंग रचि सौरभनि सो भरी ।
 विरहि चुरासति मु काकिल की यानी लगी
 कानन चितौनि प्रेम-मदकी मनो भिगी ।
 चिन्तामनि सो ही है रसाल मार कृ जनि मे
 अन्निन के पुजन मु मानौ मुनिआ विगी ॥
 शानन क शीत तरनाइ आर मिमिर मे
 माघ मुदी परमी मे ज्यो रमत की सिरा ॥

काकिल कुरु सुन उमग मनि
 और सुभाय भया अन ही का ।
 पूनी लना ड्रम ड्रुज मुहाय
 लगे अति गु जन भासन ती को ॥
 कागन फीन भया जननी यह
 रत्न लगे गुड़ियान को फीका ।
 बरह ते मौरा अग छरीती
 लगे तिन दूवै ते नैनानि नीका ॥

बाँकी मई भृकुटी विन कारन,
 लोचन कानन आनि रह हैं ।
 छाती कछु उचकी विन टौर,
 बँकी चितनै इक भाउ लहे है ।
 पौंइ उखड्ड धरै गए मनि,
 वैन सकोच न जात कहे हैं ।
 मौनहि मौन निचार करै
 मेरे अगनि कौन सुभाव गहे हैं ॥

काह को पूरव पुय लता सु तो
 बेलि अपूरव तू उलही है ।
 सोने सो जाको स्वरूप सबै
 कर-पल्लव काति कहा उमही है ।
 फूल हँसी फल है कुच जाहि के
 हाथ लगै सुटती सो सही है ।
 आली की यौ सुनिके बतिया,
 मुसक्याइ तिया मुल नाइ रही है ॥

बेसरि चारहि चार उतारत,
 केसरि अग लगानि लागी ।
 आई है नैननि चंचलता
 दग अचल बाम छपावनि लागी ।
 दूलह के अमलोरुन को
 वा अटानि मरोरुन आनि लागी ।
 घोस दो तीनक ते बतिया,
 मन-भावन की मन भावन लागी ।

१
 बहूँ किमुक-फूल-फलानि सो पूजत
 रामु, लसे धृपमान हरी ।

मुसम्पाति नद्ध मनि डीठि सरती की,
 सुनाल उरोवन बीच परी ।
 अंसुवान निलोचन पूरि रही,
 सु निमूरति सी कडु आघ घरी ।
 तन कौल-कम्पी से दुश्री कर जोरि,
 तिया नित शंकर ओर करी ॥

मोही है ग्याल गुपाल लखे
 धृनगाल कडु न भेदन पावे ।
 बोले न बोल उगी-सी लखे मनि
 मैन के धानहि यो अकुनावे ।
 रोमन अग कदंब कली,
 मन में घनस्याम की यो छवि द्वावे ।
 सारति मंद कपोल हँसी
 उमगे अंसुआँ अरियोँ भरि आवे ॥

देखे न पर्यो सुस मानि घनी मन,
 जा सुस मान की सोर भयो है ।
 मोररो सुन्दर ज . सिगरी
 मन-नारिन की चित धोर लयो है ।
 आपुने आइ अटा में भट्ट,
 घनधोर घटान की मोर भयो है ।
 नंद-विमोर चरोते की ओर
 सु तो मृत चंद-नकोर भयो है ॥

शाल के मिलन आम गण चित्र-साल खाल
 सलखन पल एक धरज न उहरै ।
 गगी मय ल्याः भयना को क्षम-धम,
 सगि दरीनी क्षरिनी के मरुत अग हहरै ।

फरी जाराफरी प्यारी सगी सेज ऊपर,
 सु आँसिन के ऊपर ह्व आँस थों ढरहर' ।
 न्करु कास म-य मधुकर अकुलाने मानी
 छलकी सरोजन के ऊपर है लहर' ॥

वेस की उठौन ठौन रूप की अनूप, का ह,
 अ ग अ ग औरै रुद्ध ओप उलहति है ।
 चितामनि चचना विलास वो रसाल नेन
 मदन के मद और आभा उमहति है ।
 कुदन की नैली-सी नवेली अलपेली बाल
 केतिक गरम की सों गौरता गहति है ।
 उमकि भरोते तुम्हें चाहिने की चदमुसी
 द्यौमह में चंद्रिका पसारति रहति है ॥

गस का विलास देखि, चितामनि धुनि मुनि-
 भेसना की, रुनर नूपुर विछियन की ।
 चद्रमुसी चंद्रिका पमारी आनि अरनि में
 देखत जो धन्य दसा ताही के जियन की ।
 तुम्हें दसि प्यारी ऐमी मगन भई है, जाते
 दरकि गई है तनी अगिया सियन की ।
 दसो लला ललित छीली ऐसा गीरी रनी
 आनति जु फीरी ररे दीपति दियन की ॥

राज जय जाने महा मधुर नगर बीच
 नागरि नितिल ललरनि अरुनाइ है ।
 चितामनि यहै अनि परम ललित रूप
 अटा पर दूलह नितोवन सो आई है ।
 फल महलनि मनि-भेसला मनक महा

पहिले उज्यारी तन-भूपन-मद्यपन की
पात्रे ते मयक-भुगी भृगेगन आड हैं ॥

अमलोकनि में पर्व न लग,
पनकी अमलोकि विना ललरै ।
पति न पगिपूरन प्रेम पगी,
मन और सुभाय लगे न लरै ।
तियरी विहमीही विनीरुनि में
मनि आनद आँसनि यो भलवे ।
रमचंत रचित्तन री रमु ज्यो
असगन के उर हवे छलकै ॥

चेत की चाँदनी केशी चंद्र अमलोकन ते
छीरनिधि छीर के पूरन-गूर उमगे ।
चितामनि कहै मन आनद मगन हवे कै
विहगत दपती परम प्रेम गी पगे ।
अवगुनी अगियों मुरनि मुरन रसरत
मान्यो भँर अधगुने रमलनि में मगे ।
प्यारी के मरल तन अम चल-रिन्द मोहै
अनक-लता मै मुरना-फल मनो मगे ॥

तुही धन, तुही प्राण, तोही में हरी रा मन
तेरे ही रिझाये री गीति में प्रीति है ।
चितामनि विना निन रहे लगी तेरी गै
तेर ही रिह गिन विन हात प्रीति हैं ।
ईश उ त कीने टरुगधनि न्तर हट,
छोड़ गीबै, तेर उर-अर अर्पन है ।
नृ है पी के नैर अरविन्द की इदिरा
औ पी क री तेर तनु-धनि के मीन ॥

गूँधति है मानौ मुकताहल के हार वह
 चारु नीर-नैननि की धार यों ढरति है ।
 अरुन अधर वहि काहे को दुखित करै
 कौन हेतु आजु उची सोंसन भरति है ।
 अचल हव रही केलि-मदिर में चितामनि
 सघन बदन चद चद्रिका परति है ।
 वैठी वत आनु कर कमल कपोल धरि
 ध्यान तू कमल-नैनी कौन को करति है ॥

वा मनि मदिर की छवि-वृद
 छपाकर की छविपुजनि पर
 पाद के स्वच्छ मनोहर चाँदनी,
 चापु लै मैन महा बल रोखा ।
 सु दरि के मुर-चंद को छाँटि,
 चकोरन चद मयूपन चोर्यो ।
 चद सिलानि तैं नीरु भरयो,
 सु सनै तिय को निरहागिनि सोख्यो ॥

रुहों जागे रेन आये निपट उनीदे हो जू,
 सोइ रही प्यारे विद्ध्यो आछी परंजक है ।
 खेलत हे चाँद ती में ग्वालन के सग कहू,
 काहू ग्वाल ही को नाम लीने कहा सक है ।
 यों ही मलेमानसे लगावती कलक हो
 वो देख्यो नहँ चितामनि रतिहू को अक है ।
 पीन रग अम्यर सो भयो नील रंग, लाल,
 भूटी हों गोपाल तुम्हें काहे को कलक है ॥

राति रहे मनि लाल पहुँ रमि
 हाँ दुरा याल वियोग लहे है ।

आए धरे अस्तोदय होत,
 सरोम तिया डम पेन रहे हैं ।
 लाल मये हग-कोरनि आनि रे
 यो अँमुगान रु बुन्द रह हैं ।
 चोचन चोप मनो सिधिले
 विच सवन दाटिम-वाच गहे हैं ॥

आन-बधू रति- - चिह धरे इत,
 प्रातहि प्रीतम आगम कीहो ।
 आरती के हाथ में आगसी दे मनि
 नाल बधू भनि भीतर लीहा ।
 चोली सरती यह रूप की रन
 कहां यह चेप उपद्रव कीहो ।
 या मृग-नैनो पत्यानी मृगी को
 कहा चित लाभ यो कहिल कीहो ॥

साँक ते चद रलक उयो,
 मन मेरो लै साथ रहे तुम न्यारे ।
 रेठि बची मति-मंदिर नीर,
 लगे तर दीप-प्रकाम अ प्यार ॥
 प्रातहि पाइ मुधामय पाग्नी,
 नैन-रसोर द्दरे, मे मुगारे ।
 क्यो न अनूप कला प्रगटी,
 अकल्पित कलानिधि माहन प्यारे ॥

चोलत कहे न चोल मुने,
 मधुगी बनियो मनमाहा भागै ।
 चोले कहा, फड चित में हवै दुग,
 पिच चड कट सागरी दागै ॥

ठटे हैं लाल, त्रिलोकै न ताल क्यों,
 तेरी त्रिलोकनि कों अभिलासैं ।
 लाल भई तिन काजहि आजु ए,
 देसों कहा मेरी दूरतती आँसैं ॥

सरद समी ते अधससी हूँ वची हों,
 कनि चिंतामनि तिमि हिमि सिसिर भ्रमरु तैं ।
 मारत मरूके वची बधिक बसत हूँ तैं,
 पावरु प्रचार वची, धीपम तमक त ।
 आयौ पापी पावस ये, प्राण अमृतान लाग्यौ,
 भयौ री असान घोर घन के घमक तैं ।
 ताप तैं तचौंगी, जो पै अमिय अचौंगी आली ।
 अत्र न वचौंगी चपलान की चमक तैं ॥

आढे नील सारी घन-घटा कारी चिंतामनि,
 कंचुकी किनारी चारु चपला सुहाई है ।
 इन्द्रधनु जुगुनु जवाहिर की जगी जोति,
 वग-मुस्तान माल कैमी छवि छाई है ।
 लाल पीत सेत वर नादर बसन तन,
 बोलत सु भृगी, धुनि-नूपुर बनाई है ।
 देखिन को मोहन नवल नट-नागर को,
 बरपा नवेली अलवेली बनि आँ है ॥

यो मन पैटी तिमूरति ही मधु भैं
 अत्र हौ न वचौंगी अत्र ग सो ।
 पीउ अचानक आद गयो,
 तु पराय गयो मिगरो दुख अत्र ग सो ।
 बाहिर भीतर पूरन ऐसो
 भयो घट मेरो अत्र द-उमंग सो ।

पूर उमंग भगीय के तप
 जैसे निरंघि-कमडल रंग सों ॥

को महा भूढ छनली क अगन
 जाय परयो ज्यो ससारी वहीर मै ।
 ठौ अछान अधीन जो आपते
 ताहि को आनि सके पुनि तीर मै ।
 जोरन पूर विनामन रग
 उठै मन मोद उमंग समीर मै ।
 सैल-उरोज तै कूदि परयो मनु
 जाइ प्रभा-नदि-गौर गेभीर मै ॥



फूलि रहे उननाग सत्रै लखि,
 फूलनि फूलि गयो मन मेरा ।
 फूलनि ही को विछाननो कै,
 गहना कियो फूलनि ही को घनेरी ।
 लाल पलाशन में चहुँ ओर तैं,
 मैं प्रताप कियो उन घरो ।
 पसेहि फूल फैलाइ फैलाइ,
 भयो ऋतुराज को मानहु डेरो ॥

कालिदास त्रिवेदी

कुटन की झुरी आननम की झुरी सो मिली,
 सौनतुही माल त्रिधौ कुनलय हाग सा ।
 कैधा चद्र चद्रिसा ननरुसा नलित भन,
 नैधौ रति ललिन नलित भई माग मौ ।
 कालिदास मग मॉहि दामिनो मिला है कैधो,
 अनल की ज्वाल मिली कैधौ धूम धार सौ ।
 नलि समै कामिनी नहया सा लपटि रही,
 कैधौ लपटानी है तु हया अधकार सा ॥

प्यारा सड तीसर रसाली रग रागटी मे,
 तकि ताकी आर छकि रहया नद-नन्द है ।
 कालिदास वीचिन दरीचिन हने छलवन
 ननि सी मरीचिन की ननक अमन्द है ।
 लाग देसि भरम कहा धौ ह या घर म,
 सु रगमग्यो जगमग्या जातिन का नद है ।
 लालन का नात है कि ज्वालनि की माल है कि,
 चामीनर चपला कि रनि है कि चद है ॥

भारी नैस इन्दमुखी मॉकरी गली में मिली
 मुन्दर गोविन्द को अचानक ही आयकै ।
 कालिदास नगे जग अगनि जगहिरमी,
 बाहिर हवै फेनी चॉदनी सी छनि छाय के ।
 नेरो गहया न्याम सॉहै निहसि निलोकी वाम,
 हेरयो निरझोहै नारि नैमुक नरायकै ।
 गार तन चोरै चित चारै दग न न मल
 वार नौच कारे लागि चली मुमुसाय नै ॥

काह चनुराइ करि द्वाग में वित्राई सेन,
 जानि मनि भदिर म मनभाइ राम का ।
 कालिदास रसि काइ जानि कै चुपाइ रह,
 आइ जग मुदरि सिधाई निच वाम सो ॥
 चचन चपुर छरकायल न्नीली राम,
 अचल न्ने न दीनौ म्याम अभिराम सो ।
 पाटी पग धरि गई, चेटक सौ करि गई,
 नटी लां उद्धरि गई, छरि गई म्याम का ॥

चूमों कर कज मजु अमल अनूप तेरो,
 रूप के निधान काह मो तन निहारि दै ।
 कालिदास न्है मेरे पास हरि हेरि हरि,
 माये धरि भुकुट लकुट कर डारि दै ॥
 कवर न्हैया मुरा-चन्द री जुहैया चारु,
 लाचन चफोरन की प्यामन निवारि दै ।
 मेरे कर महदी लगी है नदलाल प्यारे,
 लट उरभी है कनसर मँभारि दै ॥

मावन की रैन, मन भावन गोविंद विन
 देत दुस भारन में भिल्लिन के सोर ह ।
 कालिदास प्यारी अँधियारा म चकित होत,
 उमटि उमटि घन घहरत घोर ह ।
 मून कुज मदिर में मुदगी निमूर बेठि
 दादुर ये दहकि सी लेत चहुँ आर हैं ।
 हिण में त्रियोगिनि के त्रिरह की हन रठी,
 कन उटी कोयल, कुहुँन उठ मोर हे ॥

मधुकर माल उन रलिन के जान पर,
 कान्ठिल रसाल पर कुहुँन अमद री ।
 म्द पौन सौतल सुवास भई वागन,
 विलास मइ कालिदास रासि मकरद की ॥

दक्षिण मथान, उद्यमाय म पयान करे
 काह को दया न होती गापिन के उदर ॥

कंमे देखि चीहै चढि चौदनी महल पर
 मुधा भी चहल, वसुधा भी, चार चर म

हिलि मिलि जोरनि में, भोजत मगेयनि म
 हयरा म महलनी हगन अमुसर म ।

कालिदास कह आप कामिनि कुरग नेनी,
 दामिनी ज्या दरत जान नमरु दुआर म ॥

काह में रहगी, दुप एमे न्यो सहगी,
 जैसे सांता पार सागर र रघुवर पार में ।

नट क कुंजर काह जैसे कहो है ही जान,
 छोटि टपमानु नृ को न ररि कुरार में ॥

कामरा भी सोही माही गोपन की जाई जान
 आन नाल पामरा रता परहरि क १

रहे कालिदास पाम भरे ह एकत रत,
 लीनए लपट लपटाय अर भरि क ॥

रैन में नगर दौस जन क उगर काने,
 जगर मगर धन भूमि कलि कर क ।

पूस म क्लाधर ये धन को न छोट मग
 ताते रग राज, हिए प्रेम यान धरि क ॥

हान हसि दीही भीति अतर परमि शगे,
 देखत ही छरी मति नाहर प्रवीन म ।

निरुम्यो भगोसे भोज विगस्थी कमल मम,
 ललित अंगुठी तामे चमक चुनीन की ॥

कालिदास तेसी लाल मेहदी के बुदन की
 चारु नर चदन की लाल अंगुरीन की ।

रैमी छवि छावति है छाप औ छलान की, सु
 ककन कुरीन की, जराऊ पहुँचीन की ॥

आलम और शेख

मरुता मनि पीत हरी वनमाल सु,
 तौ सु चापु पकासु कियो तनु ।
 भूपन दामिनि दीपति है,
 धुरना सित चदन सौरि किये तनु ।
 'आलम' धार सुधा मुरली बरपा,
 पपिहा बज नारिन को पनु ।
 आगत है वन ते घन से लखि री,
 सजनी घनस्थाम सदा-धनु ॥

जुटि आइ भौहैं मुरि चढी है उचौ है,
 नैना मैन मद-भाते पलकन चपलई है ।
 कटि गई छँटि पे सिमटि आई छाती ठौर,
 ठौर तें सगरी देह और कबु भइ है ।
 'आलम' उम गि रूप साना सरवर भरयो,
 पानिप ते काइ लखि कान मिटि गई है
 कलफ सी भई पियरस पियरइ किधौं,
 कबु तरनई अर नई अरनई है

अ ग नई जोति ले उरगना विचित्र एक,
 आँगन में अ गना अन ग की सी ठाढी है ।
 उजरइ की उज्यारी गोरे तन सेत सारी,
 मोतिन की जोति सौ जुहैया मानो ठाढी है ।
 'आलम' सु आली वनमाली देखि चली दुति,
 सुगढ कनक की सी रूप-गुन गाढी है ।
 देह की वनफ वाके चीर में चमक छाई
 छीरनिधि मथि किधौं चाँद चीरि काढी है ॥

तब मुन जेहें मुधि निसगइ ऐहें,
 घरा डारि श्रीरनि क संग धाड आई हे ।
 राम गरी राम सगी सोंपे परहरै सरी,
 जड ह रहति क्यू जूटियो जनाद हे ।
 'आजम' कहै हा अजहीं त रिक्कार भई,
 दुरै न दरा मै तो अज ली दराइ हे ।
 सपरस 'यामी भ' काह, तन डीठि दइ,
 गागरि भरन गइ नैना भरि लाइ हे ॥

हमे हंसि दइ गोलै गोलै ओ न सोलै पम,
 यातें पहिचानी कइ पीरी पीरी हे भः ।
 'आलम' कहै हा यात्रे हिये की पौढाद दरौ
 कैसे के दुराई माई प्राति काह सो नइ ।
 अत्रे अनमनी हुती अँमुग भरति टाढी,
 औचक ही गइ धाड भुच भरि हे लई ।
 पूछे तिहि अँमुग कह हो ? कहै कैसे अँमू
 पलमै पसारि दइ पुतरीनु पी गर् ॥

मया सरि चितै चिनु चोरी लीनो हिनु करि,
 हिन चिनु चितै नहीं सोद सोच नित हे ।
 'आलम' कहै हो पुर वास में जो बसी तिहै,
 नेमुरु न चाउ निमु गसर चकित हे ।
 दरु टक लागे अनदेखे पलकौ न लागे,
 दरु अनदेखे नैना निमिष रहित हे ।
 मुसी तुम माह हो जु आन सो न चिन्ता,
 हम देखे ह दसित अनदेख दसित हे ॥

कासी लाख सको डरु कौन आपु कैमो घर,
 सौन घरससी क्यू यातें घर नी रहे ।

सास लत हिये म मलाफा ऐसी सावनि हँ,
 काह चितवनि ।मा, नित चित को दहँ ।
 आलम कहै हा परबस न बसात रन्डू
 भाग हू न छूटे दुस अति साथ ही गहँ ।
 पलक ते न्यारी कीनी नीदऊ बिडारि दीनी,
 निसि दिन नैननि में बरी चैठई रहँ ॥

राज तजी बिहि कातु सरी,
 इन लागन म बसि आपु हमाऊँ ।
 आलम' आनुरता अति ही,
 तिहि लालचु हौ तुम्हरे सँग आज ।
 माह मिलै तो मया रुग्ि चाहत,
 हौ न बद्ध जिय हू सी सुनाऊ ।
 ऐसन रा अँगियान महा सस,
 जो अँसवानि सा देसन पाऊ ॥

गहा तै निवारो जाए तहाँ उठि परे घाइ,
 हियो अति अकलाइ लाग न करत हे ।
 रेखौ चाह नार मुरि नद के कुमार,
 अति ही उसी विहार आननि हगत है ।
 देखे तें हँ मुरझात विन देखे मिललात,
 दुस देत दुहँ भाँति व्याकल करत है ।
 मारि मारि मौजि के मरूरन मरोरि डारी
 मेरे नैना मेरी माई माही सों अरत हैं ॥

सखिन नुलाये माह मुरसहि न लावै भुकि,
 दूतियो निकारी बीनि बेगि ही बगर तें ।
 ना न भइ हाती रुहौं चाटी की सुहाती ऐसी,
 मान रस माती हौ न मोली डोली डर तें ।

चौलो कूँ मुरली नी घोर मनी कान 'सेत ,
 परी ही म देहली दुहली भट घर तें ।
 परी निहि काल हुती पीरी पीरी गाल जनु,
 सीरी भ सनि छटि पीरी भर रते ॥

किनिनि वक्कन वगान मिलै
 गर दादुर कीगुर नी कनकारहि ।
 भूवन की मनि गर भद्र
 चुनू घर नी मनि जोति अपारहि ।
 'आलम कामिनि को तन कुन्दन,
 जाइ मिल्यो वग मीजु उजारहि ।
 काम क गालनि स्याम निसा,
 गर पीरी महाड भये अभिसारहि ॥

सरद उज्यारी निसि सीतल समीर धीर,
 सानत पिथारी पिय पाये सुख सैन के ।
 आलम मुक्कनि आगे जागें व रसाल लाल,
 वालहि वगानें लग लाभ गाल नैन क ।
 चिलर सरीर रोमराजी राजे पिय पानि,
 पल्लव उठे है जैसे चदन में चैन के ।
 सकुची पनच उतरें तें चाप चारु साहै,
 धरे वे निचिन मानो पाँचो बान मैन क ॥

अन भई रजनी रसिक रितुराज की,
 न छीन भयो भानु, पाते लालच न डोली री ।
 प्राचियो रची पै तू न रची मेरे बचननु,
 अलि माला बोली पै तू बोलह न गौली री ।
 द्रुम-वेली हली तू न हली अली चलिये को,
 चरुई मिली पै तू न हियो सोलि बोली री ।

उये रनि कौन काज उठ न रूठन तरो,
 'आलम', न बचि काल सरति कल्लोली री ॥

राम रस माते हवे करेरी केलि कीही काह,
 फूलनि की भाविका ह मीटि मुरभाई है ।
 'आलम' सुकनि याहि और सी न जानो बलि,
 ऐसी गारि सुबुमारि कहौ कौने पाद है ।
 कमल को पात लै लै हाथु याको गात छुजै
 हाथ लाये मँली होय गात की निरुद है ।
 अचर द मुख सनमुख तासो नात काजै,
 ना तरु उसाँस लागे मुकुर की हाई है ॥

गती होति छाती त्रितु जूडियो जाति रुडू,
 ताती सीरी राती पीरी रूझि न परनि है ।
 'आलम' कहे हो काह कौन निथा जाना का को,
 मौन भद्र काह की न कानि हू करति है ।
 आगि सी भ्रमाति है जू ओरो सी निलाती है जू,
 छिनु ह न देसे सुधि बुधि विसरति है ।
 अँसुवननि भीजे औ पसीजे त्यो त्यो द्याजे नाल,
 साने ऐसी लानी देह लोन ज्यो गरति है ।

गोन के सुनत रही मौन भूली मौन सधि,
 पीरी परि आई थकि पीरी रही हाथ ही ॥
 चौकति चकति पछिताति मुरझाति तन
 ताही छन आय उर लाय लण नाथ ही ।
 रही ही नवाय नारि पृथ्वति पियारे के स,
 कैसे हू कैने हू के उटाय उत माथ ही ।
 मुख तन चितै हरवरै गहनरै गरे,
 उतरु उसाँस आँसु आये एक साथ ही ॥

भली भड भोर भये पॉन धारे भावते जू, भाय हा
 हम अनभावती है भावतिनु
 रास न रहत है न रिस कीजे रम मी सु,
 तार रम-से तिन उम ररि पाये हौं ।
 ऐसो परिहासु हिया तरकि मरीं प न
 'आलम पतीजे पनि पिय जानि पाये हौं।
 अग नय चिह रतिरंग न दुगत नया,
 आँगन में अग मग अगना ले आये हौं ॥

कैधो मोर सार तजि गये गी अनत भावि
 कैधो उत दादुर न जालत हैं ए दद ।
 कैधो पिक चातरु महीप काह मारि डार
 कैधो वरपाँति उत अतगत है गद ।
 'आलम' ऊहे हा आली अनहू न आये प्यारे
 कैधो उत रीति निपरात सिधि ने छट ।
 मदन महीप की दोहा फिर तें रही,
 तृप्ति गये मेघ कैधो दामिनी सती भट ॥

जा थल सीहे निहार अनेकन,
 ता थल काँकरी पैटि चुन्यो करं ।
 जा रसना सो करी बहु जात सु
 ता रसना सो चरित्र गुन्यो करे ।
 'आलम' जौन-से कृचन में करी केलि,
 तहाँ अर सीस धुन्या करे ।
 नैनन में जो सदा रहते,
 तिनकी अर कान कहानी मुन्यो करं ।

जन कह्या दसि मित्र हौ तो भयो देसि चित्र,
 अनहू ली चित्र मी अचेन चतुरड है

रीभ्यां हौ तिहारो इन नैननि की रीमि को जू,
 कौन मृदु मुरति - तय मुरभं है ।
 घू घट की ढिग चॉपि भृकुटा उचड सेर'
 मद मुमुकाइ चपलामी कंधि गद हे ।
 तुम सोध बाही के सिधारे ऋज सुधापुज,
 मोहि काह घरी एक पाद्वे सुधि भई है ॥

निधरक भड अनुगतति है नद घर,
 और ठौर कहें टोहे ह न अहटाति है ।
 पौरि पाखे पिछवार कौरै कौरै लागी रहै,
 आँगन देहली याही बीच मटराति है ।
 हरि रस राती 'सेख' नेकहू न होइ हाती,
 पेम-मद-माती न गनति दिन राति है ।
 नर नर आवति है तर रू भूलि जाति
 भूल्यो लेन आवति है और भूलि जाति है ।

विधा का विचार के सकानी ह न जान्यो नेकु
 पीरी होत जाति अरु तातो सीरो गानु है ।
 मुमन सहात त तो हिये हँ ते हाते करि,
 नैननि साँ चाँद नेरु हर न हितातु है ।
 तुम्हरे नियोग कवि आलम विरह उढया,
 तम निनु प्यारे हरि कछु न धमात है ।
 आडह की ओर आय ऐसी गति होति भई,
 ओरती से नैना आगु ओरो सो ओरातु है ॥

ग्नानिधि

(रतन हजारा)

रमनिधि मन-मधुकर उसी का च/नाम्नु व माहि ।
 नरस अनुगुनो गुलत है गुनो गुनोड नाहि ।
 गाल उदन का मदन-नृप रूप-इचाफा दान ।
 नेने गवन पर भोह वनु मीनफेन पर लान ॥
 उदन-सरोवर त भरे सरस रूप-म मन ।
 डीठ डोर सौ राधिक डोलत मुन्दर नैन ॥
 वन ते दीहो है इहे मैन-महापति मान ।
 चित चुगली लाग रग नैन, लगि-लगि रान ॥
 नागर सागर रूप को चानन तरल तरग ।
 मरत न तर छवि-भर पर मन बूडत सन अग ॥
 रूप-ममुद छवि-रम भरो अतिही सगसे मुचान ।
 तामे ते भर लत दग अनै पट उनमान ॥
 लाल भाल पे लसत है मुदर निदा लाल ।
 'कियो तिनक अनराग ज्या लग्य है रूप-रसाल ॥
 रूप-सिधु में चद के चन ते परम्यो नह ।
 तन ते कैयो रग सौ रूप दिसाइ रह ॥
 तो केने तन पालते नैही नैन पराल ।
 जो न पावते रूपसर छवि मुक्ताहल लाल ॥
 रूप-शीप जती धरी मन फानूम दुगई ।
 तऊ जोत वाकी दगन होत प्रमामित आइ ॥
 मुन्दर चोवन रूप जो उमुवा में न समाइ ।
 दग-नारन तिल विच तिहै नैही धरत लुकाइ ॥

ज्या उत रूप अपार है त्यो इत चाह - ११
 नैन रिचौही दुहुन कौ पाइ सकै नहि पार ॥
 जो भावै सो कर लला इहै बाँध वा छोर ।
 है तुव सुवरन रूप के ये मेरे दग चोर ॥
 तुव वन में रायौ गयो मन मानिकु बजरान ।
 लगे संगही फिरत है नैना पावन कान ॥
 सरस रूप को भार पल सहि न सकै सुकुमार ।
 याही तँ ये पलक जन भुक्ति आवै हर वार ॥
 रूप किरकिटी पर गई जन तँ दगन भँकार ।
 लाल भये तन तँ रहत बरपत अँसुवन पार
 मुमन सहित आसु-उदक पल-अँजुरिन भरि लेत ।
 नैन ब्रती तन चद-मुरा देखि अरघ कौ देत ॥
 रसनिधि सु दर मीत के रग चुचौहै नैन ।
 मन पट कौ कर देत है तरत सुरँग य नैन ॥
 कजरारे दग की घटा जन उनवै जिसि ओर ।
 नरसि सिरावै पुहुमि-उर रूप कलान भँकोर ॥
 प्रेम नगर दृग-जोगिया निस दिन फेरी देन ।
 दरस-भाख नैनलाल पै पल भोरिन भरि लत ॥
 रूप ठगौरी डारि के मोहन गौ चित चोरि ।
 अ जन मिस जन नैन ये पियत हलाहल घोरि ॥
 दग-द्विन ये उठि प्रातही करि अँसुवन असनान ।
 रूप-भूप पर जाचही छनि-मुकताहल दान ॥
 दग-दुस्सासन लाल के ज्यो ज्यो रेंचत जात ।
 त्यो त्यो द्रोपदिचीर लो मन पट गढत जात ॥
 लघु मिलनो निद्धरन घनो क्व विच बैरिन लाज ।
 दग अनुरागी भावते बहु कह करे इलाज ॥

तीन पेंड जाके लसो त्रिभुवन में न समॉड ।
 धन राधे रागत तिहें नृ दग आधिन माँड ॥
 मेरे नैननि हवै लखौ लाल आपनौ रूप ।
 भागत है गौ भागतो कैसी भाँति अनूप ॥
 बनिक किरकिटी क परै पल पल में अहटाय ।
 नयो सावे सुख नीद दृग मीत उसै नर आय ॥
 तिल चुन लालच लाग के दग-गवज चल जाइ ।
 जुलफ-फदा तै नौ उचै दग-गदन परि जाइ ॥
 रिस-रस दधि, सक्कर जहाँ मधु मधुरी मुसम्यान ।
 घृत-सनेह, छवि पय करे नग पचामृत पान ।
 याते पल पलना लगत हेरत आनदकद ।
 पिय-मधुर छवि नगन के जात ओठ हवै बंद ॥
 रुकन न सजम नैन ये नतन कीजियत कोर ।
 प्रोतम मन तन चलत है पल-पिचरन को तार ॥
 मचल जात हैं नैन ये समुझाये समुझै न ।
 वदन-चंद क लसल को सिमु यो त्रिरभक्त नैन ॥
 और रसनि लै जानही रसना हू अभिराम ।
 चासत जे ये रूपरस याते है चस नाम ॥
 उपजत जीवनमूर जह मीत नगन में आई ।
 तिनके हेर तुरत ही अतन सतन हवै जाइ ॥
 अद्भुत रचना विधि रची यामै नहीं बिपाद ।
 बिना जीभ के लेत नग रूप सलौनी न्याद ॥
 परत ढरत जलकन पलन पलहू ठहर सत्रै न ।
 भये कौन के नेह सौं तेरे चिकन नैन ॥
 छवि धन दे नदलाल ये बिये अयाची आइ ।
 पल कर तन तै और पे नग न पसारत जाइ ॥

जाडी सुदरता अधिक हरिहर अग अनेक ।
 किते किते हेरे अरी डोठ विचारी येक ॥
 मदन-परम कौ पाइके जुरी रूप की जात ।
 दग मन धन कौ दन है नृपि सोदा ले जात ॥
 प्रीतम कहि यह रात कौ जानो जात न हत ।
 मो दग तारन कोन निधि बदन चद भर देत ॥
 जिन नैनन का है सही मोहन रूप अहार ।
 तिन, मो पैद बतावही लघन कौ उपचार ॥
 यह अचरज तग्य में हियो कछु निहसी अनयाइ ।
 चार दगन में दुहुन कौ मूरत चार दिखाइ ॥
 घट बढ इन में कौन है तृही सामरे ऐन ।
 तुम गिरि लै नस पै धरयो इन गिरधर लै नैन ॥
 ना असियो वौराइही लगे बिरह नी जाइ ।
 प्रीतम पगरज कौ ति है आजन देहु लगाइ ॥
 पलरु पानि कुस उरुनिका जल अंसुवा दुज मैन ।
 पियहि चलत सुरा नौद कौ करत संकल्प नैन ॥
 दरसन में चलतौ कहें जा सुमरन सौ काज ।
 दग चकोर होते नहीं ससिमुरा के मुंहताज ॥
 अवन मुराफ होत है मुने सदेसन बन ।
 नृपित हाइ क्या दगस विन रूप अहारी नैन ॥
 जलरुन तिलरुन पलरु में कहु आली केहि हेत ।
 भावता लसि बिरह कौ नैन तिलाजुलि देत ॥
 जिन नैनन में असत है रसनिधि मोहन लाल ।
 तिन में क्यो घालत अरी त भर मृठ गुलाल ॥
 अथ लग नेधत मन हते दग अनियारे वान ।
 अर बसी नेधनि लगी सप्त सुरा सौ प्राण ॥

विद्युत्त मुन्दर अवर तँ रहत न निहि घट सोंस ।
मुरली सम पाइ न हम प्रेम प्रीत की आस ॥

वह विधुदनी क लमे गुले छरीले चार ।
वस्यो मनौ तम आइ के ससिमुख के पिछार ॥

पुरान विच कंचुक अरी तः विच कनी उरोच ।
गु तत अलि सन नाइ तह उर सरसाइ मरोच ॥

मोह तोह मेहदी कहेँ वैसे वने रनाइ ।
जिन चगननि सौ मे रची तहाँ रची तूँ जाइ ॥

और लतन सो हित लता अद्भुत गति सरसाइ ।
ममन लगे पहिल इहे पादे के हरियाइ ॥

रागे है हिय सेज में चुन के समन विद्याट ।
अर गुमानी पलक तो इहाँ पाँव घर आइ ॥

अधियारी निस की जनम, कारे काह गुनाल ।
चित्तचारी जो कगन हो कहा अचभौ लाल ॥

त्यौ तू उत मुर जात है त्यौ गिरनर मुरजाइ ।
तेरी या मुर जान पै मेरा मन मुर जाइ ॥

नेह अतर द्यवि अरगजा भर गुनाल अनुसाग ।
सेलत भगी उछाह सौ पिय सँग हागी फाग ॥

भार होत पीरी लगी यातँ ससिमुख जोत ।
सरसन दरद चकोर की आइ हिये सधि होत ॥

याक नल वह लेत है पावक चिनगी साइ ।
चदहि नौ जागन लगी तो चकोर कित जाइ ॥

निहि ब्राह्मण पिय-गमन की सगुन दियो ठहराइ ।
सानी ताहि बुलाइ दी प्रान दान ले जाइ ॥

देव

पायनि नृपुर मजु रजै,
 कटिकिकिनि के, धुनि की मधुराई ।
 साँवरे अग लसै पट पीत,
 हिये हुआसै बनमाल सुहाई ॥
 माये किरीट बडे रग चचल,
 मन्द हँसी सुख चद-जुहाई ।
 जे जग मंदिर दीपक समुंदर,
 श्री बजदूलह देव सुहाई ॥

देव सने सुसदायक संपति,
 सपनि-द पति द पति जोरी ।
 द पति सोई जु प्रेम प्रतीति,
 प्रतीति की रीति सनेह निचोरी ।
 प्रीति महागुन गीत विचार,
 निचार की बानी सुधारस जोरी ।
 बानी को सार रक्षान्यो सिंगार,
 सिंगार को सार किसोर किशोरी ॥

जागत सोवत ह सपने,
 अपनेई अयानपने को अँप्यारो ।
 केह छिपै न छिनो न दिनो,
 निसि दीपति देह सदेह उज्यारो ।
 ननन ते निचुरयो परै नेह,
 सु रोकत बेनन प्रेम-पत्यारो ॥
 दूरि रहे कित जीवन मूरि जु,
 पूरि रहया प्रतिबिम्ब ज्यौ प्यारो ॥

जाके न काम न क्रोध विरोध,
लोम झूठे नहिं छोभ को झूठो ।
माह न जगहि रहै जग बाहिर,
मोल जवाहिर ता अति चाहौ ।
राणी पुनीत ब्यौ देव घुनी,
रस आरद सारद के गुन गाहौ ।
सीन ससी सनिता छनिता,
कनिताहि रचे कनि ताहि सराहौ ॥

औचक अगाध सिंधु स्याही को उमडि आयो,
तामै तीनों लोक बूटि गए यक सग में ।
करे करे आरार लिसे जु करे कागद,
सुन्यारे करि चाँचे कौन चाँचे चित भग में ।
आखिन में तिमिर अभावस की रैनि जिमि,
जम्बूनद बुन्द जमुनाजल तरंग में ।
यो ही मन मेरो मेरे काम कौ न रहयो मारु,
स्याम रंग हँ करि समान्यो स्याम-रंग में ॥

देव में सीस बनायो सनेह के,
भाल मृगम्मद निंदु के मान्यो ।
कंचुकी में चुपरयो करि चोवा
लगाय लियो उर सों अभिलाख्यो ।
के मखतूल गुहे गहने,
रस मूरतिवत सिंगार के चाख्यो ।
आँरे लाल को साँरो रूप
मैं नैननि को कजरा करि राख्यो ॥

राये कही है कि तैं छमिया,
बबनाथ किते अपराध किते में ।

ज्ञानन तान न भूलत ना सिन,
 आँखिन रूप अनूप पिये मे ॥
 आपने ओछे हिये में दुराड,
 दयानिधि तैव उसाय लिये मैं ।
 हाँ ही असाध वसी न कहँ,
 पल आध अगाध तिहारे हिये मैं ॥

धार में धाड़ धँसी निरधार हने,
 जाय फसी उकमी न अघेरी ।
 री अगराड गिरी गहिरी,
 गहि फेरे फिरी न घिरी नहि घेरी ।
 दव कधू अपनो उस ना,
 रस लालच लाल चितै भई चेरी ।
 मेगही बूडि गई पखियाँ,
 अँसियों मधुकी मसियों भई मेरी ॥

रीभ्र रीभ्र रहसि रहसि हँसि हँसि उठै
 साँसँ भरि आँसू भरि कहत दइ दइ ।
 चौकि चौकि चकि चकि औचकि उचकि देव,
 जकि जकि बकि बकि परत उई उई ।
 दुहुन को रूप गुन दोऊ बरनत फिरँ,
 घर न थिरात रीति नेह की नई नई ।
 मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधा भय,
 राधा मन मोहि मोहि मोहन मई-मई ॥

कोइ कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन नहौ,
 कोई नहो रसिनि कलसिनि कुनारी हौ ।
 कैमा परलोक नरलोक पर लोअन म
 ली-हो मैं अलोक नोअ लीकन तैं यारी हौ ॥

तन जाहि मन जाहि टन गुग्जन जाहि
 चीर क्यो न जाहि टेक टेगत न टागी हौ ।
 वृ दाननपारी मनपारी रे मुकुट-वाग
 पीन-पटवारी जाहि मुरति पे पार्ग हौ ।

चाग्नि क चपक चत भरि चाग्नी द्यवि द्यातो,
 मन नृत द्यितिपरी पीर द्यतिया की हौ ।
 गामून न छैन दूँडि दूँडि बन सैल हौ,
 अकली यहि गेल तो को ऐल उरि धाकी हौ ।
 मंद मुमक्याय लै समाय नी मे ज्याय लै र,
 प्याइलै पित्रप यासी अघर-सुधा की हौ ।
 मग मुरदाट दै र ननु दिसाइ नेकु,
 न रे वज भूप तेरे रूप-रस जाकी हौ ॥

मोहि तुम्है अतुरु गनै न गुरवन तुम मरे,
 हा तुम्हागी पे तऊ न पधिलत हो ।
 दुरि रहे या तन मे मन मे न आपत हौ
 पच पूँछि देसे कहँ काहू ना हिलत हौ ।
 उचे चढि रोड छोई देत न दिसाइ ने,
 गातनि की ओट वैठ यातन गिलत हौ ।
 मेसे निरमाही सदा मोही मे बसत अर
 मोही ते निकरि पेरेि माही न मिलत हौ ।

गारगे रूप गहया भरि नैननि,
 नैननि के रस सौ अति साना ।
 गात मे देखत गात तुम्हार इ,
 गात तुम्हारिये बात बखाना ।
 उभा हहा हरि सौ कहियो,
 तम हौ न इहाँ यह हौ नहि माना ।

या तन ते विदुर तो कहा
मन ते अनतै जु उसी तब जाना ॥

चौ न जोमें प्रेम तब कीजै व्रतनेम,
रुज मुरस रनै तब सजम बिसेखिये ।
आस नहीं पीकी तब आसन ही बाँधियत,
सासन क मासन का मृदि पति पखिय ।
नरत ते शिखा लौ मय स्याममई बाम भट
बाहिर जा भीतर न दूजो देव देखिए ।
जोग करि मिलें जा त्रियोग हाय नालम,
तु ह्यौ न हरि हायें तब ध्यान धरि देखिय ॥

फल फलि फूलि फूलि फलि फैलि भुकि भुकि,
भपकि भपकि आई कुजै चहुँ कोद ते ।
हिलि मिलि हेलिन कै केलिन करन गई
बेलिन तिलोकि उधु ब्रज की तिनोद ते ।
नंदनू की पौरि पर ठाढ़ है रसिक देव,
मोहन तू माह लीनी मोहनी ने मोदत ।
गाथन मुनन भूली साथन के फूल गिरे
हाथन के हाथन ते गादन के गोद ते ॥

घोर तर नीजन विपिन तरुनीजन हवै,
निरमी निमर निसि आतर अतैरु मे ।
गमै न कल क मृदु लङ्गनि मयक मुरती
एकज पगन धार भागि निसि पक मं ।
भूपननि भूलि पैहे उलटे दुबल देर,
गुल मुनमूल प्रतिमून विधि रंक मे ।
चल्ह चढे छाँटे उफनात दूध भाँड़े उन,
मत छाँटे अक पति छाँटे परजक मे ॥

मालिदी क कुलनि तन्नि नर-मूलनि उगना ।
 निहागि हरि अग के दुकूतनि उगना ।
 मन्नी मर्ल मालनी नेगरी राती चूही दर
 अंगुल गकुन कट्पन म हरना ।
 तान दे द नालनि तमालनि मिलत फिरै
 गोलि गति गाल भुच भौट भट भगना ।
 पलकि पुलकि पुनर्नन म पुला-मा सी,
 विनापे विनाकि माह माह कहि के टरती ॥

रागिनि कीर्धी अनुरागिनि साहागिनि तू,
 देव गणभागिना लजाति औ लरति क्या ।
 सो ति जगति अरमाति हरसाति,
 अनखाति मिलसाति दुख मानति डरति क्या ।
 चैवति चकति उचकति औ बकति,
 नियकति आ धरनि ध्यान धीरज धरति क्या ।
 माहनि मुरति सतराति इतराति,
 साहचरज सराहि आहचरच मरति स्यौ ॥

जबते कुंजर माह रागरी क्लानिधान,
 कान धरी वाके कहूँ सुचस कहानी-सी ।
 तगही ते देव देसी देवता सी हंसति मी
 खीकति सी री-रति-सी रूसति रिसाना मी
 छाही-मी - ली-सी छीनिलीनी सी छका सी द्वीन
 जरी सी टकी सी लगी थकी थहरानी मी ।
 बाधी मी गधी सी विपट्टी मी विमोहित-सी,
 नेठी रह रकति रिलाकति रिमाना मी ॥

बग्या गुन गौंधि चित चग सो चढायो मुनि,
 तानन मी तुग धुनि चग मुहचग मी ।

मधुर मृदंग सुर उपज उर्ध्व भई,
 पगु परवीन वीन बोलनि अभंग की ।
 अधिक विहंग बधु याधज्यो कुरंग
 ताहि हनि है कुरंगनैनी पारधी अनंग की ।
 सग संग डोलति मत्सीनि के उमंग भरा,
 अग अग उठति तरंग स्यामरंग की ॥

राधिका काह को ध्यान धरे,
 तन काह हवै राधिका क गन गावै
 ल्यो अमुग बरसैं बरसाने का
 पाती लिये लिखि राधिवै ध्यावै ।
 गध हवै जात तह छिन म,
 यह प्रेम की पाती लै छाती लगावै ।
 आपु म आपुन ही उरभै—
 मुरभै निरुभै समुभै ममुभावै ॥

यकनी उघम्यर म गूदरी पलक दोऊ
 कोए राते बसन भगौ^३ भेष रसियाँ ।
 पुनी तल ही म दिन जाभिनि हँ जाग,
 भहि धूम सिर छापी निरहानल निलखियाँ ॥
 अमुग फटिक-माल लाल डोरे सेली पेहि
 भ^४ हे अकेलो तजि चेली सग-सरियाँ ।
 दीजिय दरस दन कीजिये संयोगिनि य
 जागिनि हवै रेठी हँ वियोगिनिक की अतियाँ ॥

प्राणने प्राणपती सो निरतर,
 अतर अतर पारत हरी ।
 दन वडा कही नाहर हँ,
 घर नाहर हँ रहै भोह तररी ॥

लाज न लागत लाज अह,
 नोहि जानी मैं आजु अकाजिनि परी ।
 दसन दे हरि का भरि नैन,
 घग किन एक सरीकिनि मग ॥

म्याम को नान मनो जय ते,
 इन कानन आनि कहैं ते बमान ।
 दगि उहै दुरि द्रोढे म्हैं,
 दूग पूरि रही पहिल दूखहा ।
 दन कहैं तो मिलौगा गापालहि
 है अर आँखिन न उर-भाड ।
 न्याव चुके तो चुकै बजराज सौ,
 आनु तो लाज सा मा सौ लगड ॥

दर अचान भइ पहिचान,
 चितौत ही स्याम मुचान क मोह ।
 लानच लाज चितौत लग्यो,
 ललचारत लोचन लाज लजेहै ।
 प्रेम पुराने का रात्र उग्यो,
 जमि छीजि पमीजि हिये हुलसौहै ।
 लाज कर्मी उकमी न, उतै,
 हुलसीअँ।वया विकमी कख भाई ।

जगमग जानत जगज तरिन कान,
 ओठन अनूठे रस हौंसी उमडे परत ।
 कंतुकी में कसे आन उकसे उरोच,
 निदुनंन लिलार नटे राग घुमडे परत ।
 गार मृग सेन सारी कचन किनारीदार,
 देव मनि मुमक मुमकि मुमडे परत ।

बडे बडे नैन बजरारे बडे मोती नय,
घरी बरनीन होड़ा होड़ी हुमड़ परत ॥

आई बरसाने ते घुलाई घृपमानसुता,
निरति प्रभात प्रभा भानु की अथे गर ।
अक चक्रानि के चकाये चक्रचोटन सौ
चौकत चमोर चक्रचाधि सी चकै गई ।
दव नेंदनद जू के नैननि अनदमई ।
नंद नू के मंदिरनि चदमई छे गई ।
कुंनि कलिनमई गुजनि अलिन मई,
गारूल नी गलिन नलिन-मई के गई ॥

दव सुपरन गुन वी यो है मधुर महा,
अधर अरार केई सुपर घटार में ।
मंद मुसुक्रानि पटु तानि पटुता निपट,
न थको ये नथ को निरत निराधार में ।
ब्रूधर प्रितान तान तोरत तरयोननि सौ,
तिलक कपोल बेंदी तूल के लिलार म ।
माती लटकन को नाल नटु नाचै सदा,
नैन-नटवानि नी चटुल चटसार म ॥

स्वागत समीर लक लहके समूल अग,
फूल से दुकूलनि सुगध त्रिथुग परे ।
इद-सो चदन मंद हांमी सुधाविद,
अरविद ज्यो मुदित मरुदनि मुरयो परे ।
ललित लिलार रंगमहल के आँगन के,
मग में धरत पग जावरु धुरयो परे ।
देव मनि नूपुर पदुमपद ह पर है,
भू पर अनुप रगरूप त्रिथुरयो परे ।

नन्दलला। वृषभानलली भये,
 सामुहे देव मयोग मुभे कै ।
 लायन लायन लागे अनूप,
 द' क दहूँ रसरूप लुभे कै ।
 मन्त हँमी अगनि ज्यौ म्दि
 अचै गय दीठि में दाठि सुभे कै ।
 अन्त का मंजिम खनन मानौ,
 उडे चुनि चचुनि चचु चुभे कै ॥

हो मपन गई देसन का,
 म्हूँ नाचत नन्द जसोमनि सो नट ।
 वा मुमकाड के भाव उगाड़ रे,
 मेग - खैचि सरा पकग पट ।
 तौ लागि गा' उगाड़ उठी कहि,
 तेव उधुनि मथ्यौ दधि का घट ।
 जागि परी ता न काह कहूँ
 न कदम्ब न कुच न कालिंदी का तट ॥

भहरि भहरि भीनी पूँ है परति मानों,
 घहरि-घहरि घटा घेरी है गगन म ।
 आनि कहयो स्याम मो सां चली भूलिवे को आन,
 फूली ना समानी भइ ऐसी हौं मगन में ।
 चाहत उतरई उठि गई सो निगोटी नादि,
 सोय गण भाग मेरे जागि वा जगन में ।
 आँख खोलि देखौ तौ न घन है, न घनस्याम,
 वे' छाड वूँद मेरे आँसु हवें अगन में ॥

रूप के मन्दिर साँवरो सुन्दर,
 चाल चनै गुन गर्व-नाहीन्ती ।

मोवन के बलसानी हमै,
 अलसानी हँसै अँरियाँ रनमीली ।
 देव मुन छवि सीस धुनै,
 अरलाजन जे अर लान-लजोली ।
 रहे स्यौ ऊजरी गोकुल में,
 बजगूजरी गोकुल की गरबीली ॥

मंजुल मडुरी पंजरी सी ते
 मनोज के ओज सँवारति चीर न ।
 भख न 'यास न गीद पर
 परी प्रेम अजीरन के जुर जीरन ॥
 देव घरी पल जाति लुरी,
 अँसवानि के नीर उसास-समीरन ।
 आहन जाति अहीर अहे तुमै,
 काह कहा कहाँ काह की पीर न ॥

दोऊ किवार दुहँ मुज दावै,
 कछू बिच पेनी चितौनि लुरी है ।
 इडु ते सु दर आनन में मृद,
 मद हसी हरि हेरि दुरी है ।
 नेमर खौरि दिय उभके,
 गृहपौरि के भीतर दौरि दुरी है ।
 मेन रुनो तिरछी बरछी करे,
 देव नचायत नैन-तुरी है ॥

रेथी कहा उत्रि देखो मट्ट,
 रँगमोन तुम्है बिन लागत सूनो ।
 चातक लो रटि देव तुम्है,
 स रफोर भया चिनगी फरि धुनो ।

साँझ सुहाग की माँझ उदे करि,
 सौति सरोजनि को बन उनो ।
 पावस ते उठि कीजिये चैत,
 अमानस ते उठि कीचिये पूनो ॥

शालि गई इक हॉ की वहाँ,
 मग रोकै सु तो मिसु कै दधिदानि को ।
 वा तौ भट्ट पह भेटी मुना भरि,
 नातौ निकासि कछू पहिचानि को ।
 आइ निद्वार कै मन-मानिक,
 गोरस दे रस ल अधरान को ।
 वाही दिना ते हिये में गड़ौ,
 वहै ढीठ बडौ री बड़ी अँखियान को ॥

सरिन को सुख सुनै सौतिनि को महादख,
 होत गुरजननि के गुन को गरूर है ।
 देव कहै लाख-लाख भाँति अभिलाप पूरि,
 पा के उर उमगति प्रेमरस पूर है ।
 तेरो कल बोल कल भावन को स्वाति बुद,
 जहाँ जाइ परयौ तहाँ तैसोइ समूर है ।
 व्यालमुख विप ज्यौं पियूप ज्यौं पपीहा मुख,
 सीप मुख मोती कदली मुख कपूर है ॥

भौन भरे सिगरे बज सौह,
 सराहत तेर ई सील-सुभाइन ।
 छाती सिरात सुनै सनकी,
 बहूँ आर तै चोप चढी चिन चाइन ।
 प री बलाइ ल्यौ मेरी भट्ट,
 सुनि तेरी हौ चेरी परौ इनि पायन ।

सोतह की अखियाँ सुस पावति,
तो मुस देखि सरसी-सुसदाइन ॥

तेड वरू जिनके इग द्वार,
देव पतिमन पौरिया के उर,
अतर अत रमै भरमै नहि
ना गिन डोलि सनै कुन लाज ते,
आग्नि में दिढ लाज की डयोटी ॥

भोरही भोरही श्री शृपभान के,
देव जू सोनति ही उत भावती,
आरस ते उघरी इक घाँह,
भीडत हाथ फिरे उमटो-सो,
मटो मन बीच फिरे मन्रायो ॥

दूहि धरो दीवरु किनिमिनान भीनो तेज,
दूलहे दूराइ आली कलि क महल गइ,
अरु भरि लीही गहि अ चल का छारु देव,
लान के अधर नाल अघरति लागि जागि
उटी मेन जागि पघिनानो मन मोम सो ॥

लगी दुपहरी हरीमर्ग फगी कु न मनु,
 गु ज अलि पु ननि की देन हिया हरि जाति ।
 सीरे नदनीर तरु सीतज गहीर त्रोंह,
 सोवें परे पधिक पुकारें पिकी करि जाति ।
 ऐसे में कितारी भोरी कोरी कुम्हिलाने मरत
 पकज से पाय धरा धीरन सौ धरि जाति ।
 सोहैं धामम्याम मग हरनि हयेरी आट,
 ऊचे धाम धाम चढि आवति उतरि जाति ।

पीछे परसीनै ननै सग की सहेली आग
 भार डर भूपन डगर डार छोरि छोरि ।
 चौकति चकोरनि त्यौ मारि मुरत मोरनि त्यौ,
 मौरनि की ओर भीरु दरै मुग्य योग मारि ॥
 एक रू आली-कर उपर ही धरे,
 हरे हरे पग धरे दन चले चित चारि चोरि ।
 दूजे हाथ साथनि सनावति बचन,
 राजहसा । चुनावति मुमुन माल तोरि तोरि ॥

पीत-र ग सारी गारे अंग मिलि गइ देव,
 श्रीफल उरोन आभा आभासै अघिच सी ।
 दूटा अलफनि छनफनि जलबूदन की,
 विना बँदी नटन वदन सोभा विरुसी ।
 तनि-तजि कु ज पु ज उपर मधुप गु ज गू जरत,
 मंजु रव रोलै बाल पिक सौ ।
 नीरा उरुगाइ नेकु नयन हँसाय हँमि,
 ममिमृष्टी सकुचि सरोवर तै निरम्यी ॥

आबु गइ हुती कुजनि लौ,
 बरसै उत नूद बने धन धारत

व कहै हरि भीजत देखि,
 अचानक आय गए चित चोरत ।
 पाटि भट तट ओट कुटी कै,
 लपेटि पटी सौ कटीपट झोरत ।
 चौगुनो रगु चढ्यौ चित में,
 चुनरी के चुचात लला के निचोरत ॥

ट्टि परे चुनि लै गई हार,
 निगारि के चारनि चार न हारे ।
 लै मुँह मूँदि मनाइ गई,
 निझिया गहि पाँय पुरारनहारे ।
 चानी न जात जे सग रमे,
 रतिरङ्ग रमै के निहारनहारे ।
 काम कथा सत्र जानत दीपक
 सेज-समीप निहारन हारे ॥

आगे धरि अधर पयोधर सधर जानि,
 जोरावर जघन सघन लरे लचि कै ।
 गारवार देती नकमीसैं जेनचारनि कौ,
 चारनि को बाँधे जे पिछारे दुरे बचि कै ।
 उरन दुकूल दै उरोजनि को फूलमाल,
 ओठनि उठाये पान साइ साइ पचि कै ।
 देव कहै आजु मनौ जीत्यौ है अनंग रिपु
 पी के सग संगर सुरति-रंग रचि कै ॥

प्यारी सँकेत सिधागी सखी सग,
 स्याम के काम सँदसन के मुख ।
 सुनो इते रँगभोनु चितै,
 चित मीन रही चकि चौक चहँ र ।

एक ही बार रही चक्रे ज्यो कि ज्यो
 भौहनि तानिके मानि महा दुख ।
 दन कछु रद नीरी दबी सी,
 मु हाथ को हाथ रही मुख की मुख ॥

बालम बिरह चिन चान्या न जनम भरि,
 बरि-बरि उठे ज्यो ज्यो बरसे बरफ राति ।
 नीचन डुलावन सखीजन सो सोत हू में,
 सौतिन-सराप तन-तापनि तरफराति ।
 दन कहै साँसनि सो अँमुग सुखान,
 मुख निकमै न बात ऐसी मिसकी सरफगति ।
 नीटि लौटि पगति करौट सटपाटी लँले,
 सूसे जल सफरी लौ सेज दै फगफराति ॥

लाल विदेस वियोगनि बाल,
 वियोग की आगि चई मुरि भूरी ।
 पान सो पानी सो प्रेम कहानी सो,
 प्रान ज्यो प्राननि या मत हूरी ।
 देन जू आनु हि ऐसे की औधि,
 सुबीगति देखि निसेलि निमूरी ।
 हाथ उटायो उटाइने का,
 उटि काग गरे परी चारिक चूरी ॥

सौमन ही सो समीर गयो अरु,
 अँसुन ही सन नीर गयो ढरि ।
 तेज गयो गुन लै अपनो
 अरु भूमि गई तन की तनुता करि ।
 देन जिये मिलिनेड की आम कै,
 आस हू पास अकास रहयो भरि ।

ना दिन ते मुल फेरि हरे हँसि,
हेरि हियो जु लियो हरि नू हरि ॥

सहर सहर सोधो सीतल समीर डोलै,
घहर घहर घन घेरि क घहरिया ।
भहर-भहर भुकि भीनी भरि लायो देव,
छहर छहर छोटी बूदन छहरिया ।
हहर हहर हँसि हँसि के हिडोरे चढी,
थहर थहर तन कोमल थहरिया ।
फहर फहर होत पीतम को पीतपट,
लहर-लहर होत प्यारी की लहरिया ॥

सुभत न गात बीति आई उघराति,
अरु सोए सब गुरजन जानिके बगरके ।
छिपिके छपीली अभिसार को केवार खोलै,
गुलिगे सजाने चारु चदन प्रगर के ।
देव कहै भौं गुजि आए कुज-कुचनि तै,
पूछि पूछि पीछे परे पाहरू डगरके ।
देवता कि दामिनी मसाल किधौ जोतिजाल,
भगरे मचत जागे सिगरे नगरके ॥

हँसत हँसत आई भावते के मन भार्य,
देव कहै छवि छार्द सोने से सरीर सो ।
तैसी चन्दमुरी के वा चद-मुल चद्रमा सो,
होड परी चाँदनी औ चाँदनी से चीर सो ।
सोधे की सुवास अग वास औ उसास वास,
आसपास नासि रही सुखद समीर सो ।
बुझ तजि गुजत गभीर गिरि तीर-नीर,
रहौ रगभौन भरि भौरति की भीर सो ॥

घाड़ खोर खोरि ते बघाड़ पिय आवन नी,
 भुनि कारि-कारि रम भाषिनि भरनि है ।
 मोरि-मोरि बदन निहारती बिहार भूमि,
 घोरि-घारि आनँद-धरी सी उधरनि है ।
 दन कर जोरि गारि बंदत मुरन,
 गरु लोगनि क लारि लारि पाँयन परनि है
 तारि-तोपरि माल पूरु मातिन का चौक
 निरझारि का छारि छोरि भूपन धरनि है ॥

आगमन पीतम चन की मुनि चली स्वान
 आगे आँमू चले ते द्विषाय छन छद ही ।
 सिमकी भरत मिसका न बात बिसकी-सी,
 बेनि रात्री उत्पात हिये दुस कद ही ।
 देव लसि लोटि पिय दीनो पग आइन को,
 रास ही को स्वाम मे हुनास हवे अनद ही ।
 निषटया न दुस, उघट्यौ न मुख, घूँघट ही
 ससन्धो सकन्यो मुमक्याया मुख मंद ही ॥

सखी क सकोच गुरुमोच मृगलोचनि,
 रिसानी पिय सो तु नेकू उन हैंसि लुयो गात ।
 देव वे सुभाय मुमक्याय उठि गए,
 यहि सिसिकि सिमिकि निस्सि खोई राय पायो प्रात ।
 कोन जान नीर निन निरही बिरह मिया,
 हाय हाय करि पद्धिताय न क्यू मोहान ।
 बडे बडे नेगनि ते आँमू भरि भरि दरि,
 गोरा गारो मुख आनु ओरो-सो विलोको जान ॥

॥१॥ ते गिरत फूच पलटे दुकूम,
 अनुराग अनुकून भाग जाके रटभाग क

अजन अधर चींच नख रेख लाल,
 लाल जावरु तिलक भाल सघन सुहाग के ।
 भौहें अलमोहें पल सोहें पगे पीर-रस,
 रगमगे नैन रैनि जागे लगे लाग के ।
 काहे को लजात जलजात से बदन,
 मोहि महा सुख देत आए देत पैच पाग के ॥

प्यारी हमारी सो आवो इतै,
 वनि देव कुप्यारी हवै कैसे के ऐये ।
 प्यारी कहो मति मो सो अहो,
 कहि प्यारी यो प्यार की प्यारी बुलैये ।
 के वह प्यार के एतो कुप्यार,
 औ न्यारी हवै बैठि क वात बनैये ।
 प्यारे पराए सौ कौन परेसो,
 गरे परि कौ लगि प्यारी कहैये ॥

रावरे पाँयनि आट लसै,
 पग गूजरी धार महावरु ढारे ।
 सारी असावरी की भलकै,
 छलकै छनि छोर महानि घुमारे ।
 आवो जू आवो दुराहु न मोहु सौ,
 देवजू चद दुरै न अंध्यारे ।
 देसी हो कौनसी छैल छिपाय
 तिरीछे हँसे वह पीछे तिहारे ॥

हित की हितू री नहि तू री समुझावे आनि,
 सुख दुख मुख सुखदानि को निहारनो ।
 लपने कहाँ लो बालपन की बिकल घातें,
 अपन जनहि सपनह न बिसारनो ।

देवजू दरस त्रिनु तरसि मर्यो है पग,
 परसि जियैगो मनररो अनमारनो ।
 पतिव्रत व्रती ए उपासी ध्यासी अस्त्रियन,
 प्रात उठि पीतम विआयो रूप पारनो ॥

पीक-भरी पलकै नूनकै,
 अलकै जु गडी सु लसें मुज तोज की ।
 छाया रही छवि छेल की छाती मै,
 छाप बनी कहुँ ओखे उरोज की ।
 ताहि चितौति बडी अस्त्रियान ते,
 ती की चितौनि चली अति अरोज की ।
 बालम ओर बिलोकि क बाल,
 दर्ई मनौ खैचि सनाल सरोज की ॥

फूले अनारनि पाँडर डारनि,
 देसत देव महाउर माचै ।
 माधुरी भौरनि अब के बौरनि,
 भौरनि के गन मन से बाँचै ।
 लागि उठे बिरहागिनि की,
 कचनारनि की सु अचानक आँचै ।
 साँचै हँकारि पुरारि पिन्नी कहै,
 नाचै उनैगी बसत की पाँचै ॥

होरी को सोरु परयो वन पौरि,
 किमोरी को चित निओहनि छीज्यो ।
 देव दुरी फिरे देखिये को,
 न दुरै मन ओज मनोज को मीज्यो ।
 केसरिया चरुचौधत चीर ज्यौ,
 केसरि-नीर सरूप लसी ज्यो ।

लाल क रग में भीति रही,
सो गुलाल के रग में चाहति भीन्चो ॥

लोग लोगइन होरी लगाई,
मिला मिली चाउ न मेटत ही बन्यो ।
देनजू चंदन चूर कपूर,
लिलारन लै लै लपेटत ही बन्यो ।
वे यही औसर आये इहाँ,
समुहाय हियो न समेटत ही बन्यो ।
कीनी अनाकिनिया मुस मोरि पै,
जोरि मुजा भट्ट मेटत ही बन्यो ॥

सुनि के घुनि चातरु मोरनि की,
चहुँ ओरनि कोकिल कूकनि सो ।
अनुराग भरे हरि बागनि में,
सखि रागत राग अचूकनि सो ।
कवि देव घटा उनई जु नई,
बनभूमि भई दल दूकनि सो ।
रंगराती हरी हहराती लता,
भुकि जानी समीर के भूकनि सो ॥

आली भुलावति भूकनि सो,
भुकि जाति कटी भननाति भुकोरे ।
चचल अचल की चपला चल,
'वेनी बडी सो गटी चित चोरे ।
या त्रिधि भूलत देखि गयो,
तन ते कवि देव सनेह के जोरे ।
भूलत है हियरा हरि का,
हिय माँह तिहारे हरा के हिडोरे ॥

रागत रजत सैल रच्यो केलि कयलास,
 सोन मनि सिरर मुमेरहि समादरे ।
 रंग-रंग अगन अनग रंग महल -
 उदित र ग राधे रनि र भा को निरादरै ।
 भौंति भौंति कोरनि अमद चद्रकानि पाँति,
 चद का दरस देव बरसति नादरै ।
 बरनि सोपाननि उपर रह्यो भू पर को,
 चारिह तरफ पहराती रम चादरै ॥

छोर की सी लहरि छहरि गई द्विति माँह,
 जामिनी की जाति भाभिनी को मानु ऐ टयो है ।
 टौर-टौर छूटत फुहारे मनौ मोतिन के,
 देन बनु याको मनु का को न अमेठयो है ।
 सुधा के सरोवर सा अर उन्ति ससि
 मुदित मराल मनु पेरिने का पेटयो है ।
 नेलि के विमल फूल पूनत समूल मनौ,
 गगन ते उटि उडगन गन बैठा है ॥

फटिक सिलानि सो सुभारयो सुधा मन्दि
 उदधि दधि को सो आधिकड उमगै अमद ।
 चाहर ते भीतर लौ भीति न दरस्य देव,
 दूध को सो फेनु फेनो आँगन फरसबंद ।
 तारा सी तरुनि तामै टाढी भिलमिलि होति,
 मोतिन की जोति मिली मल्लिका को मरद ।
 आरसी-मे अम्बर में आभासा उज्यारी लागै,
 प्यारी राधिना को प्रतिधि-सो लगत चद ॥

आसपास पुहुमि प्रकास के पगार मूकै,
 बन न अगार डीठि गली औ निर

पारानार पारद अपार दसा दिसि नूडी,
 चंड ब्रह्मड उतरात विधुवर ते ।
 सरद जो हाई ज हुजाइ धार सहस,
 सु धाई सोभासिधु नभ सुभ्र गिरवर ते ।
 उमटो परत जोति मडल अखंड,
 सुधामडल मही मै विधु-मडल विवरते ॥

तेरो कहयो करि-करि जीव रहयो जरि-जरि,
 हारी पाँय परि परि तऊ तैं न की सँभार ।
 ललन मिलाकि देव पल न लगाए तब,
 यो कल न दीनी तैं छलन उछलनहार ।
 ऐसे निरमोहा सो सनेह बाँधि हौ बँधाई,
 आपु विधि बूडयो मॉक वाधासिधु निरधार ।
 ए रे मन मेरे तैं घने रे दुख दीहे अन,
 ए केवार दै कै तोहि मुँदि मारौ एक बार ॥

ऐसो जो हौ जानतो कि जेहै तू विपै के संग,
 ए रे मन मेरे हाथ पाँय तेरे तोरतो ।
 आजुलौ हौ कत नरनाहन की नाही सुनि,
 नेह सो निहारि द्वारि बदन निहोरतो ।
 चलन न देतो देव चंचल अचल करि
 । चानुक-चिताउनीनि मारि मुँह मोरतो ।
 भारो प्रेम पाथर नगारौ दै गरे सो बाँधि,
 राधानर बिरद के बारिधि मै बोरतो ॥

धन आनन्द

तीछन इछन वान बखान सो,
पैनी दसान लै सान चढानत ।
प्रासन प्यारे, भरे अति पानिप,
मायल घायल चोप चटावत ।
यो धनआनेद छानत भावत,
जान सजीवन ओर तौ आवत ।
लोग है लागि कवित्त बनावत,
मोहि तौ मेरे कवित्त बनावत ॥

नेही महा ब्रजभापा प्रवीन ओ,
सुदरतानि के भेद को जाने ।
जोग नियोग की रीति में कोरिद,
भानना भेद-स्वरूप को टाने ।
चाह के रग में भीज्यो हियो,
निछुडे मिलै प्रीतम साति न माने ।
भापा प्रवीन, सुबुद सदा रहै,
सो धन जो के कवित्त बखाने ॥

प्रेम सदा अति ऊंचो लहै सु,
कहै इहि भौति की बात बकरी ।
सुनि के सन के मन लालच दौरै,
पै बौरै लरै सन बुद्धि-चकरी ।
जग की कविताई के घोखै रहै,
ह्यौ प्रवीनन की मति जाति बकरी ।

समझै कविता घनआनंद की,
हिय-आँखिन नेह वी पीर तकी ॥

निरखि सुजान प्यारे रावरो रुचिर रूप,
बावरो भयौ है मन मेरो न सिलै सुन ।
मति अति छाकी गति थाकी रतिरस भीजि,
रीझ की उभलि घनआनंद रहयो उनै ।
नैन बैन चित चैन है न भेरे बस, मेरी,
दसा अचिरज दखौ बूडति गहें गुनै ।
नेह लाय कैसे अब रूखे हूजियत हाय,
चंद ही के चाय च्वे चकौर चिनगी चुनै ॥

हीन भएँ जल मीन अभीन,
कहा फछु मो अकुलानि समानै ।
नीर सनेही कौ लाय कलक,
निरास हूँ कायर त्यागत प्रानै ।
प्रोति की रीति सु क्यों समझै जड,
मीत के पानि परे को प्रमानै ।
या मन की जु दसा घनआनंद,
जीव की जीवनि जान ही जानै ॥

पहलै घनआनंद सीच सजाए,
कहीं बतियाँ अति प्यार पगी ।
अब लाय बियोग की लाय बलाय,
बढाय प्रिसास-दगानि दगी ।
आँखियों दुखियानि कुचानि परी,
न कहूँ लगै कौन घरी सु लगी ।
मति दौरि थकी न लहै ठिक दौर,
अभोही के मोह मिठाय टगी ॥

मन पारद कूप लौ रूप चहें
 उमहै सु रहै नहि जेतो गहौ ।
 गुन गाड़नि जाय परे अकुलाय,
 मनोज के ओजनि सूल सहौ ।
 धनआनँद चेटक धूम में प्रान घुटै,
 न छुटै गति कासो कहौ ।
 उर आरत यो छनि छाँह ज्यौ हौ,
 बज्रछैल की गेल सदाई रही ॥

रससागर नागर स्याम तरसै,
 अभिलापनि धार मभार बहौ ।
 सु न सूझन धीर को तीर कहँ,
 पवि हारि के लाज सिवार गहौ ।
 धनआनँद एक अचभो बडो गुन,
 हाथ हँ बूडति कासो कहौ ।
 उर आरत यो छनि छाँह ज्यौ ही,
 बज्रछैल की गेल सदाई रही ॥

तय तौ छनि पीवत जीवत हे,
 अर सोचन लोचन जात जरे ।
 हित पोषके तोष सु प्रान पल,
 त्रिललात महादुख-दोष भरे ।
 धनआनँद मीतम् जान बिना,
 सरही सुख साज समाज टरे ।
 तब हार पहार से लागत हे,
 अर आनि के बीच पहार परे ॥

पहिले अपनाय सुजान सनेह सो,
 क्यो फिरि तेह के तोरिये जू ।

समझै कबिता घनआनंद की,
हिय-आँखिन नेह वी पीर तकी ॥

निरखि सुजान प्यारे रावरो रुचिर रूप,
बावरो भयौ है मन मेरो न सिलै सुन ।
मति अति छाकी गति थाकी रतिरस भीजि,
रीझ की उभलि घनआनद रहयो उनै ।
नैन नैन चित-चैन है न मेरे बस, मेरी,
दसा अचिरज देखौ वृद्धति गहँ गुनै ।
नेह लाय कैसे अब रूरे हृजियत हाय,
बंद ही के चाय व्वे चकोर चिनगी चुनै ॥

हीन भएँ जल मीन अधीन,
कहा कहु मो अकुलानि समानै ।
नीर सनेही कौ लाय कलक,
निरास है कायर त्यागत प्रानै ।
प्रोति की रीति सु क्यों समझै जट,
मीत के पानि परे कौ प्रमानै ।
या मन की जु दसा घनआनंद,
जीव की जीरनि जान ही जानै ॥

पहले घनआनंद सींच सजान,
कही बतियाँ अति प्यार पगी ।
अब लाय चियोग की लाय बलाय,
बढाय रिसास-दगानि दगी ।
आँखियाँ दुखियानि कुथानि परी,
न कहँ लगै कौन घरी मू लगी ।
मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर,
अभोही के मोह मिठास ठगी ॥

मन पारद कृप लौ रूप चहे
 उमहै सु रहे नहि जेनो गहौ ।
 गुन गाढ़नि जाय परे अकुलाय,
 मनोज के आननि मूल सहौ ।
 धनआनँद चेटक धूम में प्रान बुटै,
 न छुटै गति कासा कहौ ।
 उर आनत यौ छनि छाँह ज्यौँ ही,
 बज्रछेल की गेल सदाई रही ॥

रसमागर नागर स्याम लखे,
 अभिलापनि धार मभार बहौ ।
 सु न सृम्हन धीर को तीर कर्है,
 पचि हारि के लाज सियार गहौ ।
 धनआनँद एक अचभो बड़ा गुन,
 हाथ हूँ नूटति कासौँ कहौ ।
 उर आनत यो छनि छाँह ज्यौँ ही,
 बज्रछेल की गेल सदाई रही ॥

तब तौ छनि पीरत जौरत हे,
 अर सोचन लोचन जात जरे ।
 हित पोपके ताप सु प्रान पल,
 विललात महादुख-दोष भरे ।
 धनआनँद भीतसु जान बिना,
 सनही सुख साज समाज टरे ।
 तब हार पहार से लागत हे,
 अर आनि के बीच पहार परे ॥

पहिले अपनाय सुजान सनेह सौ,
 क्यौँ फिरि तेह के तोरिये जू ।

निरधार अधार दै धार मँभर,
 दर्द गहि बाँह न चोरिये जू ।
 धनअनंद आपने चातक कों,
 गुन-बोधिलैं मीह न छोरिये जू ।
 रस प्याय कै ज्याय बढाय कै आस,
 चिलास में यौ रिप घोरिये जू ।

रावरे रूप की रीति अनूप,
 नयो नयो लागत ज्यौ ज्यों निहारिये ।
 त्यौ इन अखिन बानि अनोसी
 अधानि कहूँ नहि आन तिहारिये ।
 एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयो,
 सजान सकोच औ सोच सहारिये ।
 रोकि रहै न, दहै धनअनंद,
 वावरी रीभ के हाथनि हारिये ॥

तन तौ दुरि दूरहि तैं मुसकाय,
 बचाय कै और कि दीठि हँसै ।
 दरसाय मनोज की मूरति ऐसी,
 रचाय कै नैननि में सरसे ।
 अन तौ उर'माहि वसाय कै मारत,
 एजू निसासि कहाँ धौ बसे ।
 कुछ नेह निगाह न जानत हे तौ,
 सनेह की धार में काहें धसे ॥

रूप चमूप सज्यो दन देखि,
 भज्यो तजि देसहि धीर मवासी ।
 नैन मिलै उर के पुर पैठते,
 लाज लुटी न छुटी तिनना सी ।

प्रेम दुहाई फिरः घनआनंद,
 बौधि लिये कुल-नेम गुडासी
 रीक सजान सची पटरानी,
 बची बुधि रापुरी हवै करि दासी ॥

जोरि कै कोरि क प्राननि भावते,
 सग लिय अस्त्रियानि मैं आवत ।
 भीजे स्याद्धन सौ घनआनंद,
 छाय महारस कौ परसावत ।
 ओट भएँ फिरि या जिय की गति,
 जानत जीवनि ते जु जनावत ।
 भीत सुधान अनूठिये रीति,
 जिनाय कै मारत मारि तिनारत ॥

फेरलि रही घर अबर पूरि,
 मरीचिनि-त्रीचिनि-सग हिनोरति ।
 भौर-भरी उफनाति खरी सु,
 उपाय की नाय तरेरनि तोरति ।
 क्यों बचिये मनि हू घनआनंद,
 बैठि रहैं घर पैठि ढढोरति ।
 जोह प्रलै के पयोनिधि लौ,
 बढि बेरिनि आज बियागिनि चोरति ॥

आई है दिवारी चीते काजनि जिवारी प्यारी,
 सेलै मिलि जूना पैज पूरे दान पावही ।
 हारहि उतारि जीते भीत घन लब्धनि सो,
 चोप-चढे बैन चैन चहल मचारही ।
 रग सरसावे बरसावे घनआनंद,
 उमग ओपे अगनि अनग दरसावही ।

दियरा जगाय जागै पिय पाय तिय रागै,
हियरा जगाय हय जोगहि जगारही ॥

लासनि भौंति भरे अमिलापनि,
के पल पौवडे पंथ निहारै ।
लाटिली आरनि लालसा लागि,
न लागत है मन में पन धार ।
यौं रस भीजे रहै घनआनद,
रीके सुजान सरूप निहार ।
चायनि नाररे नैन कनै,
अंसुवान सी नाररे पाय परारै

आ ५ कहै मनमोहन मो गली,
पूरन भागनि को बत उजै ।
हाय कछू न बस्याय तवै,
दुरि दसिनो दूभर, छौंह क्यो छुजै ।
मांगति हौ विधिना पै वडे खन,
जौ करहै जिय आसहि पूजै ।
चौथि को चद लख बजचद सों,
लागै फलक तो ऊपरै हूजै ॥

परसत-लालसा-ललक छलकनि पूरि,
पलरनि लागी लागि आरनि अरररी ।
सु दर सुजान मुत्तचद को उदै विलोकै,
लोचन चकोर सेवै आरति परन री ।
अ ग अ ग अ तर उमंगरग भरि भारी,
बाडी चोप चुहल की हिय में हरररी ।
धुटि धुटि तरै औधि थाह घनआनद यी
जीव सुनयौ जाय ज्यों ज्यों भीजत सरररी ॥

रावरे गुननि बाँधि लियौ हियो जान प्यारे
 इते वै अचभा छोरि दीनी तु सुरति है
 उघरि नचाय आपु चाय में रचाय हाय,
 क्यों करि वचाय दीठि यौ करि दुरति है ।
 तुम हूँ तो न्यारी है तिहारी प्रीति रीति जानी,
 ढीले हू परे तो गरो गाँठि सी घुरति है ।
 कैसे घनआनंद अदोपनि लगैय सोरि,
 लेरनि लिखार की परेसनि मुरति है ॥

घेरयो घट आय अ तराय पटनि-पट पे,
 ता मधि उजारे प्यारे पानस के दीप ही ।
 लोचन पत ग सग तजे न तऊ सुजान,
 प्राण हस राखिये कौ धरे ध्यान सीप ही ।
 ऐसे कहौ कैसे घनआनंद बताऊ दूरि,
 मन सिहासन बैठे सरत-महीप ही ।
 दीठि आगे डोलौ जो न बोलौ कहा उस लागै,
 मोहि तो प्रियोग हूँ मैं दीसत समीप ही ॥

जन तै निहारे इन आँखिन सजान प्यारे,
 तव तौ गही है उर आन दरिये की आन ।
 रस भीजे बेननि लुभाय के रचे है तहाँ,
 मधु मकरंद सधा नागौ न सनत कान ।
 प्राणप्यारी प्यारी घनआनंद गुननि कथा,
 रसनौ रसोली निसिनासर करत गान ।
 अ ग अ ग मेरे उन ही के सग रग रँगे,
 मन सिहासन पै निराने निन ही को ध्यान ॥

ढिग बैठे हूँ पेठि रहै उर में,
 घर तै सुरा को डुस दोहत है ।

दृग आगे तैं घैरी टरै न कहैं,
 जगि जोहन अतर जोहत है ।
 घनआनँद मोत सुजान मिलैं,
 रसि बीच तऊ मन मोहत है ।
 यह कैसो सँजोग न बुझि परै,
 जु वियोग न क्यो हूँ विछोहत है ।

नैन कहै सुनि रे मन । कान दे,
 क्यो इतनो गुन मेटि दयो है ।
 सन्दर प्यारे सुजान का मदिर,
 व्यापरे तू हमही तैं भयो है ।
 लोभी तिहै तनको न दिरानत,
 ऐसो महा मद छाकि गयो है ।
 कीजिये नू घनआनँद आय कै,
 पाय परौ यह याग नयो है ॥

ले ही रहै हौ सदा मन और को,
 दैयो न जानत जान दुलारे ।
 दरयो न है सपने हूँ कहू दुख,
 त्यागे सकोच औ सोच सुसारे ।
 क्यो सँजोग वियोग धौँ आहि ।
 फिरौ घनआनँद ह्ये मतवारे ।
 मो गति बुझि परै तब हो,
 जब होहु घरीक हूँ आप तैं यारे ॥

डगमगी, डगनि धरनि छवि ही के भार,
 दरनि छरीले उर आछी बनमाल फी ।
 सुन्दर मदन पर कोरिक मदन नारो,
 चित चुभी चितरनि लोमन बिसाल की ।

काल्हि इहि गली अली निम्स्यो अचानक है,
 वहा कही अटक भटक तिहि काल की ।
 भिन्नई हो रोम रोम आनंद के घन छाये,
 उसी मेरी आँखिन में घायनि गुपल क

मुख दरस गौहन लगेइ फिरे भार नीर,
 दूटे धर हेरि कै पपीहा-पुज छावहो ।
 गति रीम्हे चायनि सो पावन-परस-आज,
 रसलोभी तिनस मराल-जाल धानहीं ।
 याने मन होय प्रान-मपुट में गोय रासो,
 ऐसे हूँ निगोड़े नैन कैम चन पानहीं ।
 सीचिये अन दघन जान प्यारी जैसे जानी,
 दुसह दसा की जाते चरनी न आयहो

मोर चिट्रका सी सय दरसन को धरे रहै,
 सूद्धम अगाध रूप-साध उर आनहीं ।
 चाहि सुभ्र तिनहूँ सो दग्नि भूली ऐसी दमा,
 ताहि ते निचारे जड कैसे पहचानहीं ।
 जान प्रानप्यारे के निलोके अनिनोकिने को,
 हृग्य निपाद-न्वाद-वाद अनुमाहीं ।
 चाह मीठी पीर जिहै उटति अनंदघन,
 तेइ आँखे सारै और पास कहा जानहीं ॥

रति-मुख स्वेट ओप्यो आनद विलाकि प्यारे,
 प्राननि सिहाय मोह-मादिक महा छुके ।
 पीतपट छोर लै लै डोरत समीर धोर,
 चु रनि की चाटनि लुमाव रही नासने ।
 परसि सरस रिधि रचिर चिनुक र्यो ही,
 कपति करनि केलि-भाव-दोष ही तने ।

लाजनि लसोही चितननि चाहि जान प्यारी,
सींचति अनंदघन हॉसी सों भरीन कै।

जो उहि ओर पटा घनघोर सो,
चातक मोर उद्याहनि फून्ते ।
त्यौं घनआनंद औसर साजि,
सँजागिनि भुड हिडोरनि भूलते ।
धीपम तें हतई जु लता,
दुम अकनि लागती हँ रसमूल ते ।
तौ सजनी ! जिय ज्यानन जान सु,
क्यौ इत की हित की सुधि भूलते ॥

अति सूधो सनेह को मारग है,
जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं ।
तहाँ साँचे चलै तजि आपुनपौ,
भभक्ते रुपटी जे निसाँक नहीं ।
घनआनंद प्यारे सुजान सुगौं,
यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं ।
तुम कौन धी पाटी पढे हौ कहौ,
मन लेहु पै दहु छटाँक नहीं ॥

चूर भयौ चित पूरि परतिन,
एहो कठोर अजौ दुख पीसत ।
साँस हिथै न समाय सकोचनि
हाय इते पर जान नसीसत ।
ओटनि चोट करी घनआनंद
नीक रहौ निसघोस असीसत ।
प्राणनि बीच बसे हौ सुजान पै
आँसिन दाप कहा जु न दीसत ॥

ज्यो उहरे न कूँ टहरे मन,
 दह सो आहि निदह को ले ।
 दखति ना दुनिया अतिषाँ निन,
 बैरियो की सपने सो ।
 ही तो सजान महा घनआनँद,
 पे पहिचानि की रास न रसो ।
 हाय दइ वह कौन भइ गति,
 प्रीति मिटे हँ मिटै न परेसो ॥

नग-नीर सा दीटिह नेहुँ बहाय पै
 वा मुल को अभिनायि रही ।
 रसना त्रिष गोरि गिराहि गसो,
 वह नाम सुधानिधि भागि रही
 घनआनँद जान-मुनेनि त्यो,
 रचि कान बचे रचि साति रही ।
 निन चारन पाय पले करहुँ,
 पियकारन यो जिय रागि रही ॥

तिनको नित नाके निहारनि ही,
 तिनको अग्नियोँ अर रोवति है ।
 पन पाँउडे पायनि चायनि सो,
 अँसरान के धरनि धोवति है ।
 घाआनँद जान सजीरनि का
 सपने निन पाएँई सोवति है ।
 न खुली कुदी जानि परै कतु,
 दरहाइ जगे पर सावनि है ॥

पहिल पञ्जानि जु मानि लई,
 तो सु भइ देस मूल

इत के हित बैर लिये उत है,
 करि ज्योहरि व्योहरि लोभ महा ।
 घनआनंद मीत सूनो अरु उतर,
 दूरतें देहु न देहु हहा ।
 तुम्हें पाय अजू हम सौयी सवे,
 हमे सौय कहौ तुम पायी कहा ॥

साधन आवन हेरि सखी ।
 मनभावन आवन चोप निसेखी ।
 छाए कहें घनआनंद चान,
 सम्हारि की ठौर लै मूलनि लेखी ।
 घूँदें लगें सब अग दग,
 उलटी गति आपने पापनि पेखी ॥
 पौन सौ जागति आगि सुनीही पे,
 पानी तैं लागति आसिन देखी ॥

परे नीर पौन । तेरो सरे ओर गौन,
 नीरी तो सो और कौन मने ढरकौ ही गानि दे ।
 अगत के प्रान, ओझे बडे सा समान,
 घनआनद निधान सुरदान दुखियानि दे ।
 जान उजियार गुन-भारे अत माही प्यारे,
 अन है अमोही बैठे, पीठि पहिचानि दे ।
 निरह बियाहि मूरि, ओखिन मै रासों पूरि,
 धूरि तिनि पायनि की हा हा ! नेकु आनि दे ॥

परकाजहि देह को धारि फिरो,
 परजय जवारय है दरसौ ।
 निधि-नीर सुधा के समान करौ,
 सन ही विधि सज्जनता सरसौ ।

घनश्रानंद जीवन-दायक ही,
 कष्ट मेरियो पीर हिय परसी ।
 कवहँ बा निमामी सुचान के आँगन,
 माँ अँसुवानहि ले परसी ॥

राधा नव यौवन बिलास को वमत जहाँ
 अन्न अन्न रंगनि विक्राम ही की भीर है ।
 प्यारी बनमाली घनश्रानंद मचात सेवै,
 जाहि देखि काम के हिये रम नाहि धीर हैं ।
 मुरनि समाज साव काञ्चि कुरू जानै
 साँसन अनेन मुग्ध-मोरभ ममीर है ।
 स्नाद-मन्दरद को मनारथ मधुप पुत्र,
 मनु वृदारन दस तपुना के तीर है ॥

चाहिये न कष्ट जाकी चाह नामो फल पायो,
 याते बाही उन क मरूप नैन कीनी घर ।
 जहाँ राधा-केलि खेलि कुच मी झरनि छायो,
 लसत सदाइ ब्रज कालिंदी सुदस थर ।
 महा घनश्रानंद फुहार मुरत सार सीचें,
 हित उतमरनि लगाय रग भर्या कर ।
 प्रेम रस मूल कूच मूरति निराजी ,
 मेरे मन आलनाल हरन टुपा को कल्पतरु ॥

एके डोलै बेचत गुपानहि दहेंडी लिये,
 नैननि समायो सोही बेनन चनात है ।
 और उटि गोलै आगँ लावरी कहा है मोक्ष,
 कैमो धौं जग्यो है ज्यो सशदे लवचान है ।
 श्रानंद को घन छायो रहत सदा ही मच,
 चोपन पपीहा लौ चहँगा मँडरात है ।

गोकुल उधून की बिकन पे निकाय रह्यौ,
गली गली गोरस हर्ष मोहन निकात है ॥

बज बृदावन गिरि गोधन जमुन तीर,
सुनस सुनस पुर वन सुन साधा को ।
जाकी भूमि भागहि सिहात है गिरीस ईस,
धूरि रसमूरि हरै दुस सन राधा को ।
एक रह विहरत दोऊ महारस भीनै,
आनंद पयोद प्रीति परम अराधा को ।
रयाम के सरूप को कछुक निरधार होय,
तौ कछु कह्यो परं अगाध प्रेम राधा को ।

भल्लनै अनि सुदर आनन गौर,
छकै दग राजत काननि हवै ।
हसि बोलनि मं छनि फूलन की,
वरपा उरउपर जाति है हवै ।
लट लोल कपोल कपोल करै,
कल कंठ वनी जलनागलि दयै ।
अग अंग तरग उटै दुति की,
परिहै मनौ रूप अवै धर चै ॥

लाजनि लपेटी चितवनि भेद भाव भरी,
लसति ललित लोल चरस निभ्रानि में ।
छनि को सदन गोरो वदन, ररिभ भाल,
रस निचुरत माठी नृदु मुसक्यानि में ।
दसन दमकि फैलि हिये मोती माल होति,
पिय सो लदकि प्रेम पगी वतरानि में ।
आनंद की निधि जगमगति छरीली बाल
अगनि अनगरज दुरि मुरि जानि में ॥

रस आरस भोय उठी रुद्र सोय,
 लगी लसें पीरगी पनके ।
 घनआनंद आप बढी मुल औरै सु,
 कैलि मरी मुखरी अलके ।
 अगराति जम्हाति लसें सर अह,
 अनगहि अग दिपे भनक ।
 अधरानि मै आधिय जाल धरे,
 लटकानि की आनि परै छलक ॥

बरु निसाल र गीले रसाल,
 छरीले कटाइ कनानि में पडित ।
 सौंजल सेन निमाई निकन
 हिये हरि लेत है आरस मडित ।
 वेधि के प्रान करै फिरि दान,
 सुजान खरे भरे नेह अरडित ।
 आनंद आसव घूमरे नैन,
 मनोन के चोपनि ओन प्रचडित ॥

जान नए नए नेह के भार,
 विधे उर ओर घनी बरनी के ।
 आनंद मै मुसम्यानि उदोत मै,
 होत है रोता तमोल अमी के ।
 मोर की आवनि प्रान अंकोर न्ये
 तित ही चनि आप जदी के ।
 डारिये जू तिन तोरि कै,
 लालन और दिनान ते लागत गोके ॥

बिभाकर-कुंवरि तमालन की पाँति रोच,
 धीचिनि मरीचै जागि लागति

भावना भरोने हिय, गहर भर परे,
 एकरस राग धुनि रगनि रँगमगी ।
 चातकी भइ है चाँडि आँद के अबुद का
 बन घन हूँटे रीझि डोलती डगमगी ।
 प्रेम की पसीजनि प्रवाह रूप देखियत,
 सदा स्याम के सिंगार सार सो सगमगी ॥

सुन्दर सरस लीनो ललित रँगिलो मुख,
 जोवन झलक क्यौ हँ कहीं न परति है ।
 लोचन चपल चितवनि चाय चोज भरी,
 भृकुटी सुठौन भेद-भायनि दरति है ।
 नासिका रुचिर अधरनि लाली सहजै ही,
 हसनि दसन जोति हियरा हरति है ।
 नस सिर आनँद उमग की तरग बढि,
 अङ्ग अङ्ग आली छनि छलन्यौ करति है ॥

लत खिलार गुन आगर उदार,
 राधा नागरि छपीली फाग राग सरसाति है ।
 भाग-भरे भावते सौ आँसर फयो है आनि,
 आनँद के घन की घमड दरसाति है ।
 ओचक निसक अक चाँपि खेल घघरि में,
 सरिन त्यौ सैननि ही चैननि सिहाति है ।
 केमूरग धोरि गारे करि स्याम सुन्दर को,
 गोरी स्याम-रग बीच बूडि-बूडि जाति है ॥

सौधे सनी अलकें बगरी मुख
 जावन जोह सो चंदहि धोरति ।
 अगनि रग तरग नदी सु,
 किती उपमानि के पानिप दोरति ।

माहन मो रमफाग रची सु,
 भली भई हों करत हि 'निहोगति ।
 आनंद को घन रीभूनि भोजि,
 भिचे पडई कहा चीर निचारति ॥

रतिर ग रागे प्रीति पाग रैन चाग नैन,
 आयत लगड प्रमि भमि छवि सा छके ।
 सहज विलोल परे केलि की कनोवन में,
 करहूँ उमगि रह कर कर थरु ।
 नाकी पलकनि पीक-लीफ भलकनि साँहै,
 रस बलकनि उनमदि न रहै सके ।
 सुसप्त सुजान घनआनंद पाखत प्रान,
 अचिर नरगनि उघरे हू लान सो ढके ॥

केलि की बलानिधानि सुतरि मुजान महा,
 आन न समान छवि छोंह पै छिपैये सौनि ।
 माधुरी मृदित मुस उन्ति सुसौल भाच,
 चचल प्रिस, न नैग लाज भीजियै चिनौनि ।
 पिय अग-सग घनआनंद उमंग हिय,
 सुरति तर । रस विचन - उर मिलौनि ।
 भूलनि अलक, आधी रुलनि पलक,
 सम स्नेदहि भलक भरि ललक सिथिल होनि ॥

सोचे रस र ग अ ग फूल फेलि छवि दिय,
 दरि दरि मालती-स्तनानि उरुमाति है ।
 आछे आछे मधुप कुमार कोटि ओटि कीजे,
 अलक छरीली मन छूटियो कमति
 कहा कहौ राधे घनआनंद पिया के हिय,
 बसि रसि जसी मेरी आँसिनि

कौन धी अनृठी अभी प्यावै जिय ज्यावै भावै,
एरी तेरी हँसनि बसत को हँसति है ॥

देखि धी आरसी ली बलि नकु,
लसी है गुराई में कैसी ललाई ।
मानो उदोत दियाकर की दुति,
पूरन चदहि भेंटन आई ।
फूलत फज कुमोद लखें,
घनआनंद रूप अनूप निरुई ।
तो मुख साल गुलालहि लाय कै,
सौतिन के हिय होरी लगाई ॥

रूप के भारन होती है सौही,
लजौहिये दीठि सुजानि यौ भूली ।
लागियै जाति, न लागि कहूँ निसि,
पागी तहाँ पलकी गति भूलि ।
बेठिये बू हिय पैटत आजु,
कहा उपमा फजये समतूली ।
आए हौ भोर भएँ घनआनंद,
आँखिन मॉक तो सॉक-सी फूली ।

श्रीपति

घूँघट उदय गिरिवर तें निकम्पि रूप,
 सुधा सौ कलित छवि-कीरति उगाग है ।
 हरिन द्विदौना स्याम, सुर सील घरपत,
 कण्पत सोरु अति तिमिर बिदारो है ।
 श्रीपति विलोकि सौति वारिज मलिच होत,
 हरपि कुमुक फूलै नंद को दुलारो है ।
 रजन मदन तन गजन निरह, विवि
 संजन सहित अदबद। तहारा है ॥

हारिजात वारिजात मालती विदारि जात,
 वारि जात पाग्जिजात सौधन में करी सी ।
 मागन सी मैन-सी मुरागी मखमल सम,
 कोमल स स तन पूजन की छगी-सी ।
 गहगही गहनी गुराई गोरी गोरे गात,
 श्रीपति विलोर-सीसी इंगुर सो भरी-मी ।
 विजु थिर धरी-सी कनक-रेख करी सी,
 प्रमाल छवि हरी सी लसत लाल लरी-मी ॥

वैसे रतिरानी के सिधारे कवि श्रीपति जू,
 जैसे कलघौत के सरोरुह सवारे हैं ।
 वैसे कलघौत के सरोरुह सवारे कहि,
 जैसे रूपनट मे बटा से छवि डारे हैं ।
 वैसे रूप नट के बटा से छवि डारे कहु,
 जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं ।
 वैसे काम भूपति के उलटे नगारे कहु,
 जैसे प्राणप्यारी जे जे उरज तिहारे हैं ॥

दराज दरजि हिय, लरजि लरनि करि
 अरनि अरनि परे दूत य मदन के ।
 नरजि बरजि अति, तरजि तरनि मोपे
 गरजि गरजि उठै बादर गगन के ॥

तेरेई ते भ्रमरु लरिनिके,
 जुगुनून की जे तन लूके लगी ।
 वर की सुधि के दरकी छतियों,
 जय सीरी नयारिकी भूके लगी ।
 भनै श्रपति आप घटा धहरै,
 हहरै हियरा अति है के लगी ।
 अत्र कैसे ननाय बनैगौ पिया प्रिय,
 पापिनी कोकिल कूके लगी ॥

छायौ नभ मडल घुमडि घन श्रीपति जु,
 आनंद अथोर चारो ओर उमंगत है ।
 पायौ मद मालती को, कुज कुज गजत है—
 भोर दुरस-पुंज गेह गेह ते भगत है ।
 धायौ देस देस तें विदेसी सब कठ लायी,
 निज निज ती को, भरौ मोदहि जगत है ।
 आयौ सरती सावन, सोहानन सही,
 पै मोहि बिन मनभावन भयावन लगत है ॥

तम की जमरु, चक्रपौते की चमरु,
 ज्योति झींगन भ्रमरु, चमरुन चपलान की ।
 वैहर करोरै, मोरै रोरे चहुँ औरै सोरै,
 प्रेम के हलारै घोरै धुनि धुरवान की ।
 रतियों जमरु आई, छतियों उमंगि आई,
 पतियों न आई प्यारे श्रीपति सुजान की ।

नेह तरजन त्रिहा के सरजन सुनि,
मान मरदन, गरजन उदरान की ॥

पपिहा की पुकार परी है चहँ,
उन में गन भोरन गानन क ।
कहि श्रीपति सागर से उमगे,
तरु तीरत तीर सुहावन के ।
त्रिहातल ज्वाल दहे तन को,
त्रिन होत सखी पग वामन के ।
दिन गे मनभावन आवन के,
घहरान लगे घन सारन के ॥

आड आड करत असाड आयौ मेरी आली
डर सी लगति देखि तम के नभाक ते ।
श्रीपति ये मैन माने मारन के वैनु सुनि,
परत न चैन चुदियान के भनाक ते ।
भिल्ली-गन भाभ भनकारै न सँभारै नेक,
दादुर दपट बीज तरसै तमाक ते ।
भरनी त्रिहा आग, करकी कटिन छाती,
दरमी सजन जलधर की धमाक ते ॥

जलमरै भूमै मनौ भूमै परसत आइ,
दस हू दिसान घूमै, दामिनी लण लण ।
धूमधारे धूसर से, धुरया धुधारे कारे,
धुरमान धारे धारे छुरि सौ छुर छुर ।
श्रीपति सुजान कहै घरी घरी घहरात,
तापत अतन ता ताप सौ तण तण ।
लाल त्रिन जैसे लाज चदर रहेगी वीर,
कातर करत मोहि वादर नए-नण ।

लाल दुकूल सजै रचि मा
 सन ही सौ निसक न लाज रही गहे ।
 और की औरहि बात नहे,
 ससिनाथ कितौ समुझाइ सती कहै ।
 पोछत स्वेदा अगनि तै,
 सु अनग कता अति ही चित म चहे ।
 जानि परै न बड्डु उर की,
 निसि वासर बाम की भौह चढी रहे ॥

हाइवे जाइ तौ सग सती बनि,
 पामरे पामरी के करिगो करै ।
 केमर लाइ सँवाहि के आड
 निहारि कै नेह नदी नारिगो करै ।
 जो ससिनाथ न डीठि परै,
 कुल कानि तै नारि बड्डु डरिगो करै ।
 तो निसि वासर सागरिया,
 घर की नित भौमरिया भरिगो करै ।

सरसाए दुकूल सुगध सा सानि,
 सरे, रति मदिर वास रह्यो ।
 रँग-रँग के अग अनूप सिंगार,
 सिंगार निहारि कै मोद लह्यो ।
 पुनि ग्रीरी सब्राजत हू ससिनाथ,
 सुजान सो प्यारी रुड्डु न कह्यो ।
 नव लागन लागे महागर पाँइ,
 तने मुसिन्याइ के हाथ गह्यो ॥

टापी बतरात इतरान ही परीसिन तें,
 जैसी तिय दूसरी न पूरन पड्योह म ।

दीठि परि गए तहाँ सुन्दर मुजान बाह,
 औचक ही प्रकट छिपति परझाँह में ।
 सोमनाथ त्यो ही प्रानप्यार सो मुनाइ कथा,
 तिय नें मसीसो तरनाई क उझाँह में ।
 बसीपट निकट हमें तू मिलियो री कालिह,
 कातिक में हाऊगी नरयन की झाँह में ॥

रुलि है लाल के सग चलो,
 कहिके उर में मति ओगइ टानी ।
 यो बहकाइ के नेह बडाइ,
 मयकमुग्गी रति मदिर आनी ।
 हौं न लखे ससिनाथ मुजान,
 रडूक तहीं टठकी टकुरानी ।
 है न सयान रती भर ह,
 अलयेलो तऊ हिय म अनुलानी ॥

उज्जल सरद पद-चट्टिका अनंद दुति,
 त्रिनिध समीर की झरोर आनि फहरें ।
 मुक्ता अनिद मकरद के से त्रिंदु चारु
 बदनारविद की छत्रीली छटा झहरें ।
 साजि रग-रगनि के सुदर सिंगार प्यारी,
 गद केलि घाम दूनी जामनी की पहरें ।
 पैगि परचक नदनद तिन सामनाथ,
 लागी अग उठनि भुजंग की ली लहरें ॥

मि अत है आए प्रभान मण,
 गति पाँदन औरई पाइ लई ।
 ससिनाथ उनीदी मुँ अँसियाँ,
 पगिया उन फेरि बनाइ लई ।

रति चि ह न पूछति जानि सुजान,
 हैंसी मिस चाल मुलाइ लई ।
 कर चान अमोल कपोलन चूमि,
 भुजा भार कठ लगाइ लई ॥

उत' हे मन, यातें सूधे न परत पाग,
 अ ग अरसात मुरहरै उठि आए हो ।
 रगमगी अ सियौं अनूप रूप चोरै लेत,
 सामनाथ आबै यहि रूप सति पाण हो ।
 हम सा ती विहसि विलोकितौ विसारयो पिय,
 सन विधि उनई क हाथन भिगाण हो ।
 माह ना नटत, नेई वैनन प्रकट होन,
 अनुराग जिनकौ लिलार धरि आए हो ॥

हरि तौ मनुहार मनाइ गए,
 जिनपे जियरा रति वारति है ।
 ससिनाथ मनोज की ज्वालनि सो,
 अ न कुदन सौ तन जारति है ।
 उठि लेटति सेज पे चद्रमुखी,
 पछिताइ के पौरि निहारति है ।
 न रहे मुख तैं दुख अतर को,
 अँसुआनि सो अँसि पथारति है ॥

सामु के बास विसारे सये,
 उपसाहन ह तैं निसकिन हो भई ।
 लीर अलीक न जानी क्यू,
 टकुगनी रहाइ सु रकिन हो भई ।
 जा ससिनाथ सुजान क काज,
 तजे सुख साज अलकिन हो भई ।

री, तिन सा हित तोरि के हाय !

वृथा बन मौंहि सलबनि हौं म० ॥

कारु निहार तरियन का सुति,

लाग्यौ महा रिगहा तन तावन ।

हे समि गाय कदा कहिण

बिन सौं लगि नैन ही कन मे पावन ।

बीच टुटन क फूलन ले,

अलखली के, प्रेम को मित्रु रडावन ।

कह दिगारी की रैन चले

उरसान मन की मन जगावन ॥

आली, ' रहु रामर विनाप ध्यान धरि धार,

तिनकी मुफल नैन दरसन पावैग ।

हात है री सगुन मुहावने प्रभाव ही तै,

अगन से अधिक विनाद सगसावेग ।

सोमनाप हरे हरे रतियाँ अनुयी कहि,

गूढ रिहानत का तपनि नुम्कारेगे ।

सुनही तें प्यार प्रान, प्रानन नें प्यार पति,

पति ह तें प्यार मनपति आव आवेगे ॥

दिगि दिदिमनि ते उमटि मटि लीहो नम,

झेडि दीनी धुवा जगसे चुप करिगे ।

डहडह भए टुम रचक हया क गुन

कह कहें मुग्गा पुकारि मोद भरिगे ।

रहि गये चालक जहाँ क तहाँ देखत ही,

सामनाथ कहे बूदापदी ह न करिगे ।

सार भयो योग, बह और महि मडल में,

प्याप घा, आग घन, आड क उचरिगे ॥

बादर उतत अग डोलत अनंग भरे,
 उगन कतार दत दीरघ सवार- है ।
 चरसी चमक, तरकत ओ गरज गूज,
 उपै रदन निसि नीर के पनार है ॥
 सोमनाथ प्यारे नद नद के बिरह जानि,
 बज में कुमगन सरोर हनकारे है ।
 आए घन भारे म विगार उर धारे अरी ।
 सारे रग बारे प मतग मतगार है ॥

गमलीन

(रम प्रबोध से)

चित चाहत अलि अ ग नुर लहि दीपन परिमान ।
लै लै चनम पतग का मदा रागिये प्रान ॥

नेन चहै मुख दाखिय मन सों कसू दुगइ ।
मन चाहत हग मदि क लीने हिये लगाइ ॥

गिरचा भिय तन में रही कमला हरि हिय पाय ।
तू तन हरि पिय हिय बसा हिय हरि प्रानन चाय ॥

मुख ममि निरखि चरोग अरु तन-पानिप लखि भीन ।
पद पवन दखत भर, होत नयन रस लीन ॥

मोतिन मुख निरि-कमल भो पिय चख भये चकोर ।
गुनन मग सागर भये लखि दुलहिन मुख ओर ॥

जय ते आई तटित लौ नीलार में कीधि ।
तर त हरि चहत भये लगी चरनि चरु कीधि ॥

माहन लखि यह सनन त हूँ उदास निन रात ।
उमटति हसति जकति डरति विगचति रिलखि रिसाने ॥

यौ जाला जोवन मलक मलकति उर में आई ।
ज्यौ प्रगटत मन को उचन निन पुतगिन दरसाइ ॥

तिय सैमर-जोवन मिले भेद न जान्या जात ।
प्रान समै निरि दौस के दोउ भाय दरसात ॥

ज्यौ नय-तिनि चाडति बला जोवन समि अधिकात ।
त्यौ मिमुना निरि तिमिर घट छपि कर ठेलनि जात ॥

सखी गुनति जौ तिय गुनन रुच तकि निहसि लजात ।
मानहु कमल कलीन बिच अली निहसि रहि जात ॥

पिय चितवत तिय मुरि गई कुल हित पट भुग लाइ ।
अमी चकोरन के पियत घन लीनो समि छाइ ॥

दीपक लौं झाँपति हुती ललन होति यह बात ।
ताहि चलत अर फूल लो भिगसन लाग्यो गात ॥

कहैं टगे कतहूँ सगे अति सगबगे सनह ।
लाज-पगे दग रगमगे जगे कौन के रोह ॥

तुम अवसेरत मो दगन गई नीद जु हिराद ।
साइ लाल लगी मनो दगन तिहरे आइ ॥

लाल एक दग अग्नि ते जाति दियो सिव मैन ।
करि ल्याये मो दहा को तुम दूँ पकर नैन ॥

राधा तन फूलन मिलो पातन हरि को गात ।
नूपुर धुनि राग धुनि मिली भले बने सब सात ॥

नै चकोरन चद्रिका प्यारो आजु निसक ।
आस-बास आरत नरत लीने बीच सतरु ॥

पिय के रग भये रिना मिलन होत नहि वाम ।
याते तू रँग स्याम हूँ मिलन चली है स्याम ॥

अ ग झपावति सुरति सा चली जाति यो नारि ।
सोलति बिजुछटा चितै डाँपति घटा निहारि ॥

रोते-बसन जुत जाह मैं यौ तिय दुति दरसा ।
मनो चना छीरधि सुता छीर सिंधु मैं जाइ ॥

पिय विननी करि पिरि गये सा क्लेश सरसा ।
तिय भुग अ चुज तै निकसि मधुप गीति दुरिजाइ ॥

राम नन फरकन भया वामा आनद आद ।
 गिनि उग्रनि सिनि मुदति है रादर धूप सुभाद ॥
 लाचरती परदस तै पिय आया मुधि पाद ।
 निसि-दिन मधु के कमल लौ विकमत सकुचत चाइ ॥
 र्हौ गय वे चलद न नित उटि चारत जाद ।
 गाड मलार बुलाइए तऊ न परत लसाइ ॥

कविद उदयनाथ

तिय तन अरुन दिनेस उदयौ है आनि
 सौंभ सिमुताई के निमिर सत्र भागे हैं ।
 फेलि रही अरु में चहुँ ओर अरुनाई,
 फूले नैन कज मकरंद रस-पागे है ।
 उदयनाथ कत के मनोरथ हू पयै चले,
 चित चतुराई तजि आरस को जागे है ।
 रूप क सरार में नाह-नैन हान लाग,
 सौतिन के मान तेऊ दान होन लागे ह ॥

चद सौ उदन, चद्रिका सी चारु सेत सारी,
 तैलिए गुराइ गसी उरज उतग सी ।
 हरि क हिए नौ हार हारिनी हरिनैनी,
 हेरै हिए हरये सती त्यों सेन मग की ।
 भनत कविद सोहै वासरु नयेनी नारि,
 बाढी चित चाह, जाक आगम उमग की ।
 जगर मगर बेंटी सेज पे नगर बाल,
 आली लाल माहिने को जाला ज्यों अनंग सी ।

अरसांहे नन करि, सरसौहै मुस-रुति,
 त्यों त्यों अकुलाति ज्यों ज्या हात आली प्रात री ।
 दाऊ व परसपर पीयत अधर नस
 चूमि चूमि चटकीलौ मुरा-जन्तनात री ।
 भनत कविद भरि भरि अक ह्वै निसरु,
 नेह-भरे फिरि फिरि दोऊ पतरात री ।
 विगुन करत दुहँ के गात ही तें दुवौ—
 लपटि-लपटि जान, नैकु न अधान री ॥

गहरी गराइ त प्रथम चूर चामीकर, गीथो है ।
 चपक के उपरि उर्गर पाम उस करि,
 तीमरे अरिल अरविंद आभा उस करि,
 हसै छड़िता सो हाट तो पद में ता यो है ।
 मनन कविद तेरे मान समै सौते कहा,
 सुर-वनितान को गुमान जान लाप्यो है ।
 'गाली' आज मेरे चानि ते ठ भरो मुस—
 भौहैं तान, सौहैं री, रुजानिधि पे कोप्यो है ॥

गुजरत भौन के पुजक निकुचन तै,
 आप ही, भयो है रुम आवत ओ जान सौ ।
 झॉरिन त उलटी ललाइ परे आलस सी,
 अगन तै उँमगै वके-लौ अगगत कौ ।
 मनत कविद घाम धीपम दुपहरी सौ,
 तीखन लग्यो है तन परिमित बात सौ ।
 ५रुज के पातन की पौन करौ प्रानप्यारे,
 पौदो परचक पै, पसीना मिट गान कौ ।

कैसी ही लगत, जामै लगन लगात तुम,
 प्रेम की पगनि क परेसे हिण कमक ।
 केतिनी छिपाइ के उपाय उपजा प्यारे,
 तुम तै मिलाप के यद्दाण चोप चमक ।
 मनत कविद हमै कुच में चलाए करि,
 बसै कित चाय दुल दर अरुम क ।
 पगन में छाले परे नाधिने को नाल परे
 तऊ लाल ! लाले पर, राउरे दरस के ॥

राजे रसमै री तैमो वरपा समै न चंडी
 चंचला नचै री चकचौषा कौधा नारै री

वनी व्रत हार हिए परत फहारें,
 कवु छोरे कवु धार जलधर जलधारें री ।
 भनत कनिद वृजभौन पौन सौरभ सो,
 काक न कपाय प्रान परहथ पारै री ।
 काम कटुका से फूल डोलि डालि डारें,
 मन औरै किग डार ये कदवन की डारै री ॥

दाम

वरुँ दास दया वह गानी सदा,
 नि आनन फौल तु बैठी लसे
 महिमा जग झाड़ न्यो रस मी,
 तन पोषक नाम घरुँ छै रमे
 जग चाके प्रसाद लता पर शौन,
 ससी पर पङ्क-पत्र वसे ।
 मरि भाँति अनेकन यो रचना,
 नो विरचिहु की रचना को हँमे ॥

है रति को मुखदायक मोहन,
 यो मर्राहत कुडल साजे ।
 चित्रित फूलन को घनुमान,
 तन्यो गुन भौरकी पाँति को भ्राजे ।
 सुभ्र स्वरूपन में गनौ एक,
 निरेक हनै तिय सेन समाजे ।
 दास जू आज बने व्रत में,
 वचरात सन्ह अदेह निराजे ॥

ससि वामै जगै छनजोति छुटा,
 त पीट पटा दिन रैन मडो ।
 वह नीर कहँ बरसै सरसै,
 यह तो रस-जाल सदाही अडो ।
 यह सेत नै जातो अपानिप नै
 एहि रग अनौलिक रूप गडो ।
 कह दास वरानरि कौन करै,
 घन सो नस्याम सो रीच बडो ॥

आन म मुसुफानि सुहावनि,
 वसता नैनह मौंभ छई है ।
 बैन खुल मुकुले उरनात,
 जन्पी विथकी गति टोनि छई है ।
 दास प्रभा उन्दले सन अग
 सुरग सुनासता फैन गई है ।
 चन्मुखी तन पाइ नबीनो,
 मइ तरुनाई अनद मइ है ॥

आनन है अरविद न फूले,
 अतीगन मूले कहा मडरात हो ।
 कीर तुम्हे कहा गाय लगी,
 अम बिम्ब के आठन को ललचात हो ।
 दाम जू ब्याली न घेनी उनाउ है,
 पापी कलापी कहा इतरात हो ।
 बालती पाल न बाजती बीन,
 कहा सिगरे मृग घेरत जात हो ॥

कन क सम्पुट है ये रणे,
 हिय मै गडिजात ज्यो कुत की वोर है ।
 मेरु हैं पे हरि हाथ में आगत
 चक्रवती पे बडेई कठोर हैं ।
 भावती तेरे उरोजनि मे गुन—
 दास लख्यो सन अरेई और है ।
 सभु हैं पे उपजावे मनोज,
 सुटत है पे पर तित के चोर है ॥

भारी भूत चर्ततान मानवी न हाइ ऐसी,
 देवी दानवीन हूँ सो न्यागे एक डीर ॥

या विधि की बनिता जो विधना बनायो चहै,
 दास तौ समुन्धिय प्रकासै निव नीरई ।
 कैमे लिसे चित्र को चितेरो चक्किनात लसि,
 दिन दवेक नीने दुति औरै और नीरई ।
 आन भोर औरइ पहर हात औरइ है,
 दुपहर औरई रतनि होत औरइ ॥

आगन आइयो आली कथा
 भजि सामुहें तें गड ओट में प्यारी ।
 गफहि एटी महारर टें श्रम,
 त दुहुँ पैली सरि अरनारी ।
 राम न जाने धौ कोत है दीवा,
 चिते दुहुँ पायन नाइनि हारी ।
 भाव रथो अरी दाहिन है,
 मोहि जानि परें पग बाम है भारी ॥

भारना आवतो जानि नवेली,
 चमेली के कुज जा बठन जाइ कै ।
 दाप प्रसूनन सोनजुही करे,
 कंचन सी तन जाति मिलाइ कै ।
 चौकि मनोरथ ह हँसि लेन,
 चलै पगु लाल प्रभा महि छाइ कै ।
 नीर करे कग्गीर भरै
 निरसै हरखे बधि आपनि पाड वै

पना सग पना है प्रसामत छनरु,
 लै वनक रग पुनि पै मुरगन पलत है ।
 अघर ललार् लावै लाल की ललक पाये,
 अलक मलरु भरकत सो हलत है ।

उदो अरुनीहैं पीत पाटल हरीहैं ई के,
 दुति ले दुहँधा दास नेनन छनत है ।
 समरथ नीके बहुरूपिया लो थानही में,
 मोती नथुनी के धर नानो बदलत है ॥

आरसी फी आँगन मुहायो मनभाया,
 नहरन में भरायो जल उज्ज्वल सुमन माल ।
 चोंदनी विचित्र लरि चोंदनी विद्धौने पर,
 दूरि के सहेलिन को मिलसे अकेली बाल ।
 दास आस पास बहु गाँतिन बिराजे धरे,
 पना पुतराज मोती मानिक पदिक लाल ।
 चन्द्र प्रतिविम्ब तें न धारो होत मुख, औ न
 तारे प्रतिविम्बत तें चारो होत नगजात्र ॥

बाते स्यामा स्याम की न केसी अब आली,
 स्याम स्यामा तकि भाजे स्यामा स्याम सों जकी रहै ।
 अब ता लखोई करै स्यामा को उदन स्याम,
 स्याम के उदन लागी स्यामा की टकी रहै ।
 दास अब स्यामा के सुभाय मद छाके स्याम,
 स्यामा स्याम साभन के आसन छकी रहै ।
 स्यामा के बिलोचन के हैं री स्याम तारे अरु,
 स्यामा स्याम लोचन की लोहित लकीर है ॥

कान सिंगार है मोरपरा यह,
 लाल छुटे कच काँति की जोटी ।
 गुज क माल कहा यह तो,
 अनुराग गरे परयो ले निज खोटी ।
 दास बड़ी बड़ी बातें कहा कगे,
 आपने अग की दरयो खोटी ।

जाना नहीं यह कचन स,
तिय के तन रु कासिये की रुमाटी ।

ननन मे तरसैय कहाँ लौ,
रुहौ लौ हिये निरहागि में तैये ।
एक घरी न कहूँ कचन पैये
कहाँ लागि प्रानन की कलपैये ।
गरे यही अब जी में निचार,
सररी चल सौतिहूँ के घर जैये ।
मान घट त कहा घटिहै जु पै,
प्रानपियारे कौ देखन पैये ॥

चद चदि दसै चारु आनन प्ररीन
गति लीन होत माते गजराजनि को छिलि छिलि ।
गारिधर धारन तै चारन पे है रहै,
पयोधरन छवे रहै पहारनि को पिलि-पिलि ।
दइ निरदइ दास दीहा है विदेस तऊ
करौ न अँदेस तुव ध्यान ही में हिलि हिलि ।
एक दुस तेर ही दुसारी न तु प्रानप्यारी,
मेरो मन तोसो नित आवत है मिलि मिलि ॥

गार अध्यारनि में भटकयो सु,
निकारयो में नीठि सु बुद्धिनि सो धिरि ।
बूडत आनन पानिप - नीर,
पटीर की आड सो तीर लग्यो तिरि ।
मा मन बारो योही हुत्यो,
अधरा-मधु पानके मूठ छरयो फिरि ।
दास मनै अन कैसे कटे,
नन चाह सौ टोटी की गण्ड ॥

भाल में राम के हों के बली,
 विधो बाँकी भुँ परुनीन में आइ नै ।
 हों के अचेत कपोलन छवे,
 बिल्लुरे अधरा को सुधा मियो धाइ नै ।
 दास मू हास छटा मन चोकि,
 धरीक लौ ठोढी के नीच तिकाइ नै ।
 जाइ उरोज सिरै चढि कृपा,
 गयो कटि सों निपली में नहाइ कै ॥

देखे दुरजन सग गुरुजन-संक्नि सा,
 हियो अकुनात दग होत । तुखिन है ।
 अनदेखे ह ते मुमुकानि बतरानि मृदु
 गानिणे तिहागे दुखदानि विमुसित हैं ।
 दास धनि ते हैं जे वियोग ही में दुख पायें,
 देखे प्राण पीके होति जिय में मुसित हैं ।
 हमें तो तिहारे नेह एकहू न सुस लाहु
 देखेह दुखित अनदेखेह दुखित हैं ॥

अंसिया हमारी दर्भारी सुधि दुधि हारी,
 भाह ते नियारी दास गहैं सब माल में ।
 कौन गहै ज्ञान काहि मापत सयाने कौन
 लोक ओरु जानै ये नहीं हैं निज माल में ।
 प्रेम पगि रहाँ महामोह में उमगि रहा,
 ठीरु टगि रहीं लागे रहीं बनमाल में ।
 लाज का अचे क कुल धरम पचे के,
 बिभा-बधन सचै के भई मगन गोपाल में ॥

मिस सोइचो लाल को पाति सही
 हरुण उठि मोन महो धरि के ।

पट टारि रसीलो निहारि रही,
 मुख की रुचि को रुचि की करि कै ।
 पुलकावलि देखि कपोलन में,
 खिसिआई लजाई मुर अरि कै ।
 लसि प्यारे विनोद सो गोद गह्यो,
 उमहो मुख-मोद हिया भागि कै ॥

चद में ओप अनूप उठ लगी,
 रागन की उमटी अधिकाए ।
 साती कलिन्दजा की कछु हाति हे
 कोकन रु दरम्यान लसाए ।
 दास जू कैसी चमेली मिलै लगी,
 फेली सुगासहु की रचिराए ।
 म्वजन कानन आर चले,
 अलोकत ही हरि माँक मोहाए ॥

जेहि मोहिब राज भिगार सज्या,
 तेहि दरसन मोह में आय गट ।
 न चितौनि चलाय मकी,
 उनहीं की चितौनि के भाय अधाय गट ।
 बृषभानल ली की दसा यह दास जू
 देन ठगौरी ठगाय गट ।
 बरसाने गई दधि उचन का,
 तहँ आपुहि आपु चिकाय गट ॥

नन रहै जल कञ्जन् युत
 पी अधरामृत की अम्नाइ ।
 दास गड मुधि-बुद्धि हरी,
 लास केसरिया पट साभ सोहाइ ।

कौन अचम्भो कहें अनुरागा,
 भया हियरो जम उज्जलताई ।
 सोंवर रावर नेह पग ही,
 परी तिय अगन म पियराइ ॥

हुती याग में खेत प्रसून अली,
 मनमोहनऊ तहें आइ परया ।
 मनभायो घराऊ भयो पुनि गेह,
 चनाइन म मन जाइ परया ।
 द्रन दारि गइ गृह दास
 तहाँ न बनाइवे नमु उपाइ परयो ।
 धक स्वद उसास सरोटन का,
 वधु भेद न काह लराइ परय

जाति हो जी गोकुल गापाल हू पे जैयो नमु,
 आपनी जो चेरी मोहि जानती तू सही है ।
 पाय परि आपुही सी भूभियो कुशल छेम,
 मा पे निच ओर ते न जात कछु कही है ।
 दासजू बसत हू के आगमन आयो तो ।,
 तिनसो सेंदसह की यात रुहा रही है ।
 एता ससी कीनी यह अम्ब नीर दीनी,
 अरु कहिनी वा अमरेया राम राम कही है ॥

तरी रीझने की रुचि रीझ मनमोहन की,
 यातै वहै स्वाँग सजि-सजि नित आपने ।
 आपही तै कुकुम की छाप नराछन गात,
 अजन अधर भासु चारक लगात ।
 स्या ज्या त अयानी अनरानी दरसावै त्या त्यो ।
 म्याम इन आपने लह को सुस पावन ।

उहें तिसिआरै दास हास जो मुनारै तुम्है,
गाह मन-भावनै हमार मन भावने ॥

लाल ये लोचन काह प्रिया हूँ,
दिये हूँ हूँ मोहन-रग मर्चाटी ।
मात उटी है जु बेटी अरोनि नी,
सीठी क्यों ताले मिलाइ ल्यो मीठी ।
चुरि कही किमि चूरति सा,
जिहें लागी रहै उपदेस उसीटी ।
भूठी सरे तुम मोंचे लला,
यह भूटा तिहारउ पाग नी चीठी ॥

लाहू कहा रर रेनी दिये,
औ कहा है तराना के गहु गटाय ।
रंकन पीठि हिये ससिरस की,
रात रने बाल माहि बताये ।
दास कहा गुन ओठ मं अवन,
भाल में नावक लीक लगाय ।
काह सुभायडी रूभत ही मं
कहा फल नेन ह पान खराये

फूलन के सँग फूलि है रोम-
परागन के सँग लाज उटाइहै ।
पल्लव पुज के सग अली
हियरो अनुराग के रग रगाइ है ।
आया रमत न कत हितु,
अब भीर बदोगी जो धीर धराहै ।
साय तरून के पातन रु,
तरुनीन को सोप निपात है जाइहै ॥

नरै हास बेसन ज्या सुन्दर सुकसन लौ ,
 छीनि छवि ली ही दास चपला घनन की ।
 जानि कै कलापी की कुचाली तै मिलापी मोहि,
 लागे बैर लेन क्रोध मटन मनन की ।
 कहिया सँदेसो चन्द्रवदनी सो चद्रावलि,
 अजहँ मिलै ती बात जानिये वनन की ।
 ता त्रिनु बिलोके खीन बलहीन भाजै सब
 बरपा समाजै ये इलाजै मोहनन की ॥

अबता त्रिहारी के वे बानक गये री ,
 तेरी तनदुति केसरि को नैन कसमीर भो ।
 श्रीन तुव बानो स्वातिबुदन को चातक मो,
 स्वासन को मारिबो द्रुपदजा को चीर भा ।
 हिय का हरप मरु धरनि को नीर भो री,
 जियरो मदन तोर-गन को तुगीर भो ।
 परी बेगि करिके मिलाप थिर थापु नतु,
 आप अब चाहत अतन को सरीर भो ॥

काह कव्यो आय कंमराय के मिलाइबे को,
 लेन आयो काह कीऊ मथुरा अलग तै ।
 त्योंही कव्यो आली सो तो गयो वह अश्र, देव,
 मिलै हम कहाँ ऐसो मूढ विन ढंग तै ।
 दास कहै ता समै सोहागिन को कर भयो,
 बलयाबिगत दुहँ बातन प्रसंग तै ।
 आधिक दरकि गई विरह की क्षामता तै,
 आधिक तरिक गई आनद-उमग तै ॥

जानि-जानि आयो प्यारा प्रीतम विहार भूमि,
 मानि मानि मंगल सिगारन सिगारती ।

दाम दम-तेरन को द्वारन में तानि-तानि,
 द्यानि-द्वानि फूले-मूले सेर्जाह मवारन ॥
 व्यान ही में आनि आनि पीको गहि पानि-पानि,
 तेचि पट तानि-तानि मैद-भद गारती ॥
 प्रेम-गुन गानि गानि अमृतन सानि-सानि,
 चानि-वानि स्वानि-स्वानि वेदन विचारनी ॥

तोप

(सुवानिधि)

नैगनि ह्ये अतिकु डल छरे,
रल रुठनि ह्ये भुन मूलनि धावत ।
गु न मी माल ते, काळनी ते,
कहि ताप सुपायन में मुख पावत ।
मा मन मोहन रु तन में,
मन में मिनतान की फेरी लगावत ।
पावरी ते चढि पाग लो जात,
ओ पाग ते पावरी लो फिरि आवत ।

ते घनि ताप जा मोहन का,
मरचंग धरै धरि घीर लोगाई ।
मे नख ते सिम लो भरि माव,
रुचो इनते सरि दख न पाइ ।
जानहि अग परे पहिले,
नरै ट तिनसो अंसियाँ दुरत हाइ ।
मे जकि जाति तकी लागि जाति
दाऊ अंसियाँ थकि जाति बनाइ ॥

ठे पग दत छमद भइ
गति मद गयद की हाति हे पाछे ।
उननि म रस चै निरुसे,
रुहि ताप हेसे मुमसाहट काछे ।
दीपति दह मनोच रियो,
गुमनोट रा दीप र्यो राजत आछे ।

ज्यो ज्यो लसे हरिनाचन ते तिय
ज्यो यो सरी निगड्यानि मडुण्डे ॥

लोचन लोल लमे अमुनाकन,
जाइ सो धाँ मों चाँ पुकार ।
या गतिया ते भइ द्रुतिया मह
पार नहीं, प लग अति भार ।
उतर ताहि दिया सहि ताप
सा गनि उस्थो मनमाद नगार ।
तेँ जनि नेकू डगाइ इहै
बलि पार तहैग विलाकनवार ॥

लाव विलासन दति नहीं,
गनिराव विलासनही रे दइ मनि ।
लाव कहै मित्रिय रे करौ,
रतिराव रहै हित सो अमलिय पति ।
लाजहु की रतिरावहुँ की सहि,
ताप नहीं सहि जानि सजू गति ।
लाल तिहागिये सोह कहौ,
वह गाल भइ है दुगाज की रयति ॥

भोग गहै अलख अहि क भम
वालत मोखिल सार मचावे ।
शक ते कीर मुगत मरे
कहि तोप छपाइ रे मोहि छयावे
रालत जा घनरु जनि सो हरि
घरि हम रग पुत्र
माती की माल मगल चुगै,
मरतचन्द सो चौच बरुगै

आनन पखि कलकित भो ससि,
 मा दग दखि मृगी वन लीनी ।
 कोकिल स्याम भये बतिया सुनि,
 देनी चिते विप ब्यालिनी गीनी ।
 मुन्दनऊ दुति देखि तजै,
 उर लागति तोप दया परबीनी ।
 हौ पछिताति हहा सजनी,
 गचि मोहि कहा विधि पापिनि कीनी ॥

जाइ तमाल लतानि क अजर
 पीहित चचल के दग फेरे ।
 जैसी भइ कहि तोप महा छवि,
 तैसी कहा उपमा कवि हरे ।
 संजन मीन मृगा से कहू,
 कहु कजन भोर चकोर सेंधेरे ।
 एक त होत अनेक भट्ट
 करै केते सरूप बिलोचन तरै ॥

घाँघरो सिरिष मुसुरूका सो हरित रग
 अगियाँ उरोज ओज हीरन के हार को ।
 मिर सा अ हाइ छवि छाइ ठाढी चौकी पर,
 चेत ना रहत चितउत नोम्पीदार को ।
 कवि ताप कहै मुख मोराते मुरकि नेकु,
 प्यारी चित चोरति निचारति है नार का ।
 जान्यो प्रेम ससि को प्रकार नरि तारयो बेर,
 मानो कंज पकरि मरोर्यौ अधकार का ॥

हीरा है दसन अरु विद्रुम अधर तेर,
 नव्य मनि जाहिर गुणति न्यौ नरति ना ।

कहै करितोप कलधीन के कलस कुच,
 हाथ पाव लाल सो छगन क्यों धरति ना ।
 गननि न काहू बुर के गरुड दौलति ना
 तोला है कुमल जौलो पाल न परान ना ।
 एतो बन लीहैं काहें गाफिज फिरत नौरा,
 करति कहा रे सरं चोर सा हरति ना ॥

मोह न पाड सके मुरराज सु,
 हे रतिरान कला मे जमी न ।
 क्या सरि जान्यो मिलेगी हमै,
 कहि तोप सक्यो करि प्रेम रसी तें ।
 मोहि परी मिलिबे की प्रतीति,
 वही दिन ते मन माँह जमी न ।
 सील सो गीली पगे अँखियाँ
 ललित ढीली चिनीनि चिने के हसी तें ॥

चोप की चनुरता की चानुरि चितौनि ताकी
 रीकिये रिम्माइये की रचि जो चहत है ।
 बैयन की नैन की सैन की की मुमीलता की
 भूपन सिंगार अग-अग जो गहत है ।
 कहै करि तोप मा ती को तोप पाये मुनि,
 पीकी बेन रैनि निन सखियाँ कहत है ।
 प्यारी निज धौननि जो नैन करि माथी,
 मानो प्यारे को स्वरूप सदा देखत रहत है ॥

काहर की छवि दखिये को,
 यह गोपकुमारि महाद्वि ' ।
 सीस धरे मटुकी लट छूटी,
 छत्रे दधि रचन के

नलला का लस्यो कहि तोप,
 हिये उनमाद दस अधिरारै ।
 भूलि गया दधि नाम सो रामहि
 लेहु रे लहु र माई कहाइ ॥

य अहागर तासो जारि कर कोरि कोरि,
 बिनय सुनाऊँ बलि बॉसुरी रचारै जिनि ।
 रॉसुरी बजारै तो रचारै मो उलाइ जानै,
 उटे उटे नैननि ते मोहि टरु लावे जिनि ।
 लारै है तो लाउ टरु तोप मामो काच रुहा,
 परिनाम मेरी पेरि दौरि दौरि आरै चिनि ।
 आरै है ता आउ हम आइयो कबूलै,
 पर मेर गोरै गात मे असित गात लारै जिनि ॥

टाकत को पट ? हौ वनस्याम
 तौ दामिनि को तुम जाइ निहारो ।
 आली, हूँ मै बनमाली, सरै
 कहूँ बेचिय फूलन को रचि हारो ।
 बसीधरें हम ता भ्रस मारिये
 हौ हरि, तौ बन रुज सिभारो ।
 सालहि दहु सिम्भारत वयो
 कहि तोप मै फाहर दास तिहारो ॥

भारक श्रीवृषभान नधू,
 गहि फाह को मासन चार कै ल्याइ ।
 औपनि पौडि रुयो जमुदा
 तुम नेनौ लिथी जननी बलि पाई ।
 दौरि गह्या कृप राधिका को
 इतनो लिया हम नन्द दाहाइ ।

कहै तोप ज्यो ज्यो राग्धिग को निहारै दार,
 मार के प्रकार ते पुकारती हेरायो सीउ ।
 ज्यो ज्यो पीउ-पीउ करै पानकी पपीहा त्यों त्यों,
 तीय ताहि वृष्ति किनै है रे किनै हं पीउ ॥

तीखी सिखी मर सी फिरिचै करि,
 मोहि हने फिरि पे पदितैह ।
 लालच जान अपान यहै,
 यहि को मन आनि हमे मिल जेहै ।
 उद करै कहि तोप महा,
 मतिमद र चद न देखन पैहै ।
 मो मन जो तन छोडिहै तौ,
 नैदनंद क आनन चद समैहै ॥

पीरो करै दिन रैन सुधाकर,
 भूस तृपा न सताइ सकै जू ।
 अक सा अक लगाये रहै,
 गुर लोग की सक न आइ सकै जू ।
 तोष करौ तन न्यागद होत,
 नहा त कहँ अर जाइ सकै जू ।
 सोचो मयाग त्रियोगही में,
 हम ऊधौ विभूति न लाइ सकै जू ॥

होत नयो नहि, आयो चल्यो,
रँग सोंवरे गोरे को सग सदा ते ॥

हार सवारि अनेकन फूल के,
ल्याइ ली मालिनि भौन भरे में ।
काहू को श्वेत दियो वहि,
काहूको पीरो दियो रघुनाथ अरे म ।
नीरज नील का लै कर में कहा
राधे सो यो चतुराइ भरे में ।
लीजिये हेत तिहारे में ल्याई हौ,
या रग को लगे प्यारो गरे में ॥

पायी ही जानरु एक में दैन,
सो आइ गये रघनाथ सुभाइनि ।
वेगि दुरी, जय जात रहे,
तब आइके बैठी दवैवे का चाइनि ।
दीहै हे कौन में दीवैहै कौन-सो,
दरयो की दरि जकी यह नाइनि ।
बोझिल सो यह पाँउ लगै,
तब यो मुसन्थाद कहा टमुराणि ॥

आपने हाथनि सो करतार,
करे अतिही जग रीच उज्यार ।
दखत ही रहिअरे रघनाथ,
जुदे नहि रीज लगे अति प्यार ।
सौरभ सो परिपूरण पुष्ट,
पनिश्र भर रस आनद धार ।
धारि बिना उपज अति मुन्दर,
प्यारी के लो मन-वाग्जियार ॥

फरकन लागी आँख डरकन कानन नौ
 हरकन लागी लाज पलकें सुधेनी सी ।
 भार लाग्यो परन उरोजन में रघुनाथ,
 रात्री रोमराजी भौंति कन अलिसेनी की ।
 कटि लागी घटन, पटन लागी मुख सोभा,
 अटन सुगस आसपास खस पेनी की ।
 अगनि में टुति चारु सोने की जगन लागी,
 एडिन लगन लागी वैनी मृगनेनी की ॥

अलवै विसाल है कै बँक लहरान लागी,
 लक तै परान लागी टुतियन जाल सी ।
 लानी महरेटी के अधर सरसान लागी
 अधरन वान लागी बतिया रसान की ।
 रघुनाथ छाती कुच रुचि दरसान लागी,
 छाती छहरान लागी छरि मनि मान की ।
 रीक्ति अँखिआन लागी आसै बडि कान लागी,
 कानन सोहान लागी चरचा गोपाल की ॥

देखि सी देखि ये ग्वालि गँवारिन,
 नैक नहीं थिरता गहती है ।
 आनँद सौ रघुनाथ पगी,
 पग रगन सौ फिरती रहती है ।
 छोर सौ छोर तरौना को छरे करि
 ऐसी बटी छवि को लहती है ।
 जोवन आइने की महिमा,
 अँसिया मनो कानन सौ कहती है ॥

आजु हरि पकरि कदम की ललित डार
 सडे यमुना पे कलानिधि ऐसे वे रहे ।

रघुनाथ हाइवे को अलिन क साथ आर्द,
 वृपभान लली पथ सौरभ सौ म्वे रहे ।
 देखा-देखी होत भयो कीतुरु उदोत भट्ट,
 राधे के नयन के ऐसी भौंति घरी हँ रहे ।
 कनन से हँ कै फेरि सजन स हँ कै
 फेरि मोन ऐसे हँ कै री चकोर ऐसे हँ रहे ॥

नित बोल अमीरस पान करै,
 यह कान की वान दुभावे री को ।
 शुभ अ ग सुगध जो सँघति नारु,
 सो सँघनि ऐसे बुभावे री को ।
 रघुनाथ लग्यो मन पाइनि रीभि,
 उचाटन सीभि सुभावे री को ।
 अनियारी गोपाल की अँसिन ते,
 उरभी अस्मिया सुरभावे री को ॥

मैं तुम सो कहे रासति हौ
 रघुनाथ लखो हित के अनगाहे ।
 प्यारी अनूप दसा तन की,
 भइ है अति नेह को पथ निगाहे ।
 दसत ही उठि टाढ़े भये,
 बलि मोसो दुरासति हौ अत्र काहे ।
 लागन को पिय के हिय सौ
 पहले तन ते इन रोमन चाहे ॥

बहा जहाँ सुने तहाँ तहाँ को पटावै मोहि,
 दरि आई अत्र धौ सो रूप कैसी धरै है ।
 गति आइ जहाँ तहाँ फूलि फूलि भूलि भूलि
 बूझति नरु ऐसे नित नेम करै है ।

कहा कही तोहि कहि आई जो तू हरि कथा,
 रघुनाथ मोहि ये अँदेसे आनि अरे है ।
 आँसिन पगे आनि जो तौ कौन दसा है है,
 कान परे प्राण रासिन के लाने परे है ॥

जो मुनि कै धुनि ऐसी मई,
 तौ तू काहे को और उपाद को धारे ।
 न कहीं जो करि सो, रघुनाथ की सौह,
 तिया यह तू सुख पावे ।
 माँप डने मैं जो फेरि डसे,
 उतरे निष प्रान शरोर में आवे ।
 ताने सखी कहि मोहन सो,
 ओहि टेर सो वाँसुरी फेर जावे ॥

हो अभिलाप भरो प्रति ही,
 नित चाहे सनाथ भयो तनरो वै ।
 आनि मिल्यो बड भागनि सो,
 रघुनाथ मने सोड आनँ को धै ।
 हेरत ही हरि को उमयो,
 गति पाद की मई गोमनि से म्ये ।
 नेह मट्ट जिउ के मन को,
 मूलको हिय पे तल को स्मिनरो छै ॥

मणभय भूपण पहिरि नरसित प्यारी
 बँटी पीठि पाछै आमरो के परयक को ।
 कदै रघुनाथ किय प्यारे की बिलोक गैल,
 ही में कद्व-कद्वू गेल सौतिहि क सक को ।
 तानिने को निशि दिशि ऊरघ का दग्यो ज्योहि,
 त्योहि फल्या आनन प्रकाश ने अद का ।

भौर लौ उटत तन रहिगो फलैरु बाकी,
छवि गयो व्योम बीच मडल मयरु को ।

सोरभ सफल डारि सुमन सा गूदे चार,
भूषण भनिन चार माग मुकुतामई ।
हीरन क हीरे हार चदन चढाये चारु,
सुरसरि ता का धार सुरसरिता रई ।
रघुनाथ पियत्रस करिने चली है चाल,
मुख सी मरीचा-जाल दिसि मदि कै लई ।
चात्र चढे चरनि चक्रोरन के चमचौधी,
चद गयो चदि चटकीली चाँदनी मई ॥

सरद सी राका राति राधे को बोलायो माधौ,
देसिके चो सुग सखी पाइ नीकी रिधि को ।
एहो रघुनाथ कहा रुचि की निरसई कहौ,
हाथ लागै मेरे तौ हो चूरो हाथ रिधि को ।
घघट सुलत मुखचोति को पसार होत
है गयो छपान सब बैगुन समिधि को ।
मगमद अक लग्या तितनो हो भाल,
एक रहि गयो तितनो कलक कलानिधि को ॥

चद सा आनन चोदनी सो पट,
तारे सी मोती की माल विभाति सी ।
आँसे कुमोदिनि सी हुलसी,
मनिदीपनि दीपकदानि के जाति सी ।
ह रघुनाथ कहा कहिये,
पिय की तिय पूरन पुन्य विसाति सी ।
आयी जोहाइ के दरिने को,
वनि पून्यो की राति में पून्यो की राति सी ॥

देखिने को घुति पून्यो के चद्रफी
 हे रघुनाथ श्रीराधिका रानी ।
 आइ सोलाइ के चोतरा ऊपर
 टाडी भड, सुख सोरम-सानी ।
 ऐसी गड मिलि जोह सी जोति में,
 रूप की रासि न जानि रखानी ।
 नारन ते क्यू भीहन ते क्यू,
 नैनन की छवि ते पहिचानी ॥

मृगमद लाय मृगमद रग अग कीहे,
 टाँपि नग सिख दीहे सारी श्याम भाँति है ।
 इंदीर कमल के दलकी गरे में माल,
 पहिरे तिसान ना बन्क कही जात है ।
 बेग नगराय लीहे आनन छपाय,
 मति कोई लखि जाय रघुनाथ यो सक्रति है ।
 भावनें सो मिलिबे को ऐसे बनि चली प्यारी,
 मानो देह धारी भारी भादँवकी गति है ॥

रेन चैन लहत में महत बिनोदपागे,
 रघुनाथ दपति ए रहे सुम भरिके ।
 जागे बहु दिनके औसरके हँ बीते पे ये,
 सोये नहि बानी राति गड जब ढरिके ।
 यह जो मूकति हो सो तामो यह हेतु सुनो,
 निहचै हिये में पूरि दूरि भ्रम करिके ।
 भावती की सरती नींद लात्र पाइ द्वारि गड,
 भावते की नींद गई सोति भाव धरिके ।

चौकि तिरीछे चितै मुसक्याइ,
 फिरी पिचकारी लगाइ के अ ग सों ।
 रीक्ति रहे यह भाव चितै,
 अरु भीजि रहे बा रँगीली के रग सों ।

दूल्हा

सागे की सरौटें सब सारी में मिनाय दी ही
 भूपन की जेब जैसे जेब जहियत है ।
 कहे करि दूल्हा छिपाव रद-चंद मुख—
 नेह देखे सोतिन की देह दहियत है ।
 बाला चित्रसाला तें निकरि गुग्जन आगे,
 काहीं चतुराई सो लखार्द लहियत है ।
 सारिका पुकारे 'हम नाही हम नाही', एजू—
 'राम राम' कहो 'नाही' नाही कहियत है ॥

घरी जब चाही तर करी तुम नाही,
 पाँड़ दियो पलिनाही नाही नाही के मुहाड़ हो ।
 बोलत मैं नाही पट लालत मैं नाही,
 कवि दूल्हा उदाही लाख भौतिन लहाई हो ।
 चुग्जन मैं नाही परिरम्जन मैं नाही,
 सब आसन-बिलासन मैं नाही टिक टाँट हो ।
 नेलि गलनाही केलि कीही चित चाही,
 यह हौं तै भली नाही सो कहौं तै सीसि आड़ हो ॥

उरज उरज घसे, बसे उर आडे लसे,
 तिन गुन माल गरे घरे छरि द्वाण हो ।
 नैन कवि दूल्हा है गते, तुनराते बेन,
 देखे सुने सुख के समूह सरसाण हो ।
 चाकरु मी लाल मान, पलकन पीर-लीक,
 प्यारे बजचंद रुचि सूरज सुहाण हो ।
 हांग उरनोद यहि कोद मति घसी ज्ञानु,
 कौन उरनसी उरनमी करि आण हो ॥

बेनी प्रीन

चपक सो तनु नैन सरोज से,
 इन्दुसी आनन जोति सवाई ।
 बि बसे ओठ लमे तिल फूल सी,
 नासिका स्वाम सुगास मुहाई ।
 बाहै मृनाल-सी बेनी प्रीन,
 उरोज उतग नयी छवि छाई ।
 ज्या ज्यो बिलोकिये जू प्रति अगन,
 यो त्यो लगे अति सुदरताइ ॥

राल्हि ही गँदी रवा की सौ में,
 गजमोतिन की पहिरी अति आला ।
 आई रहाँ ते इहाँ पुपराग की,
 सग रई जमुना तट बाला ।
 टाग उतारि म बेनी प्रीन,
 हसे मुनि नैननि नैन जिसाला ।
 गानति ना अँग की बदली,
 सब सों बदला बदली कहे माला ॥

बहि अगा माह ससी कोउ सग न
 खेलति जानन जोति पसारे ।
 पह तो नरला कमला कै मुभाय,
 उतै ते इतै करे कीतुक भारे ।
 टगमाह भरी उचकै अचके गहकै,
 मुज बेनी प्रीन निहारे ।
 एर रजन ते गिरे कदुक गो,
 टग रजननि ते अँसुग भरि दारे ॥

हात सगेर ५४४ पखि,
 मर पिय के मुख की निसि की सुधि ।
 सोहै चहँ दिसि में अवली,
 अवलोकनि मालनि में जु रही रधि ।
 दूमिने को चित चाह सो बेनी प्रवीन,
 उमाह भरी उमगी बुधि ।
 जान बने न तितै कपे गात,
 इतै पर नैननि लात रही गुधि ॥

बेटी तिया गुरु नारिन में
 रति तं रमनीय स्वरूप माहाई ।
 आयो तहाँ मनमोहन त्यो,
 सबरी प्रेम्बियान महा छवि छाई ।
 कैसे लखे पिय बेनी प्रवीन,
 नवीन सनेह सकोच सराई ।
 पीठि दे मानत को सजनी,
 सजनीन को डीठि में डीठि लगाई ॥

बेलिचे के मिस भरी केनिके सदन लैके,
 नवलरधु को चली सुगति करि है ।
 बोलति हँरति मृगनेनी पिक्बेनी तहाँ,
 देग्यो ना प्रवीन बेनी जदुहुल चद है ।
 चुपि रही चहुँधा चितै के चकई सी चकी,
 नैनन में मलक अचल जल बिद है ।
 इकिन यरिन मानो कमल के ऊपर है,
 मुख-मकरद आली अरनी अलिद है ॥

बेटी यह सोच करि सुदरि सकाच भरि,
 कैसे के बिनाकी हरि कगे कौन झलझंद ।

दूधरी गइ है देह कल न परत गेह,
 सहित सनेह तौ लौ बोली या जेठानी नंद ।
 आबु दधि बेचन तू जाइ नंदगाउँ मधि,
 सुनत प्रवीन बेनी उमगो अनदकद ।
 नसि आई कचुकी उरसि आये दोउ कुच,
 गसि आइ बलया सो फसि आय भुजवद ॥

भृकुटी धनु बेसरि मोर मनौ,
 मनि मानिक इद्रधूजितु है ।
 दुति दामिनि कार हरी बन-बेलि,
 घटाघन घघट सो हितु है ।
 उमगो रस बेनीप्रवीन रसाल,
 भ्रपो अथ चाजरु सो चितु है ।
 हित रामरे नौलकिसोर लला,
 अबला भई पावम की रितु है ॥

सरल सिंगार साजि राजिक प्रवीन बनी,
 आगमन जानि पिय प्रेम प्रतिपालिका ।
 दमकत रदन मदन की उमग अग,
 कलि क सदन बैठी बदन निलासिका ।
 नग जगमगत जगत जोति जोवन की,
 सारी जरतारी अग कैमी सग आलिका ।
 भलक मलक भलकति भौंइ भौंभरीग,
 मानौ मनिमहल समानी दीप-मालिका ॥

टाड भये आनि दिग विहसि प्रवीन बनी,
 दरिने को आतुर बदन नंदलाल है ।
 कीह मनुहार मुरि पीनम त्या बीरी जघ

डारिया की चादरि सौ भ्रौंपिति पहुँचन ली,
 एसी ततकाल कर कपनि निसाल है ।
 नौ की लहरि मानौ थहरि छहरि रही,
 लागत समीर बीच कमल सनाल है ॥

आँ रति मदिर ते रति ले रसीली अति,
 नि ते रसीली अनि उपमा अपग है ।
 मद्-मन्द गति में मरू के मग पग परे,
 उमँगी प्रीन वेनी उर में उमग है ।
 कथत रदन छवि वदन कटै न वेन,
 मदन छकार छार छवि की उनग है ।
 सागी जरतारी मृगमदन अतर नूटी,
 पीक नूटी पलरु प्रसेद नूड अग है ॥

भठिके साइ रहे अगना पिय,
 चौपारि चुकि निया गहरानी ।
 सागत बदन बेदी दइ गुँदि,
 रनी प्रीन सखी बहरानी ।
 भारही आये उडे अनसात बै,
 आरमी सामुहें ले टहरानी ।
 काह कइ समुचे मुसकाय,
 हसी लरि मदिर में महरानी ॥

घेरी अँघेरी बनी बदरी अब,
 आनन चाहत है अति पाना ।
 पौन की ऐसी भ्रकार चली मग
 हँ है रि गे कहुँ छपर
 प्रान ले धाइ निकुज, अली,
 ते भली भई साइ ग ५

बोध

(इदकनामा)

अति छीन मृनाल के तारहु ते,
तेहि ऊपर पाव दे आवनो है।
सुई बेह ते द्वार सकी न तहा,
परतीति को टापो लदावनो है।
कवि बोधा अनी घनी नेजहूँ ते,
चढि तापे न चित्त डरावनो है।
यह प्रेम को पथ कराल महा,
तरवार की धार पे घावनो है।

लोक की लाज औ सोच प्रलोक को,
वारिये प्रीति के ऊपर दोऊ।
गाँव को गेह को देह को नातो,
स्नेह में हातो करै पुनि सोऊ।
बोधा सुनीति निग्राह करै
धर ऊपर जाके नही सिर होऊ।
लोक की भीति डेरात जो मीत,
तो प्रीत के पैडे परै जनि कोऊ ॥

यह प्रेम को पथ हलाहल है,
सु तो वेद पुरानउ गावन है।
पुनि आसिन देखी सरोजन ले,
नर संभु के सीस चढावत है।
चरही पर माये चढे हरि के,
फल जोग ते एते न पावत है।
तुम्है नीली लगे ना लगे तौ भले,
हम जान अजान जनानत है ॥

कन्ह मिलियो कन्ह मिलियो,
 यह धारन ही म घरैयो करै ।
 उर ते कनि आएँ गरै ते फिरँ,
 मन को मन हा मै मिरैयो करै ।
 मरि बोधा न चाउ सरी कन्ह,
 नित ही हरवा सो हिरैयो करै ।
 सहते ही उनै कहते न उनै,
 मन ही मन पीर पिरैयो करै ॥

बोधा किमू सो कहा सहिये,
 सो विधा सुनि पूरि रहँ अरगाइ कै ।
 याते भले मुग्य मौन धरै,
 उपचार करै कहँ औसर पाइ कै ।
 तेसो न कोऊ मिल्यो कन्ह,
 जो कहै कछु र च दया उर लाइ कै ।
 आयतु हे मुस लाँ चढि कै,
 फिरि पीर रहै या सरीर समाइ कै ॥

दहिये पिरहानल दाहन सो,
 नित पापन तापन कोँ सहिये ।
 चाहिये सुग्य तौलों रहै दुस्र कै,
 दग वारिये बोधन कै चाहिये ।
 मरि बोधा इते पै हिनू न मिलै,
 मन की मन ही मै पचै रहिये ।
 गहिये मुस मौन भई सो भद,
 अपनी करि माहू सो ना सहिये ॥

तेसीय नाथ घरी बह कौन,
 उगाइ कै बाँसुरी माहन ही हरा ।
 ता दिन ते हौँ जकी सी यसी
 चरचौधी फिरी नहि धीरज ही घरी ।

बाधा न मीत सों प्रीत सखा करि,
 लाज निगोडिनि बधन जी अरौं ।
 प्रेम ते नम कहा निरहे,
 अन तौ यह नेह निबाहिने ही परा ॥

छाडि सखीन का सीत सने,
 बुलकानि निगोडी बहाइवेही है ।
 हौं के लट्ट लपटाइ हिए हरि,
 हाथ त बसी छुटाइवेही है ।
 बाधा जरैलनु के उपहास,
 अगेजुर्क कुजनि जाइवेही है ।
 लाज सों काज कहा बनिह,
 बजराज सों काज बनाइवेही है ॥

छुटि जाइगे चत के नेत सबै,
 जो कछें मुरली अधरा धरि है ।
 मुसनाइ के बाली तो बाट परै
 नरह शिल ला विष सों भरिहै ।
 कनि बाधा तिहारे सयान सने,
 सु तौ सूधेद हेरनि में हरि है ।
 नरह भावते जानि मनै को करै,
 वह जादूगरी बनि के करिहै ॥

कोटिक देखि फिरौं छनि में,
 पै न कोऊ छयै सम वा छधि जुम्है ।
 आंसिन देखी जो बान तिहै निन,
 आगिन सो नाजुनाँ हय धूमै ।
 बोधा मुभान को आनन छाडि,
 न आनन मो मन आनि अरुम्है ।
 जैसे भये लखि सावन के अधरे
 नर को सु हरो हरो सृम्है ॥

दूरि है मूरि अपूरव सो मसि,
 सग्न न कर्हूँ निहारी ।
 आदर बेली नरेली अरे कहु,
 कैसे मिले वर जोग दिवारी ।
 बाधा सुने हे सुभान हितू,
 करि कोटि उपाइ थके उपचारी ।
 पीर हमारी लिलन्दर री
 हम जानत हैं यह जाननहारी ॥

रोधा सुभान हितू मो कही,
 या दिलन्दर की सो सही करि मानन ।
 ता मृगनैनी की चाह चितौनि
 चुगी चित स चित सो पहिचानत ।
 तामो वियोग दइ न दयो तौ
 कही अर केमे में धीरज आनत ।
 जानत हैं सनही समुभाइये,
 भावती के गुन को नहि जानत ॥

हार में प्यारो खरो कर को,
 लसती हियरे सो लगाइ न लीने ।
 तू तौ सयानी अनोरयो करी,
 अर फेरि के एसी न चित्त धरीजे ।
 बाधा सोहाग श्री साभा सने
 उडिजेने के पथ पै पाउ न दीजे ।
 मानि ले मेरी कही तू लली अहे,
 नाह के नेह मयाह न बीने ॥

रानी सामु घरी न छमा करिहे,
 निसियामर ग्रामन हीं मरजी ।
 सग्न भौंह चढाये रहे ननदी यो,
 जेदानी री तीसी मुने चग्गी ।

कवि बोधा न सग तिहागे चहै,
 यह नाहक नेह फँदा परवी ।
 बडी आसै तिहारी लग ये लला,
 लगि जैहें कहू तौ कहा करवी ॥

त्याग कौ जाग जहान कहै,
 हम तो तन हीं चुकी त्यागि जहानें ।
 मौत क्लेस को लेस नहीं,
 कवि बोधा गोपाल में चित्त समानें ।
 मैचती पौन को मौन गहे,
 अरु नींद अहार नहीं उर आने ।
 ऊधा जू जोग की राति कहो
 हम जोग ना दूजो नियोग ते जानै ॥

निन स्वाद पुरानी लता सिगरी,
 तिनहँ में कछू गुन ज्ञान नतो ।
 लगि केनकी और नेयारी जुही,
 मनमानै न सेवती बीच रतो ।
 रनि बोधा न प्रापति आदर को,
 दरकार करी करि येरु मतो ।
 यहि आसरे या वगिया पिलम्यौ,
 वा चमेली नवेती सों नेह हतो ॥

नटपारन बेठि रसाला में
 यह क्यैलिया जाण सरे ररि हे ।
 नन फूलि हे पुज पलासन के,
 तिनको लसि धीरज का घरि हे ।
 रनि बोधा मनोच क ओगनि सों,
 निरही तन तुल भयो जरि हे ।
 घर कंत नहीं निरतत मट.

ठाकुर

भूम देइ भूला मे भुवागती जसोदा माय,
 चूम चूम बदन बतैया लेत प्यारे की ।
 म्हीनी सोहे भगुली औ भालग भइली लसे,
 अगियाँ रसीली नीसी बज सी मुखारे की ।
 ठाकुर कहत चित-चोर चितवन चारु,
 रूप मे मिलत ल्यों किलोलै किलनारे की ।
 कह ते कोरी तिहे धदत महेस अज,
 लाग सरे पैथा या गोविंद गभुवारे की ॥

मेहदी लपेटे लाल लाल धम कीहे निच,
 छीगुनी अनौटा नगजटित सँवारे हे ।
 दापनि के दीप तरवान का बगान कौन,
 पाँचों अगुरिन मैन सर पाँचौ पारे हे ।
 ठाकुर कहत ठगुगइ के निरैत,
 रस-रूप के भँडार निग्धार निरधार हे ।
 परच-वरण अशरण के शरण राधे
 रागरे चरण सुत-रग्न हमारे हे ॥

मोतिन वैसे मनोहर माल गुहे,
 तुफ अच्यर जोरि रचावे ।
 प्रभ को पद कान हरिनाम की,
 गत अनूठी बनाइ सुताने ।
 ठाकुर सो करि भागत मोहि जो,
 राज राजसभा मे बढप्यन पारे ।
 पंडित लोक प्रवीनन को,
 जोई चित हरे सो कवित कहाने ॥

काहे अरे मन साहस छॉडत,
 काहे उदास हूँ देह तजै है ।
 वे सुख वे दुख आयै चले गये,
 एक सी रीति रही नहि रहै ।
 टाकुर का को भरोस करै हम,
 या जगजालन भूल न ऐहै ।
 जानै सयोग में दीहों वियोग,
 वियोग में सा का सयोग न टैहै ॥

का कहिए कोई पीरक नाहिने,
 ताते हिये की जतियत नाहीं ।
 भागन भेट भई कन्हँ सु,
 घरीक विलोकें अघैयत नाहीं ।
 टाकुर या घर चौचद को डर,
 तात घरी घरी ऐयत नाहीं ।
 भेटन पैयत कैसे तिहे,
 जिहँ आँसिन देखन पैयत नाहीं ॥

सापने हाँ पुतवाइ गइ,
 हरि ऊरु भरी भुज कटन मेली ।
 हो सकुची कोउ सुदरी देखत,
 लै जिन बाह सो बाह पछेली ।
 टाकुर भोर भये गये नीद के,
 देखहुँ ती घर माझ अफेली ।
 आस सुलो तन पास न सौरा
 नाग न वारो वृत्त न बेली ॥

का कहिये कहिये की नहीं
 मग जोरत जोरत जोगयी है ।
 उन तोरत थार न लाइ कपू,
 तन तँ वृथा जोरन न सागयी है ।

कवि ठाकुर कूनरी के बस है,
 मनमोहन को रस में विम बासरो बो गयो है ।
 हिलियो मिलियो,
 दिन चारिक चाँदनी हो गयो है ॥

धिक कान जा दूसरी बात सुनें,
 अब एक ही रग रहो मिलि डारो ।
 दूसरो नाम कजात कद
 रसना जो कहँ तो हलाहल बोरो ।
 ठाकुर यों रहती ब्रजनाल,
 सा ह्या बनितान की भाप है भोरो ।
 ऊधो तू बे अरियाँ जरि जाँय
 जो साँवरो छाँडि तकै तन गोरो ॥

मोही में रहत रहे माही सो उदास सदा,
 सीसत न सीस तन सीस निरधारो है ।
 चौको सो चरौ सो कहँ जरु सो जरु सो कहँ,
 पाइन थको सो भाँति भाँति निहारो है ।
 ठाकुर अचेत चित चोजवारी यातन में,
 जानत न हरि सो कहा धौ बोल हारो है ।
 पसो चित चतुर सयानो सामधान मेरो,
 ये री इन आँसिन अज्ञान करि डारो है ॥

पतो नजमडल रमत तासो काम कौन,
 आनंद के भौन तुम्है देखि जीजियतु है ।
 सोऊ तुम इतै उतै अनत पनत हेरो,
 याही दुस दाहन सरीर छीजियतु है ।
 ठाकुर रहत मेरी चाह की अचाह करो,
 चाहते की चाह को निबाह की गत है ।
 प्रीति निनु प्यारे कोऊ फाहे को
 प्रीति की प्रतीति

का हौं ? जीतिपी हैं । कबू जातिपै विचारत हौं ?

येही शुभ धाम काम जाहिर हमारौ तो ।
 आओ धैठ जाओ पानी पिओ पान रावौ फेर,
 होय कै सुचित नेक गणित निकारौ तो ।
 ठाकुर कहत प्रेम नेम का परेसो देखि,
 इच्छा की परिच्छा भली भाँति निरधारौ तो ।
 मेरो मन मोहन सौ लागत है भाँति भाँति,
 मोहन मो मन मासो लागि है विचारौ तो ॥

अपन अपने निज रोहन में
 चढे दाऊ सनेह की नाँव पै री ।
 अँगनान में भीजत प्रेम भरे,
 समयौ लखि मं नलि जाँव पै री ।
 कह ठाकुर दोउन की रुचि सौ,
 रँग दूवै उमढे दोड ठाँव पै री ।
 सखी नारी घटा बरपै बरसाने पै,
 गोरी घटा नन्दगाँव पै री ॥

आजु यहि कौतुक छको है नद नद वार,
 चानी न जात सा विचित्र चित्र मा पै री ।
 चलु नलि तोहि यो दिसाय लाऊ वन धनो,
 पायो है निहार बलिहार भयो सो पै री ।
 ठाकुर रहत कहाँ नीलमणि सोनधेलि,
 सुरमा सनेलि कै न उपमा अरापै री ।
 धन को निहारै तव वारै होत आपुन पै,
 बीजुरी निहारै तव वारै होत तो पै री ॥

गेद हैं व वृषभानुमुता
 जिनसो मन मोहन माह करै हैं ।
 कामिनि तो उन सी नहि दूसरि,
 दामिनि की दुति सो निदरै हैं ।

ठामुर के हम ही यह जानती,
 के उनह को जनाइ परै हैं।
 छोटी नथूनी जडे मृत्तियान,
 चडी अस्तियान जडी सुधरै हैं ॥

सुरभा नहि केतो उपाइ कियो,
 उरभी हुती धू घट सोलन पे।
 अधगन पे नेरु सगी ही हुती,
 अटनी हुती माधुरी सोलन पे।
 कनि ठामुर लोचन नासिडा पे,
 मडराइ रहो हुती डोलन पे।
 ठहरे नहि डीठि किरै ठटकी,
 इन गोरे कपोलन गालन पे ॥

जय तें निलोकि गई रागरा वदन बाल,
 तय ते अचेत सी त्रियोग भार फुरई।
 हेम की लता सी चपला सी चारु चाँदना सा,
 भदन सताई पे न म जनाई भुरई।
 ठामुर कहत भूमि विक्रम निहाल परी,
 देखिये गापाल ताहि उपमा न जुरई।
 रति के भँडार ते दुराय के चोराय मानो,
 काहू आनि मदिर में रूप राति कुरई ॥

गाने पिक्करीनी मृगनेनी ह जजावे गीन,
 नाचै चन्द्रमुरी चारु चाउ की चटरु पे।
 श्रीरतिकुमारी वृषभानु की तुलारी राधे,
 अटकी निलोकि लोरु-ल्लाज की अटक पे।
 ठामुर कहत चीर केसर के रग रगो,
 अतर पगो सो मन माहे पीत पट पे।
 देस तो दरगत बेमो राचत रसीला आबु,
 आली री नमत नमाली के मुमुट पे ॥

आग सी धँधाती ताती लपटें सिराय गई,
 पौन पुरवाईं लागी सीतल सुहान री।
 मृदुल अनूप चारु चाँदना मलीन भई,
 तापी छाँह छाँई छूटी मानिनी को मान री।
 ठाकुर कहत आलो पीपम गजन कीनौ,
 पावस प्रनेस बेस छनि सरसान री।
 सावन सुहावन को आवन निरसि आली,
 मेघ बरसन लागे हिय हुलसान री ॥

कारे लाल पीरे धीरे धावत धुनों के रग,
 कितने सुरग किते रग मटमाडे ह।
 कितन मही के रूप माधुरी करत घोर,
 सारे चहुँ ओर होत गहगहे गाढे हैं।
 ठाकुर कहत कनि वरनि वरनि धाके,
 वरने न जात यो वहसि वार बाढे हं।
 मोह लेत मनन जु ऐसी घने बनन नृ,
 आजु देखो घनन घनेरे रग काढे हैं ॥

दौरि दौरि दमकि दमकि दुरि दामिनि यां,
 दुन्द देत दसहू दिसान दरसतु है।
 धूमि धूमि घहरि घहरि घन घहरात,
 घेरि घेरि घोर घनो सोर सरसतु है।
 ठाकुर कहत पिक पीकि पीकि पी कौं रटे,
 प्यारो परदेस पापी शान तरसतु है।
 भूमि भूमि मुकि मुकि भूमकि भूमकि आली,
 रिमन्निम भिमकि असाढ वरसतु है ॥

पावस में परदेस ते आनि मिले पिय,
 औ मनभाई भइ है।
 दादुर मोर पपीहरा घोलत,
 तापर आनि घटा उनई है।

ठाकुं वा सुखकारी सुहायनि,
 दामिनि कौंध कितें धा गई हे ।
 री अत्र तो घनघोर घटा,
 गरती नरसी तुम्हें धुरि दइ हे ॥

भाई-सी भुजा तैं भ्रमि आयो गोरी-गारी बाँह,
 गोरी बाँहह तैं चापि चूरिन में अरिगो ।
 हेरेउ हरे हरे हर चूरिन तैं चाहीं जौलों,
 तौलों मन मेरो दीरि तेरे हाथ परिगो ॥

चाह भयो चंचल हमारो चित्त नौल वधु,
 तेरी चल चंचल चितौनि में बसत हे ।
 कहे पदमाकर सु चंचल चितौनि हँ ते,
 औभकि उभकि उभकि भ्रमनि में फँसत हे ।
 औभकि उभकि उभकि तैं सुरभि बेरा,
 बाँहीं की कहनि माहि आइ विलसत हे ।
 बाँहीं की कहनि तैं गुनाहीं की कहनि आयो,
 नाहीं की कहनि तैं सु नाहीं निम्मत हे ॥

भारत ही न्यो ये ही मतो,
 गुरु लोगन को डर डारत ही बन्यो ।
 भारत ही बन्यो हेरि हियो,
 पदमाकर प्रेम पसारत ही बन्यो ।
 भारत ही बन्यो काज सबै,
 अत्र यो मुग्ध उधारत ही बन्यो ।
 भारत ही बन्या घूघट को पट,
 नंदकुमार निहारत ही बन्यो ॥

भेद नि जाने पत्नी वेदन निमाहिबे रो,
 आज हो गई ही चाट बमीनट वारे की ।
 कहे पदमाकर लट्ट हँ लोट-बोट भई,
 चित्त में चुभी जो चोट चाय चटवारे की ।
 बावरी ली बृभक्ति विलोभति कहा त वीर,
 जाने कहा कोऊ पीर प्रम हटवारे की ।
 उमडि उमडि कहे वरसे सु आँगिन हँ,
 घट में बमी जो घटा पीत-पटवारे की ॥

जाहिरै जागत सी जमुना,
 जर घूडे वहे उमहे वह बेना ।
 त्यौ पदमाकर हीर के हारन,
 गंग तरगन का सुरा दनी ।
 पाँयन ने रँग सों रँगि जात सी,
 भाँति ही भाँति भरन्वति मनी ।
 परे तहाँई जहाँ वह ताल,
 तहाँ तहँ ताल में होत त्रिपनी ॥

शोभित म्भरीगन गुनगनती में जहाँ,
 तेरे नाम ही नी एक रखा रग्नियतु है ।
 कहे पदमाकर पगी यों पनि-प्रेम ही में,
 पदमिनि तोमी तिया नृही पेग्नियतु है ।
 सुरग्न रूप जैमो तैसो गील सौरभ है,
 याही ते तिहारो तनु घनि लेग्नियतु है ।
 सोने में सुगध नाहि गध में सुयो न साना,
 मोनो औ सुगध तामें दोनो देग्नियतु है ॥

ये अलि या रलि के अवरानि में,
 आनि चढी कहु माधुरई सी ।
 ज्यो रदनाकर माधुरी त्यो,
 कुच दोउन की चटती उनरई सी ।
 ज्यो कुच त्यो ही नितन चढ कहु,
 ज्योही नितन त्यो चातुरई सी ।
 जानि न पेमी चढाचढि में,
 निहि धो कटि नीच ही लुटि लड सा ॥

ये अलि हमें तो रात रात की न जानि परे,
 नूकनि न राहे यामें कौन कठिनाई है ।
 रहे पदमाकर क्यो अग ना समात आँगी,
 लागी काह तोहि जागी उर में ऊँचाइ है ।

तुम तनि पॉयन चली है चचवाई कित,
 वावरी तिलोके क्यो न आँखिन में आई है ।
 मेरी कटि मेरी भट्ट कौन धाँ चुराई,
 तेरे कुचन बुराई के नितनन चुराद है ॥

स्वेद को भेद न फोड़ कहे,
 वत आँखिन हँ आँसुमान को धारो ।
 त्यों पदमावर देखती हौ,
 तन को तन कप न जात सँभागे ।
 हँ धाँ कहा को कहा गयो यों,
 दिन टैक ही ते कछु ख्याल हमारो ।
 कानन में बसी बाँसुरी की धुनि,
 प्रानन में बसो बाँसुरीमारो ॥

जाहि न चाह कँ रति की,
 सु क्यूँ पति को पतियान लगी है ।
 त्यों पदमावर आनन में रुचि,
 कानन भाँह कमा लगी है ।
 देति पिया न हूँ छतियाँ,
 बतियाँ न तो मुसकान लगी है ।
 पीतमे पान सनाइवे को,
 परजन के पास लाँ जान लगी है ॥

आरत सो आरत सँहारत न सीस-पट,
 गव गुजारत गरीजन की धार पर ।
 कहे पदमावर सुगध सरसाने सुधि,
 निथुरि निराचै चार हीरन के हार पर ।
 द्वापत छनीली छिति छहरि छरा सी छोर,
 भोर उठि आई केलि-मंदिर के द्वार पर ।
 एक पग भीतर सु एक देहरी पे धरे,
 एक कर कज एक कर है निगार पर ॥

निगि अँधियारी तऊ प्यारी परतीन,
 चडि मान दे मनारय के रथ पै चती गइ ।
 कहै पदमारु तहाँ न मन मोहन सो,
 भेट भई सटकि सहेत तै अली गइ ।
 चदन सो चाँदनी सो चरु सो चमनिन सो,
 और उन बेलिन के ललनि दली गइ ।
 आई हुती दुन के दुलै को दल छदनि सो,
 छेल तो दल्यो न आपु दुँल सो छली गइ ॥

मीन है नु किन जाति चली,
 गलि गोती निशा अधगति प्रमान ।
 हौं पदमारु भावनि ही,
 निज भावते पै अर हौं माहि चान ।
 तो अलबेली असती डरै किन,
 क्या डरी भरी महाय के लान ।
 है मयि सग मनोमय-मो भट,
 कान लीं जान-शरामन तान ॥

दोऊ छत्रि छाननी छनीली मिनि आमन पै,
 चिनहि निलाकि रह्यो जात न चिनै चिनै ।
 कहै पदमारु पिउँहैं आइ आदर मो,
 छनिया छमाला छेल रासर चिनै चिनै ।
 मूँदै तहाँ प्य अलबेली के अनोय दग,
 सुदग मिचाननी के ख्यालनि हिते हिते ।
 नैमुक नगाइ घोषा धन्य धन्य दूसरा को
 श्रीचरु अचूरु भुग्य चूमत चिनै चित ॥

ग्याल मन-भाये कहैं कविके गोपाल,
 धरै आये अति आलम मडड उडे तरके ।
 कहै पदमारु निहारि गनगामिनी के
 गनमुकनान के हिये पै हार करके ।

बैते पे न आनन है निकसे वधू के बैन,
 अघर उरहने सु दीवे काज फरके।
 रुधन ते कचुकी भुजानि ते सु वाट्टुद,
 पोचन ते कगन हरे ही हरे सरके ॥

'बोलति न काह' एरी, 'पूछे विन बोला कहा',
 पृथति हों 'कहा भई भेद अधिमाइ है'।
 कहै पदमाकर 'सु मारग के गये प्राये',
 'साँची कहु मोसो नहाँ आज गई आई है'।
 'गई-आई ही ता साँरै क पास' 'कौन काज',
 'तेरे काज ल्यावन सु तेरी ही दुहाई है'।
 'काहे ते न ल्याई फिरि मोहन निहारी नृ का',
 'कैम वाको ल्याऊ' जैसे वाको मा ल्याई है ॥

सौ दिन का मारग तहाँ को वेगि माँ निविदा,
 प्यारी पदमाकर प्रभात राति रीते पर।
 सो सुन पियारी पिय गमन बराबर को,
 आँसुन अहाइ बेठी आसा सु ताते पर।
 गालम निदेस तुम जात हौ तो जाउ पर,
 साँचो रहि जाउ कब ऐहो भौन रीते पर।
 पहर के भीतर के दो पहर भीतर ही,
 तीमरे पहर नै धो साँझ ही वितीते पर ॥

रूप रचि गोपी नो गोविन्द गा तहाँई जहाँ
 काह बनि बँठी कोऊ गोप की कुमारी है।
 कहै पदमाकर यो उलट बहे को कहा,
 नमके कहैया कर मसने जु प्यारी है।
 नारी ते न हँसत नर नर ते न हात नारी,
 विधि के करे हूँ काह ना निहारी है।
 काम नरता की नरनृत या निहारी जहाँ
 नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है ॥

दोज अटान चढे पदमाङ्ग,
 देसै टुहूँ को टुवौ छनि छाड ।
 त्यों बजमल गोपाल तहाँ
 बनमाल तमालहि की दरशाई ।
 चंद्रमुसी चतुराई करी तन,
 ऐसी क्यू अपने मन भाइ ।
 अचल ऐचि उरोजन तै
 नदलाल को मालती माल दिखाइ ॥

कुलन में केलि में कडारन में कुजन में,
 क्यारिन में कलिन कलीन मिलनत है ।
 रहे पदमाङ्ग परागन में पीन ह में
 पानन में पीरु में पलाशन पगत है ।
 हार में दिशान में दुनी में दश-देशन में,
 देसौ दीप-दीपन में दिपत दिगत है ।
 बीजिन में बच में नमलिन में रेलिन में
 बनन में बागन में बगरो बगत है ॥

औरै भाँति कुजन में गुजरत भोर-भीर,
 औरै टौर भोगन में गौरन क ह गय ।
 कहे पदमाङ्ग सु औरै भाँति गलियान,
 छतिया छत्रोले छैल औरै छनि छूँ गये ।
 औरै भाँति निहग ममाज में अनाज होत
 गेसे ऋतुगज के न प्राज दिन द्वै गये ।
 औरै रम औरै रीति औरै राग औरै रग,
 औरै तन औरै मन औरै बन हँ गय ॥

चाली मुनि चदमुगी चित में सुचन करि,
 तित उन रागन धनेरे अलि धूमि रहे ।
 रहे पदमाङ्ग मयूर मनु नाचत है,
 चाइ सो चरोग्नि चमोर चूमि-चूमि रह ।

येते पे न आनन है निम्से यधु के येन,
 अधर उरहने सु दीवे काज फरके ।
 कधन ते रुचुसी मुजानि ते मु बाहुबद,
 पांचन ते कगन हरे ही हरे सरके ॥

‘बोलति न काह’ एरी, ‘पूछे निन बोला कहा’,
 पृथति हो ‘कहा भई भेद अधिमार है’ ।
 कहे पदमारर ‘सु मारग के गये प्राये’,
 ‘साँची कहु मोसो कहाँ आज गइ आई है’ ।
 ‘गई-आई हो ता साँसे के पास’ ‘कौन काज’,
 ‘तेरे कान ल्यानन सु तेरी ही दुहाइ है’ ।
 ‘काहे ते न ल्याई फिरि मोहन निहारी नु को’,
 ‘बैमे वाको ल्याऊ’ ‘जेसे वाको मा ल्याई है’ ॥

सो दिन को मारग तहाँ को बेनि माँ गिनिदा,
 प्यारी पदमारर प्रभात राति बीते पर ।
 सो सुान पियारी पिय गमन बराइवे सो,
 आँमुन अहाइ घेठी आमा सु ताते पर ।
 जालम निदेस तुम जात हो तो जाउ पर,
 साँची कहि जाउ कच ऐहो भौन रीते पर ।
 पहर क भीतर के दो पहर भीतर ही,
 तीसरे पहर बै घो साँक ही नितीते पर ॥

रूपरचि गापी सो गोविन्द गा तहाँई जहाँ
 काह बनि घेठी कोऊ गोप की कुमारी है ।
 कहे पदमारर यो उलट कहै को कहा,
 समरे कहेया कर मसकै जु प्यारी है ।
 नारी ते न होन नर नर ते न हात नागी,
 निधि ने करे ह कँ मद्र ना निहारी है ।
 राम रगता की वरनृत या निहारी जहाँ
 नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है ॥

दोऊ अटान चढे पदमातर,
 देखें दुहें को टुबौ छवि छाई ।
 ल्यो बजनाल गोपाल तहाँ
 बनमाल तमालहि की दरशाई ।
 चंद्रमुखी चतुराई कगी तर,
 एसी कचू अपने मन भाइ ।
 अचल ऐंचि उरोजन तैं
 नदलाल को मालती माल दिखाई ॥

कूजन में केलि में कद्वारन में कुजन में,
 क्यारिन में कलिन कलीन क्लिन्नत है ।
 कहे पदमातर परागन में पौन ह में
 पानन में पीक में पलाशन पगत है ।
 हार में दिशान में दुनी में देश देशन में,
 देखौ दीप-दीपन में दिपत दिगत है ।
 वीधिन में वन में नवेलिन में वेलिन में,
 वनन में वागन में वगरो वमत है ॥

औरै भाँति कुजन में गुजरत भौर-भीर,
 औरै डौर भौग्न में रौरन के ह गये ।
 कहे पदमातर सु औरै भाँति गलियान,
 छतिया छत्रोले छैल औरै छवि छूवे गये ।
 औरै भाँति निहग ममाज म अमाज होत
 तेसे ऋतुगज के न आज निन टै गये ।
 औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रग
 औरै तन औरै मन औरै जन हौ गये ॥

चाली सुनि चंद्रमुखी चित में सुचैन करि,
 नित जन नागन घनेरे अलि धूमि रहे ।
 कहे पदमातर मयूर मंत्रु नाचत ह,
 चाइ सो चमोग्नि चमोर चूमि-चूमि रह ।

रुद्रम अनार आम अगर अशाक थोक,
 ततन समेत लोने-लोने लगी भूमि रहे ।
 फूलि रहे फलि रहे फौलि रहे फत्रि रहे
 भूपि रहे भूलि रहे मुक्ति रहे भूमि रहे ॥

साँझ के सलौने घन सनुन सुरजन सो,
 कैसे के अनग अग अगनि सताउतो ।
 रह पदमाकर भ्रमोर भिक्षा सारन को,
 मोरन को महत न कोऊ मन क्याउतो ।
 राह निरही की कही मानि लेतो जो पै टई,
 जग म दइ तो दयासागर कहाउतो ।
 गरी विधि वौरी गुनसार घनो होतो, जो पै
 निरह बनायो तो न पावस बनाउतो ॥

लागत वमत के सु पाती लिखी प्रीतम को,
 प्यारी परवीन है हमारी सुधि आनरी ।
 वही पदमाकर इहाँ को यो हवाल,
 निरहानल को ज्वाल सो दवानल ते मानवी ।
 उन को उसासन को प्री परगास सो तो,
 निपट उसास पौन हू ते पहिचानरी ।
 नैनन को ढग सो अनग-पिचकारिन ते,
 गातन को रग पीरे पातन ते जानवी ॥

चंचला चमकै कहँ औरन ते चाह भरी,
 चरज गइ थी पर चरजन लागी री ।
 वही पदमाकर लवंगन की लोनी लता,
 लरज गइ थी फेर लरजन लागी री ।
 बंस धरौ धीर भीर त्रिनिध समीर
 तन तरन गइ थी फेर तरन लागी री ।
 घुमटि घमंड घग घन की घनेरी अरु,
 गरज गइ थी फेरि गरन लागी री ॥

मल्लिकार्जुन मनुल मलिद मतवारे मिले,
 मद-मन्द भारत मुहीम मन साकी है
 वही पदमारर ल्यों नदन नदीन नित,
 नागर नवेलिन की नजर नसा की है
 दौरत दरेरो दत दादुर मु दूदे दीह
 दामिनी दमन्त निशान में दसा का है
 बदलनि बुन्दनि निलाकि बगुलान वाग,
 बैंगला नवेलिन बहार बरसा की है ॥

चार हैं ओर ते पौन भूरोर,
 भूरोरनि घोर घटा घहरानी ।
 ऐसे समय पदमारर काहु का,
 आनत पीत पटी पहरानी ।
 गुज की माल गोपाल गरे
 बजनाल मिलोकि थरी अहरानी ।
 नीरन ते कटि नीर-नदी,
 छनि छीजत छीरज पे छहरानी ॥

लालन पे ताल पे तमालन पे मालन पे,
 बुन्दावन जीखिन बहार नशीनट पे ।
 वही पदमारर असड रासमडल पे
 मडित उमडि महा कालिन्दी के तट पे ।
 क्षिति पर छान पर छानत छतान पर,
 ललित लतान पर लाडिली के लट पे ।
 आई भली आई यह शरद जुहाई, जेहि
 पाई छनि आजु ही कहाइ के मुट्ट पे ॥

सनक चुरीन की ल्यों धनक मृदगन की,
 रुनुरु - कुनुरु सुर नूपुर क जाल नो ।
 वही पदमारर ल्यों वांसुरी की धुनि मिलि,
 रसो बैधि सरस सनासो एन ताल को ।

देसत वनत पे न कहत जनै री कइ,
निनिध निलास यो हुलास यह रयाल को ।
चंद - छवि - रास चाँदनी को परगास,
राधिका को मंद हास रास-मंडल गोपाल को ॥

फाग के भीर अमीरन में गहि,
गोविंदै लै गई भीतर गोरी ।
भाई करी मनरी पदमाकर,
ऊपर नाय अनीर की भोरी ।
छोनि पितंबर कवर तै सु,
निग दई मीडि कपोलन रोरी ।
नैन नचाय कही मुमकाय,
लला फिरि आदयो रोलन होरी ॥

गोमूल मे गोपिन गाविन्द सग खेली फाग,
राति भरी आलस में ऐसी छवि छलकै ।
दह भरी आलस कपोल रस रोरी भरे,
नींद भरे नयन रचूरु जपै जलकै ।
लाली भरे प्रथर वहानी भरे मुलवर,
कनि पदमाकर निलाकै कीन सलकै ।
भाग भरे लाल औ मुहाग भरे सत अग,
पीर-भरी पलकै अनीर भरी अलकै ॥

अधगुली रचुरी उरात अध-आरे गुले
अधगुले वेम नस रसन नी भलकै ।
कहे पदमाकर नरीन अय-नीरी गुली,
अधगुले छहरि छगके छार दलकै ।
मार जनि प्यारी अध उरध इतै दी ओर,
भौनी किरिपि किरिपि उधारि अध पलकै ।
शरंग अधगुली अधगुली तिरनी है गुली,
अधगुले आनन पे अधगुली अलकै ॥

एके लग घाए नदलाल औ गुलाल दोऊ,
 हगनि गये जु भरि आनंद मटे नहीं ।
 धोय धोय हारी पदमाकर तिहागी सौंह,
 अत्र तो उपाय पत्तौ चित्त पै चढे नहीं ।
 कैसी करो कहां जाऊ कासो नहीं सौन सुने,
 मोऊ तो निवामो चा सौं दरद घटे नहीं ।
 ये गी मेरी चीर जैसे तैस इन आँखिन तें,
 मडिगा अनीर पै अहीर को कटे नहीं ॥

फागुन में फागुन बिबाहि न दिसाई दत,
 पत्ती घेर लाई उन कानन में नाड आव ।
 कहे पदमाकर हितु जो है हमारा तौ,
 हमारे कह चीर वहि धाम लागि धाइ आव ।
 जारि जो घरी है चेदगद तुआर होरी
 मेरो दिग्हागि की उल्लुभनि लौं लाइ आव ।
 परी इन नयनन के नीर में अनीर घोरि,
 घोरि पिचवागी चित्तचोर पै चलाई आव ॥

भान पे लाल गुलाल गुन्तान सों,
 गेरि गरे गनरा अलबला ।
 यों बनि बानिक सों पदमाकर,
 आये जु खलन फाग तौ सेलो ।
 पै इक या छवि देखिने के लिये,
 सो पिपती के न म्कारिन भेलो ।
 राउर रग रगी अखियान में,
 ए बलनीर अनार न मन्यो ॥

श्रतापसाहि

दीप सम दीपति उदीपति अनूप,
निज रूप कै सरूप रति रूपहि हरति है ।
कहे परताप करि मजन सरस,
मनरजन प्रिया के दृग अजन धरति है ।
ताहि समै दूती दिखायो आनि भार लिसि,
निपट निरास ह्वै उसासाहि भरति है ।
सारस विलाचनि विचारि चित्त चेत,
राजहसन के बम की सिपारसि करति है ॥

सीख सिखाई न मानति है,
बर ही सब संग सखीन के आवै ।
खेलत खेलत नये जल मे,
दिन काम नृथा कत जाब मित्तवै ।
झोड के साथ सहेलिन को,
रहि कै कहि कौन समादहि पावै ।
कौन परी यह वानि अरी,
नित नीर भरी गगरी ढरकावै ॥

चंचलता अपनी तजि कै,
रस ही रस सो रस सु दर पीजियो ।
बाऊ स्तिरु कहै तुम सो,
तिनकी वही गतन को उ पतीजियो ।
चोन चनाइन के सुनियो न,
यही इरु मेरी कही नित कीजियो ।
मंजुल मंजरी पहो, मलिद,
विचारि कै भार सँभारि कै पाजियो ॥

होत प्रभात अहायवे काज,
 सखीन के साथ तहाँ पग धारे ।
 मजन के पहिरे पट सुन्दर,
 भूपन अगन अग सँवार ।
 तीर हँ नीर भरी गगरी,
 सुनिलाकि नग तहँ कौतुक भारे ।
 आजु सरोवर में सजनी तल,
 भीतर पकज फूल निहारे ॥

चाँदनी महल फैल्यो चाँदनी फगस,
 सैन-चाँदनी निझाय झरि चाँदनी रिते रही ।
 बेटी सजि सुन्दरि सहेलिनि समाज बीच,
 वदन पै चारुता चिराक नी रिते रही ।
 कहै परताप आये मोहन रँगाले श्याम,
 नख सिख देखि करि आनन छितै रही ।
 सुघर निचारि कलानिधि को निहारि,
 मनुहारि करि फेरि मुख पीतम चितै रही ॥

कोटि उपाय मिये हिय को,
 रचि जातन सों न सनेह दुर्यो परै ।
 मृधे सुभाय विना वनितान को,
 क्यों करि के मन मान मुर्यो परै ।
 चाखिये तो निख भाखिये साँच,
 जो राखिये नम तो प्रेम पुर्यो परै ।
 आजु प्रभात सम लखिये
 अरविन्दन तें मरन्द घुर्यो परै ॥

खेल न खेलिये मेसो भट्ट,
 सु परोमिनि नोक कहँ लखि लैहै ।
 मानहु ना वरजी हमरी,
 अज काहै को काऊ सिखानन दैहै ।

नद कुमार महा सुकुमार,
 विचारि कै फेरि हिये पछितैहै ।
 घालिये ना इन फूलन की पँसुरी
 कहँ अगनि में गडि जैहै ॥

ननद जिठानी अनखानी रहै आठौ जाम,
 चरवस वातन वनाय आय अरती ।
 रचि-रचि वचन अलीक बहु भौंति के,
 करि-करि अनस पिया के कान भरती ।
 कहे परताप कैसे गसिये निकसिये क्यों,
 मौन गहि रहिये तऊ न नेक टगती ।
 निज निज मदिर म साँक ते सवेरे दीप,
 मेरे केलिमदिर में दीपकौ न धरती ॥

रग धने पति-प्रम सने,
 सत्र रैनि गने मन मन हिलोरन ।
 अगनि मोरति भोर उठी,
 छिति पूरति अग-सुगध भूकोरन ।
 रूप अनूप निहारि निहारि,
 गुमान जनाय कह्यो दग-कोरन ।
 नन्दकिशोर अहो चित-चोर,
 न जाहुँ मैं हान सरोवर ओरन ॥

कौन सुभाव सी नेरा पर्यो,
 नहि भूपन चित्र विचित्र बनावै ।
 चन्दन चूर कपूर मिलै,
 घिसि कै अँगराग न अग लगानै ।
 तोनों दुरानति हीं न बधू,
 निहि तैं न सुहागिल सौति बहानै ।
 बेलि बमेलिनि फौ तजि कै,
 अलि काहे को कज-बली नित ल्यावै ॥

कानि करै गुरु लोगन की न,
 सरसीन की सीस नहीं मन आवति ।
 छेड भरी अँगिराति सरसी कत,
 घूँघट में नये नैन नचावति ।
 मंजन के दग अजन आँजति,
 अग-अनग उमग बढ़ावति ।
 कौन सुभाष री तेरो पर्यो,
 सिन आँगन में सिन पौरि में आवति ॥

आजु सरसी ननदी करि प्यार,
 निभूपन भूपन टै पठण है ।
 मंगल - मूल बनाय विचित्र,
 सुफल दुकूल निहारि नए हैं ।
 आँद की सुघरी उघरी,
 सिगरे मन वाँछित काज भए हैं ।
 बूझति तो कहँ वामर के,
 कहुरी अर कैतिक जाम गए हैं ॥

मनिमय मंदिर के आँगन अनौसी घाल,
 बैठी गुरु लोगन में सोभा सरसाइ कै ।
 गरक गुलान नीर, अरक उसीरन के,
 रासे उन औरन सुगध वगराइ कै ।
 रहे परताप पिय नैन के इसारतनि,
 सारति जनाई मुस मूढ मुसक्याइ कै ।
 गाली नहि बोल कहु सुदरि सुजान रही,
 पुण्डरीक - सुमन साहायौ दितराइ कै ॥

करि सुनास वारि विमल सुवासित कै,
 मंजन कियो है तन अधिक उमाह तैं ।
 मर, कपूर, कसतूरी औ खे वै
 अगराग, अंगन तैं ।

रुहे परताप साजि सकल सिंगार तन,
 भूपन - विभूपन सकल अगगाहे ते ।
 पर की निहारति हाँ नैननि सों कंज-नैनि,
 बेसरि वनै न आज पहरति काहे तैं ॥

अन्न - अन्न भूपन - विभूपन निरचि,
 जाति जावन - जवाहिर की जाहिर जगाई ते ।
 बहचहे चोवा चारु चदन अरगजा औ,
 अन्नराग हेत मल बेसर भँगाई ते ।
 रहे परताप दुति देह की दुरन्न हात,
 सुर ग कुसुभी ऐसी चुनरि रँगाई ते ।
 रीभिकारी गरी सुनि सुन्दरि सुजान गरी,
 भाल क्यो न वदी मृगमद की लग्गाई ते ॥

कैलि के रङ्ग प्रसन्न नैं,
 निशि पीतम सङ्ग सर्व निशि जागी ।
 भोर मघ अरसाति जम्हाति,
 उठी अँगराति विथा उर पागी ।
 बोली न बाल कछू सखियान सों,
 नीर भरे अँरिया नडभागी ।
 सुन्दरि बेठि अगार के द्वार,
 सुनार निचोल निचोवन लागी ॥

मोचति ही नैनजल रैन दिन सोचति ही,
 समुक्ति सकोचन सों मौन मुख धरियो ।
 हटिगो सुमन सेग छूटिगो सहेलिन को,
 भुलि गयो औरै वनितान को निदरियो ।
 रहे परताप कौन जानत पराइ पीर,
 गरी मेरी वीर रदा जाँ को एक जरियो ।
 का मोषहौ ही को दुस प्यारे निज पीशे मोहि—
 लागत न नीने नित मिलियो बिछुरियो ॥

कहाँ जैसे कौन भौंति कैसे समुझैये मन,
 काहि दरसैये कहि काज निज लेखे का ।
 आप मनमानै निज हित सोई जानै सप,
 काज नहि जानै प्रेम पूरन परेखे को ।
 रहे परताप कैसे चित्त उहरैये,
 सुख पेये किमि चित्त माहि एक हू निमेखे को ।
 भूँठो सप जानि परयो फह्यो मुख बेननि को,
 साँचो सप जानि परयो नैननि के देखे को ॥

चीति गयी सिगरी रजनी,
 चहुँ ओर तें फैलि गयी नभ लाली ।
 मोर वियोग मिट्यो, परिपूर—
 उदै भयो सूर महा झपि साली ।
 गोलि उठी वन जागन में,
 अनुरागन सो चहुँधा चटमाली ।
 सुन्दर स्वच्छ सुगध सन्यो—
 मकरन्द करै अरविन्द त आली ॥

नाहक चित्त उदास करै,
 मुख मौन धरै मन ही मन सूखती ।
 प्रेम-प्रपगन को तजि कै,
 निज अगन में नहि भूपन भूपती ।
 तापन सो तबती विरम,
 निन काज वृथा मन माहि निदूखती ।
 का कहिये इन सो सजनी,
 मकरन्दहि लेत मलिन्दहि दूखती ॥

तडपै तडिता चहुँ ओरन तें,
 द्विति छाई समीरन की लहरै ।
 मदमाते महा गिरिश्रुगन पै,
 गन मनु मयूरन के कहरै ।

इनकी करनी धरनी न परै,
मगरूर गुमानन सो गहरै ।
घन ये नभ-भडल में छहरै,
घहरै कहुँ जाय, कहुँ ठहरै ॥

चंचल चपला चारु चमरुत चारों ओर,
भूमि - भूमि धुरवा धरनि परसत है ।
सीतल समीर लगे दुरद वियोगिह,
संयोगिह - समाज मुलसाज सरसत है ।
कहे परताप अति निविड अंधेरी माँह,
मारग चलत नाहि नकु दरसत है ।
मुमडि भलानि चहुँ कोद तें उमडि आज,
धाराधर धारन अपार बरसत है ॥

धार घटा घहरै नभ-भडल,
तैसिय दामिनि की दुति जागत ।
धारत धूरि भरे धुरवा
गिरि - शृगन पै अनुरागत ।
पैती नयी मुरना हरियाइ निहारि,
सजागिनि के हियरे अनुरागत ।
रीति नई रितु पास में,
बजरज लरै रितुरज सा लागत ॥

मातिन हार लरै बनुला,
घन में चमरारन की छनि छाड़ ।
इन्द्र - बधु वगरी वन में,
तन चूनरी चारु मनो पहिराई ।
दामिनि की दुति यों दरसै,
सु भरी घनी बन्दन माग सुहाइ ।
आतु पिया बनि वानर सो,
सु नवीन बनी बरपा बनि आइ ॥

आइ रितु पावस प्रताप घनघोर भारी,
 सघन हरी री वन मडन चढाए री ।
 कोकिल कपोत सुक चातक चमोर मोर,
 ठौर ठौर कुजन में पड़ी सब छाए री ।
 जमुना के कूल, औ कदंबन की डारन पै,
 चारों ओर धार सोर मारन मचाए री ।
 एरी मेरी वीर ! अर कैसे तै में धीर धरौं,
 आए घन स्याम, घनस्याम नहि आए री ॥

स्वेत स्वेत बरु के निस्तान पहरान लागे
 ऐचि ऐचि चपल रूपान चमकाए री ।
 धर मुसु डी को अवाज-सी करन लागे,
 बुदन के भरनन भीने भरि लाए री ।
 मनत प्रताप रतिनायक नरैस जु ने,
 धीर गढ तोरिब को पावस पटाए री ।
 ए री मेरी वीर ! अर बैस कै में धीर धरौं,
 आए घन स्याम, घनस्याम नहि आए री ॥

बदली दुगुन दुति बदली बदमन की,
 अदली अतन वर सदली वतन में ।
 निटपन डोलै करि निनिधि कलोलै,
 बोलै वीर कुज कोकिल गुमान भरे मन में ।
 कहै परताप सन लखियत औरै और,
 गति को गुमान गनराजन के गन में ।
 सुखनि अतूलै फिरै प्रेम-रस भूलै फिरै,
 पूले फिरै आन मृगराज मधुनन में ॥

पल्लव फूल दुकूल रचे,
 हग अजन भृङ्ग तरूप सुहायो ।
 केसर अङ्ग पराग लसै,
 मृदु हास त्यों कुदकली छनि द्यायो ।

गरकि - गरकि प्रेम पारी परजक पर,
 घरकि - घरकि हिय होल सो भमरि जात ।
 ढरकि-ढरकि जुग जघन जुटन देइ,
 तरकि-तरकि बंद कचुनी के करि जात ।
 'ग्वाल' कवि अरकि-अरकि पिय यामे तज,
 थरकि-ररकि अग पारे लो विखरि जात ।
 सरकि-भरकि जाय सेज से सरोजनैनी,
 परकि-परकि कोलि पद ते उच्चरि जात ॥

मीन मृग सजन सिसान-भर मेन वान,
 अधिक गिलान-भर कंज बल ताल के ।
 राधिना झरीली का ब्रहर छनि झाक भरे,
 झेलता के छोरे भरे भरे छनि जाल के ।
 'ग्वाल' कवि आन-भर, सान-भरे, स्यान भरे,
 स्यान-भर कछु अलसान-भरे माल के ।
 लाज-भर, लाग-भरे, लाभ-भरे, लाभ-भरे,
 लाली-भरे लाड-भर लोचन है लाल के ॥

कहिवे का हम तो वियोगिनि विदित नित,
 र पर सँजोग हूँ ते सुमति सुधारी है ।
 ऊयो ताहि वह इहा कहूँ न लसाइ परयो,
 साँच ही अलस तोहि भयो गिरधारी है ।
 'ग्वाल' कवि ह्य तौ वही जाम-जाम धाम धाम,
 मूरति मनोहर न नैरो होत न्यारी है ।
 वानन में वानन में प्रानन में आसिन में,
 अगन में रोम-रोम रसिक-विहारी है ॥

सामा की तीजे पिय भीजे धारि-वू दन सौ,
 अंग-अंग ओढनी सुर ग-र ग वार का ।
 गानत मलारें सुनि मुस की पुसरें जोर,
 भिल्ला भननारें धन करें सहजारे की ।

‘ग्याल’ कवि कर्त विहार हैं उदारता में,
 पीन हू चलत जहाँ सीतल झमारे की ।
 चमक घट्टन की चमक चपलान की,
 सु झमर जगी की तामें रमक हिडार की ॥

मान की न बेर सनमान की हू बेर प्यारी,
 मान म्हो मेरो मुरु झाकि तौ झमाके सो ।
 लहलही बेले डार-डार पर रेलें हेले,
 मलें चाह गलें लालें छरि के झमाके सो ।
 ‘ग्याल’ कवि नू दें दू दें रू दें रिग्हीन हान,
 नेह का न मू दें ये न मू दं हू गमाके सो ।
 धूम आये भूम आये तूम आये भूमि आय
 चूमि चूमि आये घन चचकै चमाक सो ॥

सीरे सीर नीर भये नदिन के तीर तीर,
 सोरे भये चीर धरा सोरी मर परि गइ ।
 दसह दिशा तें दिन रात लागी कुहरान,
 पीन सरसान साफ तीर सा निरगि गइ ।
 ‘ग्याल’ कवि ऐसे या हिमत में न आय कंत,
 सो तुम्ह न दोष मलसत औरें डरि गइ ।
 सूस गये फूल भोर झर उडि गय मानो
 काम की कमान की कमान सी उतरि गइ ॥

आई एक ओर तें अलीन लें विशारी गोरी,
 आयो एक ओर तें विशोर वाम हाल पै ।
 भानि चल्यो झेल छरी झोड पै, झरीलन ने—
 छरी नो उठाय घाय मारी उर माल पै ।
 ‘ग्याल’ कवि हो हो कहि चोर कहि चरो कहि,
 बीच में नचायी थइ तद थई ताल पै ।
 ताल पै तमाल पै गुलाल उडि झया एसो,
 भयो एन और नँदलाल नँदलाल पै ॥

चन्द्रशेखर वाजपेयी—“शेखर”

थोरी-थोरी बँस की किसोरी तन गोरी गोरी,
 भोरी-भोरी वातन सों हियरो हरति है ।
 फेतनी तें सरस कही न परै कुन्दन-सी,
 चचला तें चौगुनी मरीचिका धरति है ।
 जगर-मगर होति इन्दु-वदनी की दुति,
 शेखर अग्राम वों प्रकासित करति है ।
 मानो मँज्यो मञ्जु मैन-मुकर-महल तारम,
 अमल अमम महतान-सी बरति है ॥

आनन अनूप कर चरन मरोज ओज,
 कृचन कटाञ्जन कपूर तरसत है ।
 नपा-बी-सी अर गुलान-सी चिबुक्र चारु,
 कुन्द-की-सी रदन रदन दरसत है ।
 मञ्जु मृगमद-सी सरार सत्र सुन्दरी के,
 केतकी के पत्र की प्रभा को परसत है ।
 रूप-गुन - जोवन अनूप गति दूतिका सी,
 अन्न अन्न अमित सुगंध सरसत है ॥

रूप को - सो सागर उजागर अनूप सोहै,
 जोहै हग दूरि हीं ते करन बसी को है ।
 मादभरो उदित अमद दुति प्राणो जाम,
 सोतिा को करत सरोजमुख फीका है ।
 सगर सरस रस पानिष अमोल डोल,
 मञ्जु मन लजन मलिन्द बर जी को है ।
 चन्द हू ते नीरो मनमोहन धनी को,
 सबही को सुन्दैन मुख-चन्द भावती को है ॥

चौरदार चित के चलाक हित जोरदार,
 कोरदार सरत अरुन वर डोरदार ।
 दौरदार दीरघ दिमाकभरे, प्रानप्यारी,
 तानि दे री तनक तिहारे नैन तोरदार ॥

कारे सटकारे चारु चीनने चमकदार,
 चित चकचाधित निहारि चरु थहरै ।
 कोमल विमल रुचि सरस रुचिर राजै,
 सहज सुभायन सुगंधा की लहरै ।
 सरस छजत छूट केम कजलाचनी के,
 गारे-गारे गातन अनूप छनि छहरै ।
 दच्छ विधि प्रगट प्रतच्छ करि दीन मनो,
 सानन के सच्छ उमे पच्छ एक ठहरै ॥

कैधा धर्या आपही जतारि रजभूमि तार्य,
 मैन की कमान को अनूप गुन-आज सो ।
 कैधा मिल्यो मन मैं उमाह करि राहु ताहि,
 लाइ लीयो उर सो मयक मन मोज सो ।
 रस तम-सार की, कुमार चारु पनगा को
 पीवत मुधा को सार सेसर सरोज सो ।
 गोर मुल भावती के अलक अरुम्की किर्धा,
 छलके सिंगाररस - धार हम होज सो ॥

पान के पात में प्रनालन की रौति तापे,
 पदिक की पौति री प्रभा-सी अभिलापी है ।
 कैधो कालिदी में बल्यो वानी को प्रनाह चाहि,
 ता में भली वन्द की कली-सी गहि तासी है ।
 पाटी पारि प्यारी की सँवारि माँग सदुर सो,
 तामे मंत्रु मुरतापली यो रचि रासी है ।
 तमागुन रामि में रजागुन की रस मानो,
 तामे लिखो सुरचि सतोगुन की सारसी है ॥

भूतन की प्रीति है कि नोति अग्निदेविनी की,
 वायर की जीत है की भीति अग्निधारी की ।
 गनिना को नेह निर्वा दामिनि की दह कैधों,
 कामिनी को मान गानि राम-उर-वागी की ।
 सेसर पत्वास के प्रमन की सुगंध कैधों,
 सील कृतटानि को कि सत्य व्यभिचारी की ।
 पाहन मो पंक है कि अरु मो अरार किर्धों,
 रकन मो दान है कि लंक प्रानप्यारी की ॥

गान्न दिये ते और अरुन लसे में,
 ये तो सहज स्वभाव ही अलौकिक अरुन हैं ।
 रोमल निमल मजु कंचन-स कहत नीके,
 पीके स लगत मुस उपमा परन हैं ।
 पल्लव पुनीत टटके से उटके से कहे,
 सेसर न तेऊ रम-रचन धरन ह ।
 रसभरे रगभरे सगस उमगभरे,
 भामती के मृदुल मनोहर चरन ह ॥

सहन सुभाइन सों भामती सहेलिन में,
 सोहत सरूप रासि कचन-भा गात है ।
 सफल सिंगार सान, सहित उमंग भरी,
 जोवन-तरंग साल-सोभा सरसात है ।
 गुरुजन गेह के सोराय ने मिधारी तहाँ,
 वैटो जहँ सेसर पियारा सुखदान है ।
 गान् अति प्रम मो पयोनिधि अग्राह,
 तामें लाज-भरो मदन-जहाज चलो जात है ॥

प्रान-प्यारी आलिनि, प्रधान प्यारी प्रीतम की,
 टानि न्यारी मिलन निकुज-गह मन में ।
 सान सोहै सील में समाज सोहै सती सग,
 लाज सोहै सरस, विलास सोहै तन में ।

आस-भरा सेसर हुलास भरी देखी तहाँ,
 सेज परी सूनी है अचेत परी छन में ।
 नार छायो नैनन, अधीर छायो बैनन में,
 पीर छायी अगन, समार छायो वन में ॥

रस में विरम है क सेसर विताई रात,
 लागे रति-चिह, चारु अगन अछेह सों ।
 परत न सधे पग, आलस-बलित बेस,
 आवत तिलोकि और भामती के गेह सों ।
 आदर सों उठि कै सहेलिन सों आगें जाइ,
 लागे उर दागन दुराए निज देह सों ।
 धूर भर प्रीतम के चरन सरोज प्यारी
 पोछे निज अचलै क छोरन सनेह सों ॥

अरुन उदोत आयो करिकै विहार हेरि,
 उपट्यौ हिए में हार, हारे रग रति के ।
 मान ठानि बेठी, तानि भृशुटी कमान चारु,
 लाल भए लोचन लजीले धरु गति के ।
 सरसर समीप जाइ सकुचि सँभारे स्याम,
 रग भरे नसन लली के प्रीति अति के ।
 उमगि अनद अनुरागी अति प्रेम भरी,
 लागी उर ललकि सलोनी प्रानपति के ॥

पजनेस

ननला सरूप रूप रावरे रचिर रूप,
 रचना विरचि कीन सकुचन लागी हे ।
 मन पजनेस लोल लोयन की लीने गोल,
 गुलफ गोराई लाव सकुचन लागी हे ।
 सुन्दर सुतान सुखदान प्रीत प्रीतम की,
 एसी ना परेत अर्थ सकुचन लागी हे ।
 औचक उचन लागी कचुमी रचन लागी,
 सकुचन लागी आली सकुचन लागी हे ॥

चितमत जारी ओर चय चरिचोप मंत्रे,
 मनि पतनेम भानु - सिग्ग गरीया हे ।
 छवि प्रतिनिन्व इद्रा द्वित हे उपासक त,
 छावन उरीवी गने मन - दरीनी हे ।
 मीन्दा हर सुन्दर गुतान को प्रमूत प्राप्त,
 मुनि-मुनि मुनि-भूमि आसत परीनी हे ।
 आनन अनन अगनि ने अमन अनि,
 अदुत अदुत अना उरनि परीनी हे ॥

मैं तो भार पर्यो है प्रिया के रूप-सागर में,
 मैं तो तन पजनेस भासत गोपाल को ।
 मैं तो शशि अरु मैं कलक शशिता के सग,
 मैं तो मुख-पंकज पै बैठो अलि - बालको ।
 मैं तो शुभ्रपक्ष के समीप परिवा को जान,
 मैं तो ऋतुराज आज पायो जन्म जाल सो ।
 दरमि सुमर फेरि पुरन रसो ना साथो,
 मोहनी का टोना कै डिठोना बाल-भाल को ॥

सपुट सरोज कैधो सामा के सरोवर में,
 लसत सिंगार न निशान अधिकारी के ।
 ननि पजनेस लोल चित्त चित्त चारिबे को,
 चोर इन ठौर नारि ग्रीव वर वारी के ।
 मंदिर मनाज न ललित कुम्भ कचन के,
 ललित फलित कैधो श्रीफल विहारी के ।
 उरज उठोना चक्राहन के छौना कैधो,
 मदन रिलोना इ सलोना प्रान-प्यारी के ॥

निरान सी कडि आई अगना उघरि गात,
 करि पजनेस छेल छिति पै छहार गो ।
 उभकि भुपाक मुल परि प्यारे रस आर,
 हेरि हरि हरसि हिमाल पे अरि गो ।
 आधा मुग मलत अनीर ते मुग्ग हाय,
 नरतरस चिहित उरोजन पे भरि गो ।
 माना अर्ध-चद्र को प्रकास अर्ध चद्रिका पै,
 चद्र-चूर हूँ के चद्रचूर पै बगरिगो ॥

चीत्रि चकी उमरी सी छमी जमी,
 छीनि निरीछनि लागी छगावन ।
 पूनी निवा निधि आधी उसास ले,
 चत नियो चित चत सोहावन ।

यों मन में कहि कै पत्नेस,
 हमैं उहैं केतो चहैं मनभावन ।
 हा सुधरी पुतरी सी परी,
 उतरी धुरी चूमि लगी चटकावन ॥

प्यारी रतिर ग सफजग जीति बैठी प्रात,
 अग सुभटन को इनाम उकमत ह ।
 आँगी दर्ई कुचन भुजन वात्रवद दर्ई,
 नृपुर पगन बेनी भाल सरसत है ।
 करि पजनेम नैन अजन अघर गीरी,
 जघन दुहुत कर्नफूल सरसत है ।
 पीछे परे जान तान भौहन कटाछन तैं
 गार - वार बघन तैं वारन कसत है ॥

विधु नैमी कला उधु गैलन में,
 गसी ठाढो गोपाल जहाँ जुरिगो ।
 पत्नेस प्रभाभरी भामिनि पै,
 घने पाग के फैलनि सो फुरिगो ।
 मुरझी रसी बरु तिलोस्त लाल
 गुलाल में बेंदा सबे पुरिगो ।
 दिग में दरस्यो है दिनेस मनो,
 दिगदाह री दीपति में दुरिगा ॥

द्विजदेव

डोलि रहे विक्रसे तरु एकै,
 सु एकै रहे है नवाइ के सीसहि ।
 त्यों 'द्विजदेव' मर द के व्याज सों,
 एकै अनद के आँसु चरीसहि ।
 कौन कह उपमा तिनसी,
 जे लहैई सपै विधि सपति दीसहि ।
 तैसेई है अनुराग भरे,
 कर-पल्लव जोरि के एकै असीसहि ॥

औरें भाँति कोमिल, चकोर ठौर-ठौर चोले,
 औरें भाँति सनद पपीहन के बै गए ।
 औरें भाँति पल्लव लिए हैं वृन्द-वृन्द तरु,
 औरें छवि-पुज कुज-कुजन उनै गए ।
 औरें भाँति सीतल, सुगंध मद डोलै पौन,
 'द्विजदेव' देसत न ऐसै पल द्वै गए ।
 औरें रति, औरें रग, औरें साज औरें संग,
 औरें वन, औरें छन, औरें मन हँ गए ॥

गुर ही के भार सूधे-सवद सु गीरन के,
 मंदिरन त्यागि रै अनत कहुँ न गीन ।
 'द्विजदेव' त्या ही मधु-भारन अपारन सों,
 नैक मुनि-भूमि रहे सोगरे मरअदीन ।
 सोलि इन भेननि निहारौ-तौ-निहारौ रहा,
 सुसमा अभूत छाड रही प्रति भौने भौन ।
 चाँदनी ने भारन दिसात उनयो सों चद,
 गंध ही के भारन वहत मद-संद पौन ॥

गुजग्न लागी भौर-भौरि केलिमु जन म,
 क्वैलिया के मुग्य तें वुहँरनि नठे लगी ।
 'द्विन्देव' तैसै बधु गहन गुलासन तें,
 चहकि चहँघाँ चटकाहट बडे लगी ।
 लाग्यो सरसासन मनोच निज ओच,
 रति रिगही सतासन मी बतियाँ गटे लगी ।
 हाँन लागी प्रीति-रीति गहुनि नद सी,
 नन-नेह उनरई भी मति मोह सा मढे लगी ॥

होते हरे नन अनुर की छवि,
 छार नछारन में अनियारी ।
 त्या 'द्विन्देव' कदसन गुच्छ,
 नण-ई-नए उनण सुसपारा ।
 मीजिये जेगि सनाथ उहँ,
 चलिये बन-वृजन कुजनिहारी ।
 पावस-माल के मेघ नण,
 नन नेह नठ वृषभानु मूमारी ॥

चुनरी सुरग सति साहा अग अगनि,
 उमगनि अनग अनगना लौं उमहति हे ।
 मुकि मुकि भौंमति भरोसन तें वारी घटा,
 चौहर अटा प रिगु-द्वटा-सी जगति हे ।
 'द्विन्देव' सुनि सुनि मयद पपीहरा के,
 पुनि पुनि-आँनद पिश्रुप म पगति हे ।
 चासन-चुभा-सीं मन-भासन के अच तिहँ,
 सासन की नृदँ ए सुहावनी लगति है ॥

गावौं किन कोकिल, बनावौं किन धेनु-धेनु,
 नचौं किन भूँमरि लतागन बन
 फँकि फँकि मारौं किन निज वर-यदलब सी,
 ललित लखग पून पातन घने

फूल-माल धारो किन, मौग्म सँवारो किन,
 एहो परिचारक समीर मुग्ग सा सन ।
 मौर-धरि वैठो किन चतुर रसाल ! आज,
 आगत रसत ऋतुराज तुम्हें देखने ॥

साँवन क दिनम सुहावने सलौने स्याम,
 जीति रति समर निराजे स्यामा-स्याम सग ।
 'द्विजदेव' की सो तन उघटि चँहूँ धौं रह्यो,
 चुवन कौ चहल चुचात चुनरी कौ रग ।
 पीत पट तात हरखाने लपटाने लख,
 उमहि उमहि घनस्याम - दामिनी का ढग ।
 रति-रन मीजे पै न मैन-मद छीजे, अति
 रस-रस भीजे तन पुलकि पसीजे अग ॥

फेरि वैसै सुरभि-समीर सरसान लाग,
 फेरि वैसै बेलि मधु-भारन उनै गई ।
 फेरि वैसै चाह के चकोर चहुँ गोले फेरि,
 फेरि वैसी क्वेलिया की कूरुनि चहुँ भई ।
 'द्विजदेव' फेरि वैसै गुनी भोर-भीरै फेरि,
 वैसो ही समय आयो आनंद सुधामयी ।
 फेरि वैसै अगन उमग अधिमाने,
 फेरि, वैस हा बञ्चूक मति मेरी भोरी हई गई ॥

वहि हारे सीतल सुगधित समीर धीर,
 कहि हार कोमिल सँदेस पंच ज्ञान के ।
 साधन अगाधन निसानी ना रञ्चूक जोपै,
 कौन गन भेद पग - सीम - टान - मान क ।
 'द्विजदेव' की सो कहु मित्र के निद्धोर्ह-काल,
 दरि सकुचौने दग - अनुज अयान रे ।
 भाजोई भभरि सो तो मान-मधुरर आली,
 आत व्यान - नाल - बलित - अँसुगान के ॥

धुँधुरित धुरि धुराँन की सु छाड़ नभ,
 जलधर-धारा घग परसन लागी रा ।
 'द्विजदेव' हरी-भरी ललित कडारै त्यों,
 कण्ठवन की डारै गस परसन लागी सी ।
 मालि ही तें देखि वन-बेलिन की मनर,
 नरेलिन नी मनि अति-अरमन लागी सी ।
 रागि लिसि पाती रा सँपाती मनमाहन नौ,
 पानस अनाती वन-दरसन लागी ॥

उँमडि धुँमडि घन छडत अगड धार,
 अति ही प्रचड पौन भूँवन रहतु ह ।
 'द्विजदेव' सपा नौ कुताहल चहुँधौ नभ,
 सैल न जलाहल को योग उमहतु हँ ।
 नुपि नल यानौ सार्द प्रलैनिमा को मघ,
 जानि करि सुनौ बेर आपनौ गहतु हँ ।
 ए हो गिरिधारी । रासौ, सरन तिहागी अर,
 फरि इहि वारी नन बूडन चहतु है ॥

'द्विजदेव' तू नैर न मानी तन,
 निनती बरी नार हनारन सी ।
 इन मासनचोर के जोर लइ,
 अरि झीनि सिसी पनारन सी ।
 लहि उँची उताम निमूरै कहा,
 लसि सैन घना घन-भारन की ।
 दिन टैर में पैहे सकेलि सने,
 फल बेलि नरुँ नौ अँगारन की ॥

घहरि-घहरि घन । सघन चहुँगौ धरि,
 छहरि-छहरि निप वूँद गस्ताने ना ।
 'द्विजदेव' नी सौँ अर चूकि मत टॉप अरे,
 पातनी पपीहा तू पिया की धुनि गावे ना ।

देखि ऐसी औसर न ऐहै तेरे हाथ अरे,
 मटक मटक मोर ! सोर तू मचानै ना ।
 हाँ तौ तिन प्रान, प्रान चाहति तज्योई अय,
 कृत नभचद ! तू अकास चढि धावै ना ॥

देखि मधु-मास की इतीक अनरीति,
 मधुमूदन जु होते तौ न औते कहौ काहे को ।
 जानि ब्रज बृडत जु होते गिरिधारी तौ पै,
 ऊधौ इत तुमहि पठौते रुहौ काहे को ।
 'द्विजदेव' प्यारे पिय पीतम जु होते तौ पै,
 ब्रज में बढौते दुस-सोते कहौ काहे को ।
 नसिके विदेस बीजुरी-सी ब्रज बालनि को,
 होते घनस्याम तौ बरौते कहौ काहे को ॥

कौन की प्रान हरै हम यो,
 दग कानन लागि मतौ चहै भूभन ।
 त्यो कहु आपुस ही में उरोज
 कसामी कै-कै चहै बढि भूभन ।
 ऐसे दुराज दुहँ वय के,
 सब ही को लग्यो अन चौचँद भूभन ।
 लूटन लागी प्रभा कढि कै,
 बढि कोम ज्ञान सौ लागी अरूभन ॥

जानक के भार पग परत धरा पै मद,
 गध भार कुचन परी है छुटि अलकै ।
 द्विजदेव तैसिरे निचित्र बरुनी के भार,
 आधे-आधे दगनि परी है अध-पलकै ।
 ऐसी छरि देखि अग-अंग की अपार,
 चार-चार लोल-लोचन सु कौन के न ललकै ।
 पानिप के भारन सँभारत न गात लंक,
 लचि-लचि जाति कच-भारन के हलकै ॥

चित चाहि अरु कहं किनन,
 छवि छीनी गयेदन की टटरी ।
 करि केते कहै निज बदि उदै,
 यहि सीसी मरालन की मटरी ।
 द्विजदेव नृ ऐसे कुनरवन मं,
 सरसी मनि यो ही फिरै मटका ।
 वह मद चले किन मोरी मट्ट,
 पग लारन का अरियाँ अटरी ॥

आधी ले उसास मुख आँसुन सौं धारे नहँ,
 जोवे नहँ आधे आधे पलन पमारि ३ ।
 नीद भूल प्यास ताहि आधी हू रही न तन,
 आधे हू न यासर सकत अनमारि ३ ।
 द्विजदेव की सौं ऐमी आधि अधिरानी जा सौं,
 नैरुज न तन मन राखति सँभारि कै ।
 ता दिन तै जोरि मनमोहन लला तै डीटि
 राधे आधे नैननि न आट न निहारि कै ॥

मद-अधे दीपक विलोकि क्यो अनद होते,
 भोरँ चारु चद क चमार चित चारे तै ।
 होता समताड दिखारन के भोरँ बन,
 चिनामनि आरसी की आनन अनोखे तै ।
 'द्विजदेव' की सौं एती हो ता उपहास कर,
 मानमर हूँ के अरविद-अति ओसे तै ।
 आलिन के सग दीपमाली के विलोकिने की,
 औभकि उभकि जो न भौरना मरोसे त ॥

आन सुमाइन ही गद राग,
 विलोकि प्रमून की पाँति रही पगि ।
 ताहि समै तहँ आये गुगल,
 तिहँ लसि औरौ गयो हियरौ ठगि ।

पै 'द्विजदेव' न जानि पर्यो,
 धों कहा तिहि काल परे अँमुवा जगि ।
 तू जा कहै ससि ! लौनों सरूप,
 सो मो अँरियाँन में लौनों गई लगि ॥

कारौ नभ, कारी निसी, कारिए डरारी घटा,
 भूकन वहत पौ आँनद को कद री ।
 'द्विजदेव' साँवरी सलौनी सजी स्याम जु पै
 कीहो अभिसार लखि पावस अनद री ।
 नागरी गुनागरी सु कैस डरै रैनि डर,
 जाके सँग सोहें ए सहाइक अमद री ।
 बाहन मनारथ, उँमाहि सँगारी सखी,
 मैन मद सुभट मसाल मुख चंद री ॥

दानि दावि दतन अधर छतवत करै,
 आपन ही पाँइन को आहट सुनति सौन ।
 'द्विजदेव' लेति भरि गातन प्रसेद अलि,
 पातह की सरक जु होती कहुँ काह भौन ।
 कंटन्ति होत अति उससि उमासिन तै,
 सहज सुनासन सरीर मजु लागै पौन ।
 पथ ही मैं कत के जु होत यह हाल तो पै,
 लाल की मिलनि ह्वै है चाल की दसाघो कौन ॥

गँके, सरु हीने, राते रंज छनि छीने, माँते,
 मुकि मुकि भूमि भूमि काहूँ कौँ कछु गनै न ।
 'द्विजदेव' की सो ऐसी वनक बनाइ,
 बहु-भाँतिन वगारै चित चाहन चहुँधौँ चैन ।
 पेरि परे प्रात जो पै गातन उच्चाह भरे,
 वार-वार तातै तुम्है पूछती कछुँ वैन ।
 एहो बजराज ! मेरे प्रम-घन लुटिधे कौँ,
 चीग राइ आगे किते आपके अनौसे नैन ॥

उत्तर-रीति

सरदार

सग की सहेली रहीं, पूजत अकेली सिंग,
 तीर जमुना के वीर चमक चपाई है।
 हाँ तो आई भागत डरत हियरा तें घर,
 तेरे सोच करि मोहि सोचत सवाई है।
 नचि है वियोगी योगी जन सरदार,
 ऐसी कठ तें कलित कूरु कोकिल कटाई है।
 विपिन-समाज में दराज सी अराज होति,
 आज महाराज रितुराज की अगई है ॥

गोरी सी बैस किमोरी सवै,
 भरि भोरी अवीर उडावती हैं।
 गर ताल दै ढोलक की धधकी,
 धुनि बाँध धमार चजारती हैं।
 सरदार लिँ मिथिलेस - कुमारि,
 उदार हँ भाग सरारती हैं।
 मुसिन्धाय कै नैन नचाय सवै,
 रघुनाथै बसत बैधावती ह ॥

साहिब मनोज कौ मुसाहिब बसत अत,
 मर ना गयो री नाम सुनत नमारे कौ।
 धीपम गरूर पूर छायो लै इमानु भयो,
 भेद ते अजान, अग तकत उजारे कौ।
 विन सरदार ना उपाय, अन एक कटै,
 तरक तलाम लायो अधम अँधारे रौ।
 दागि जग जीवननि जीवन कौ नाह,
 हाथ लिबन न दत, लेत जान हमारै कौ ॥

डरो न अहीरन तें, अगार अवीरन तें,
 चार ननी चारु चार ओरन ते धाओ री ।
 एन हाथ आडी पिचकारी की अगारी मारि,
 एक हाथ ओट रागि आँसिन बचाओ री ।
 करि सरदार आयौ वडौ लिलवार,
 ताहि खेल कौ सवाद र ग-र गन बताओ री ।
 कीरति-कुमारी क्यौ हेरि कै कुमारी कोउ,
 ए री गुनवारी, बनवारी बाँधि लाओ री ॥

लछिराम

सामुहै सुमन बरसाइ सुघराई सग,
 लछिराम रग सारदा हू कौ रितै रहे ।
 छाती मं लगाइ सुम थाती - सौ रुमल कर,
 सुकुमारताई को सराहि दुचितै रहे ।
 अलक लेंवाई, चारु चस चपलाई,
 अधरान की ललाई पर हरप हितै रहे ।
 माइ ! मनमोहन, गोराई मुख - मंडल पै,
 राई नौन वारि घरी चारि लौं चितै रहे ॥

पैजनी करुन की भनकार सो,
 नासिका मोरि मरोरति भौंहे ।
 ठाली रहे पग टैक चलै,
 सने स्वेद कपोल कळू उघरौहे ।
 यों लछिराम सनेह के संगन,
 साँकरे में पर प्यारी लजाँहे ।
 छाकि रह्यौ रस - रग अभी,
 मनमोहन ताकि रह्यौ तिरछौहे ॥

नौसत सिंगार साजि, कीहौ अभिसार जाइ,
 जोन्न बहार रोम रोम सरसत जात ।
 लछिराम तैसां भनकार पैजनी की,
 कर करुन लनक चूरी चारु परसत जात ।
 भरत प्रस्वेद, मुख चूनर सुरग धीच,
 विहँसत मन सारदा कौ तरसत जात ।
 दामिनी अमद सोहे बस रस फद चद,
 मानो लाल चादर में मोती बरसत जात ॥

मोज में आई इतै लछिराम,
 लग्यो मन साँवरो आनंद-कद में ।
 सूनो सँकेत निहारत ही,
 पर्यो सारो आनन घू घट बंद में ।
 बोलिबे को अभिलाख रचै,
 पे न बोलै कछू दुख-रासि दुचद में ।
 है रही रैन -सरोन सी प्यारी,
 परी मनो लाज मनोज के फद में ॥

चटपटी चाह अग उपटे अनग केरी,
 रग रावटी तें काम नट की कुमारी-सी ।
 कनि लछिराम राज-हसनि सों मद-मद,
 परम प्रकासमान चाँदनी सँवारी-सी ।
 नागरि निकुज में न हेर्यो बचचद,
 मुख रस पै सहेली भइ आँखें रतनारी-सी ।
 भाहन मरोरति, नियोरति मुकुत हार,
 झोरति छरा के बंद, रोप-मद डारी-सी ॥

बदल्यो बसन सो जगत बदलोइ करै,
 आरस में होत ऐसो या में कहा छल है ।
 छाप है हरा की कै छपाए हो हरा को,
 छाती भीतर भगा के छई छवि भलभल है ।
 लछिराम हों हैं धाय रचिहों बनक ऐसा,
 आँखिन रवाये पान जात क्यों अमल है ।
 परम सुजान मनरजन हमारे कहा,
 अँजन अधर म लगाये कौन फल है ॥

आए कहुँ अनत निहार करि मदिर में,
 सामुहै भूमकि छवि दामिनी की छोरै ह ।
 आरस-बलित बागौ, मरगजाँ ढीली पाग,
 बदन प्रस्वेद भाल भौहन के कोरै हैं ।

भरम सुल्यौ न अग परसत मोहिनी कौ,
 लड्डिराम सान संग भौहन मरौरे हे ।
 लोचन सुर ग हेरि बाल के सरोप माना
 रगसाज मदन मजीठ रग-धारे हैं ॥

प्रीति रावरे सौ करी, परम सुजान जानि,
 अन तौ अनान वनि मिलत सवेरे पै ।
 लड्डिराम ताह पै सुर ग ओढनो लै सीस,
 पात-पट देत गुजरैटिन के तेरे पै ।
 सरापोर छलकै प्रस्वेद कन, लाल भाल,
 मदन मसाल वारौ बदन उजेरे पै ।
 आपुने कलक सौ कलकिनी बनी हौं,
 लूटि और ह को धरत कलक सिर मेरे पै ॥

सजल रहत आप औरन को देत ताप,
 बदलत रूप और वसन बरेजे में ।
 ता पर मयूरन के मुड मतवारे सालै,
 मदन मरारै महा भरनि मजेजे में ।
 ननि लड्डिराम रग साँवरो सनेही पाय,
 अरजि न मानै हिय हरपि हरेजे में ।
 गरजि गरनि विरहीन क विदारै उर,
 दरद न आवै, धरै दामिनी करेजे में ॥

हरिश्चन्द्र

पहिले ही जाय मिले गुन में थन फेरि,
 रूप-सुधा मधि कीनो नैनहू पयान है।
 हँसनि नटनि चितननि मुमुनानि
 सुनराई रसिकाड मिलि मति पय पान हे।
 मोहि मोहि मोहन मइ री मन मेरो भयो,
 हरिचद भेद ना परत कडू जान है।
 काह भये प्रानमय प्रान भये काहमय,
 हिय में न जानी परै काह है कि प्रान है ॥

तिय पे जु हाइ अधिकार तो त्रिचार कीने,
 लोरु-लान भलो जुरो भलें निरधारिए।
 नैन श्रोन कर पग सबे परम भये,
 उतै चलि जात इहें कैम के सम्हारिये।
 हरिचद भट सप भाति सों पराइ हम,
 इहें जान रहि कहो कैम के निमारिये।
 मन में रहै जो ताहि दीनिये निमारि,
 मन आपै वसे जामें ताहि कैम के निमारिए ॥

बोल्यो करै नृपु अवन के निमिट सदा,
 रदतल लाल मन मेर निहर्यो करे।
 जानो करे बर्मी धुनि पूरि रोम-राम मुन,
 मन मुक्तानि मद मन ही हँस्यो करे।
 हरिचद चलनि भुरनि बतरानि चित,
 छाद रहै छनि जुग हगन मर्यो करे।
 प्रानह ते प्यारो रहे प्यागे तू सदाई,
 तेरो पीरो पट सदा तिय बीच फहर्या करे ॥

देखि घनस्याम घनस्याम की सुरति करि,
 जिय में विरह घटा घहरि-घहरि उठै ।
 त्यों ही इन्द्रधनु बगमाल देखि बनमाल—
 मोतीलर पी की जिय लहरि-लहरि उठै ।
 हरिचद मोर पिकु धुनि सुनि बसीनाद,
 बाँकी छवि बार-बार छहरि-छहरि उठै ।
 देखि - देखि दामिनि की दुगुन दमक,
 पीत-यट-छोर मेरे हिय फहरि-फहरि उठे ॥

गुरुजन वरज रहे री बहु बार मोहि,
 सक तिनहूँ की छोडि प्रेम-रग राँची में ।
 त्यों ही बदनामी लई कुलटा कहाइ कै,
 कलकिनी कहाई ऐसी प्राति-त्नीक खाँची में ।
 नहि हरिचद सन छोड्यो प्रानप्यारे काज,
 याते जग भूडो भया रही एक साँची में ।
 नेह के बजाय बाज छोडि सन लाज आज,
 घू घट उघारि बजराज हेत नाची में ॥

हैं तो यार्ही सोच में निचारत रही री काहे,
 दरपन हाथ ते न छिन निसगत है ।
 त्योंही हरिचद नृ वियोग औ सयोग दाऊ,
 एक स तिहारे बछु लखि न परत है ।
 जानी आन हम ठगुगनी तेरी रात नृ ती,
 परम पुनीत प्रेम-पथ निचरत है ।
 तेर नैन मूरति पियारे की बसत ताहि,
 आरसी में रैन दिन दखिनो करत है ॥

पिया प्यार बिना यह माधुरी मूरति,
 औरा को अब पेलिये का ।
 सुरा छाँडि कै सगम को तुमरे,
 इन तुच्छन को अन लेलिये का ।

माज्यो साज गाँव मिलि तीज के हिडोरना फो,
तानि कै बितान सासो परस बिझायो री ।
आँ मिलि गोपी ता पे भोजि फुड फुड,
काम-झाप सी रागाने गाये गीत मन-भायो री ।
माहि जानि पाये परी दूरी ते दया के
हरिचंद शक लेऊ तारा ज़िपि पहुँचायो री ।
जानि गई ताह पे चारने भजन दूरी,
पाय रिनु पैक के फराने भाँद खायो री ॥

आजु बपमानुराय पौरी होरी होय रही,
 दौरी हैं कितोरी सवै जोवन चढाई मैं ।
 सेलत गोपाल हरिचंद राघिजा के साथ,
 बुका एक सोहत कपोल की लुनाई मैं ।
 कैधों भया उदित मयंक नभ-नीच कैधों,
 हीरा जरयो वीच नीलमनि की जराई मैं ।
 कैधों परयो कालिदी के नीर मॉहि छीर कैधों,
 गरु सु गोरी भइ स्याम सु दराई मैं ॥

सेलौ मिलि होरी ढोरो केसर, कमोरी फैंसो,
 भरि-भरि भारी लान जिअ मैं निचारौ ना ।
 डारौ सवै रग सग चग हू बजाओ गाओ,
 सबन रिभनओ सरसाओ सक धारो ना ।
 कहत निहोरि कर जोरि हरिचद प्यारे,
 मेरी विनती हे एक हाहा ताहि टारो ना ।
 नैन हैं चमोर मुस-चद तैं परैगी ओट,
 यातैं इन आँगिन गुलाल लाल डारौ ना ॥

राखत नैनन मं हिय में भरि,
 दूर भए छिन होत अचेत है ।
 सौतिन की कहे वीन कथा,
 तसवीर हू सो सतराति सहत है ।
 लग भरी अनुराग भरी,
 हरिचद सने रस आपुहि लेत है ।
 रूप सुधा इक्ली ही पियै,
 पिय हू नो न आरसी देवन देत है ॥

हौं तो तिहारै दिसाइने के हित,
 जागत ही रही नैन उजारसी ।
 आए न राति पिया हरिचन्द,
 लिए क भोर लौं हौं रही मारसी ।

हे यह हीरन सों जडी,
रगन तापै कगी कटु चित्र चितार-मी ।
देसो नृ लालन कैमी बनी है,
नई यह सुन्दर रूचन-आगसी ॥

हों तो तिहारे सुखी सों मुनी,
सुख सों जहाँ चाहिए रैन निताइये ।
पै निनती इतनी हरिचद,
न रुठि गरीन पै भीह चटाइये ।
एक मतो क्यों कियो तुम सों तिन,
सोऊ न आरै न आप नो आट्ये ।
रुसिने सों पिय प्यारे तिहारे,
दिवाकर रुसत है क्यों बताइये ॥

आइ आन नित अमृलाई अलसाद प्रात,
रीसै मति पूछै वात रग नित ढरिगो ।
सोने स या गात छरै कै सोनो भया आप, कै वा
आतप प्रभात ही का प्रगट पमरिगा ।
हरिचद मौतिन सी मुन टुति छीनी कै वा,
आपनो वरन कहँ पाय घाय ररिगो ।
नील पट तेरो आन औरै रग भया काह,
मेरे जान पिदुरि पिया तें पीरो परिगा ॥

रोकहि जो तो अमगल होय,
औ प्रेम नसे जो रहै पिय चाइये ।
नो कहँ जाहु न तो प्रभुता,
जो क्यू न कहँ तो सनेह नसाइए ।
जो हरिचद कहँ तुमरे निन जी हैं न,
तो यह क्यों पतिआइए ।
तानी प्रयान समे तुमरे हम,
ना कहँ आप हमें समझाइए ॥

मैं वृषभानुपुरा की निवासिनि,
 मेरी रहे वृष वीथिन भॉरों ।
 एक सँदेसा वहाँ तुम सों,
 पे सुनो जो करो वझू ताको उपाय री ।
 जो हरिचंद जू कुजन में मिलि
 जाहि करी लखि वै तुम वावरी ।
 वूझी है वाने दया करिकै कहिये,
 परसा कन होयगी रावरी ॥

हाय दसा यह कासो कहा,
 कोउ नाहि सुनें जो करे हँ निहोरन ।
 कोउ वचाननहारो नहीं,
 हरिचंद जू यों ता हितू हँ करोरन ।
 सो सुधि कै गिरिधारन की अय,
 धाड़ कै दूर करौ इन चोरन ।
 प्यारे तिहारे निवास की ठौर को,
 बोरत है अँसुआ चरजोरन ॥

रोवँ सदा नित की दुखिया बनि,
 ये अँसियाँ जिहि घोरस सो लागी ।
 रूप दिखाओ इहें कनह,
 हरिचंद जू जानि महा अनुरागी ।
 मानिहें औरन सो नहि ये,
 तुव रग-रँगी कुल लाजहि त्यागी ।
 आँसुन का अपने अँवरान सों,
 लालन पौछि करौ बड-भागी ॥

आतु लीं जो न मिली तो कहा,
 हम तो तुमरे सन भॉति कहाँ ।
 मेरी उराहनो है वझू नाहि,
 सने पल आपुने माग को पाँ ।

जो हरिचंद भई सो भई,
अन प्रान चलै चहै तासों सुनारै
प्यारे जू है जग की यह रीति,
निदा की समै सन कठ लगारै ॥

अन प्रीति करी तो निगाह करौ,
अपने जन सों मुख मोरिये ना ।
तुम ता सब जानत नेह मजा,
अन प्रीति कहूँ फिरि जोरिये ना ।
हरिचंद कहैं कर जोरि यही,
यह आस लगी तेहि तोरिये ना ।
जिन नैनन मॉहि बसौ नित ही,
तिन आँसुन सों अन बारिए ना ॥

इन दुखियान को न चैन सपने हूँ मिल्यो
तासों सदा व्याकुल विरुल अकुलायँगी ।
प्यारे हरिचंद जू की बीती जान औघ
प्रान चाहत चले पै ये तो सग ना समायँगी ।
देरया एक बार हूँ न नैन भरि तोहि यात
जौन जौन लोक जैहें तहाँ पढ़तायँगी ।
निना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय
मरे हूँ पै आँस ये खुली ही रहि जायँगी ॥

मन मोहन तें निछुरी जन सों
तन आँसुन सों सदा धोवती हँ ।
हरिचन्द जो प्रेम के फन्द परी
बुल की बुल लाजहि सोवती है ।
दुस के दिन को कोउ भाँति नितै
निरहागम रैन सँजोवती ह ।
हम ही अपनी दसा जानै सखी
निसि सोवती हँ निधौं

पीरो तन पर्यो फूली सरसों सरस सोई
 मन मुरझानो पतझार मानो लाई है ।
 सीरी स्वाँस त्रिदिध समीर-सी बहति सदा
 अँसियों वरसि मधु भरि-सी लगाई है ।
 हरिचन्द फूले मन मैन के मसूसन सों
 ताही सों रसाल बाल बदि कै बोराई है ।
 तेर विद्वरे ते प्राण कत के हिमत अत
 तेरी प्रेम-जोगिनी बसत बनि आई है ॥

कूँ लगीं कोइलें कदवन पे वेठि फेरि
 धोए धाए पात हिलि-हिलि सरसै लगे ।
 गोलै लगे दादुर मधूर लगे नाचै फेरि
 देख कै सजोगा-जन-हिय हरसै लगे ॥
 हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
 लसि हरिचन्द फेर प्राण तरसै लगे ।
 फेरि भूमि-भूमि वरपा की अँतु आई फेरि
 वादर निगोरे मुकि मुकि वरसै लगे ॥

धरि धेरि घन आए, छाए रहे चहुँ ओर
 वैन हत प्राणनाथ सुरति विमारी है ।
 दामिनी दमक जैसी जुगनु चमक तैसी
 नम म निशाल बग पंगति सँजारी है ।
 ऐसी समे हरिचन्द धीर न धरत नेकु
 विरह बिया तेँ होत व्याकुल पियारी है ।
 प्रीतम पियारे नन्दलाल निनु हाय यह
 सावन की रात किधों द्रापदी की सारा है ॥

भिसुताइ अजों न गइ तन तें,
 तऊ जोवन जोति बटोरै लगी ।
 सुनिकै चरचा हरिचन्द की,
 कान कझुकु दे भौह मरोरै लगी ।

वचि सासु जेठानिन सौं पिय तें,
 दुरि घूँघट में दुग जोरै लगी ।
 दुलही उलही सब अगन तें,
 दिन द्वै तें पियूप निचोरै लगी ॥

आई गुरु लोग सग न्यौते ब्रज गाँव,
 नई दुलही सुहाई शोभा अगन सनी रही ।
 पूछे मन मोहन बतायो सरियन यह
 सोई राधा प्यारी वृषभानु की जनी रही ।
 हरिचन्द पास जाय प्यारो ललचायो,
 दीठ लाज की धँसी सो मानो हीर की अनी रही ।
 देसो अन देसो देखा आधो मुख आय तऊ
 आधो मुख देखिबे की हौस ही बनी रही ॥

सास जेठानिन सौं दवती रहै
 लीने रहै रुख त्यों ननदी को ।
 दासिन सौं सतरात नहीं,
 हरिचन्द करै सनमान सखी को ।
 पीय को दच्छिन जानि न दूसत,
 चौगुनो चाउ बढे या लली को ।
 सौतिन हू को असीसै, सुहाग करै
 कर आपने सेंदुर टीसो ॥

रतनाकर

सो तो करै कलित प्रकास कला सोरह लौं,
 यामैं बास ललित कलानि चौगुनी कौ है ।
 कहै 'रतनाकर' सुधाकर कहाने वह,
 याहि लखै लगत सुधा को स्वाद फीकौ है ।
 समता सुधारि औ निसमता रिचारि नीकें,
 ताहि उर धारि जो निसद बज - टाकौ है ।
 चारु चाँदनी कौ नीकौ नायक निहारि कहौ,
 चाँदनी कौ नाकौ कै हमारौ चाँद नीकौ है ॥

जगर - मगर च्योति जागति जवाहिर की,
 पाइ प्रतिपव - ओप आनन - उजारी की ।
 छवि 'रतनाकर' कौ तरल तरगनि पै,
 मानौ जगाजोति होति स्वच्छ सुधाधारी की ।
 सग में सखी - गन के जोवन - उमग - भरी,
 निरखति सोभा हाट - राट की तयारी ती ।
 जित जित जाति नृसभानु की दुलारी फनी,
 तित तित जाति दबी दीपति दिवारी की ॥

सग में तरैयनि के राका रजनीस चारु,
 छौहरं शत्रु पै छट्टा चलित विराज्यौ है ।
 रहे 'रतनाकर' निहारि सो नरेली निज,
 आनन सौं करन मिलान च्योत साज्यौ है ।
 संग लै सयानि सलियानि नियरान चली,
 पग - पग नूपुर निनाद मग बायौ है ।
 ज्यो ज्यो मंद - मंद चढी आवति गरूर बत्ती,
 त्यों त्यों मंद-चरु चद दरि चात भायौ है ॥

एक ही साँची स्वरूप अनूप है,
 साँची यह मन एक लकीर ।
 त्यों 'रतनाकर' सस की भेम,
 असेस लसै भ्रम की भरी भीरे ।
 ता निनु और जो देखि परे,
 थिति तानी सुनौ औ गुनौ धरि धीर ।
 लाचन द्वैतता दोष लगै
 यह एक तै हूँ गई द्वै तसनीरें ॥

नागरी नवेली अरवि - मुसी चोप चढी,
 कढी जमुना सौ जल बाहिर अहाइ कै ।
 भीनौ नीर भीनौ चीर लपट्यौ सरीर माहि,
 परत न देखि तन पानिप समाइ कै ।
 लाल ललचौहें तहाँ सौह आनि ठाढे भए,
 हेरत हँसहि अग - अगनि लुमाइ कै ।
 नर उर उगनि दै मुकि सकुचाइ फेरि,
 धार जमुना में धँसौ मुरि मुमुकाइ कै ॥

दुस सुस रावरे हमारे ह्वै रहे हैं एक,
 सार भेद भाव के पसारें दरे दत हैं ।
 कहे रतनाकर तिहारे कजरारे ओठ,
 कालकूट नैननि हमारें घर दत हैं ।
 नामक के दाग रहे जागि रावरे ना भाल,
 सो तो मम अतर अँगारें भरे दत हैं ।
 कठिन करारे कुच उर जो तिहार अरे,
 हिय म हमारे सो दरारें करे दत हैं ॥

ज्यों भरि कै जल तीर धरी,
 निरख्यौत्यों अर्धर ह्वै हात कहाइ ।
 जानै नहीं तिहि तामनि में,
 रतनाकर कीना कहा दुनहाइ ।

झाई कछु हरुगई सरौर कै,
 नीर में आइ कछु भरुगई ।
 नागरी की नित की जो सधी,
 सोई गागरी आजु उठै न उठाई ॥

ननद जिठानी सास सखिनि सयानी मध्य,
 बेठी हुती बाल अलबेली जहाँ आइ कै ।
 कहे रतनाकर सुजान मनमोहन हूँ,
 आए ललचाइ तहाँ कछु मिस ठाइ कै ।
 चहत बनै न भरि लोचन दुहँ सौ अरु,
 रहत बनै न नार नैसुक नवाइ कै ।
 दुरि दुरि औरनि सौं जुरि जुरि तौरनि सौं,
 घुरि घुरि जात नैन मुरि मुसुकाइ कै ॥

बैठे बन विकल विसूरत गुपाल जहाँ,
 औचक तहाँई बाल जोगी इक आइगे ।
 कछौ रतनाकर उपाय हम ठानै कछु,
 जानै यदि कापै आज एतिक लुभाइगे ।
 ताही छन छाइग छलक इत अँस नैन,
 बैन उत आगत गरे लां निरुभाइगे ।
 पाइगे न जानै कहा मरम दुहँ के दुहँ,
 हँसि सकुचाइ घाइ हिय लपटाइगे ॥

देखत हमारी हूँ दसा न इठिलानि माहि,
 आपनी तौ बानि ना विलोकत अठानि मैं ।
 कहे रतनाकर उपाइ ना बसाइ कछु,
 जासौं लरौ भाइ भेद उमय दसानि मैं ।
 पावतौ कहुँ जौ कोऊ चतुर चितेरो तौ,
 दिसावतौ सुभाज सोधि फलित कलानि मैं ।
 रिक्कन-आतुरी हमारी अँसियानि माहि,
 रिक्कन-चातुरी तिहारी मुमनानि मैं ॥

जब तैं रची हैं रूप रामरे रसिन्लाल,
 तब तैं बनी है गाल गाल बरकन की
 कहैं रतनाकर रही है रुचि नैननि में,
 मीन - मुख मजुल मुमृत दरकन की ।
 आठौ जाम बाम मग जोहत भृगी-सौ जब,
 चौकै पाय आहट तिनूमा सरकन की ।
 अनुशाग - रतित अज्ञान सौं कढत स्याम,
 मानिक तैं मानहु मरीचि मरकत की ॥

औचक अरेले मिले कुज रस-पुत्र दोज,
 भौचक भए ओ सुधि-बुधि सब खै गड ।
 कहैं रतनाकर त्यों बानक निचित्र बन्यौ,
 चित्र की सी पलकें सुभौहनि में खै गड ।
 नैननि में नैननि के बिन प्रतिचित्रनि सौं,
 दोज ओर नैननि की पाँति बँधि टै गई ।
 दोउन कौं दोउन के रूप लसियै का मनौ,
 चार आँख होत ही हजार आँख हँ गई ॥

राँय्यो रति-जाग नींद साँपि कै हमारै भाग,
 सो तौ सोध आप ही भपकि ठहि देत हैं ।
 बाढ उहि प्यारी मुख मजुल सुधानर सौं,
 रस रतनाकर की थाह थहि देत हैं ।
 पानिप के अमल अगार सुख - सार तज,
 लाद उर दुमह दवारि दहि देत हैं ।
 नैन निन बानी रुहि करिनि बग्यानी गत,
 ये तौ पर सकल कहानी कहि देत हैं ॥

चसनी परे ना मान-रस कौ कट्टे धाँ बाहि,
 लीजै गत रचक विचारि हित हानि की ।
 कहैं रतनाकर तिहारे सुनरन पर,
 दमक दुलारी तति तमन तबानि की ।

राप की रुराई रुर आवत सुसीली होति,
 मंद मुमकानि लै गसीली अँरियानि की ।
 होत मुदु मीठे सीठ बचन तिहारे पाइ,
 कठ - कोमलाई मधुराई अधरानि की ॥

लै लियौ चुम्बन खेलत में कहँ,
 तापै कहा इतनों सतरानी ।
 होठनि ही में कछू फरि सौह,
 वृथा भरि भौह कमान ह तानी ।
 लीजिय फेरि सवेर अवै,
 अनही तौ मिठासहुँ नाहि सिरानी ।
 याँ कहि सौहें कियो अधरा इन,
 वे तिरछौहें चितै मुसकानी ॥

तेरो रोस रुचिर सदीस ह हवै हेरन का,
 लागी मन लालसा न नैकु डगि जाति है ।
 कहै रतनाकर रुराई माहिँ मान हँ की,
 सहज सुभाव सरसाइ रगि जाति है ।
 फीकी चितवन हँ न नीकी भौति जानी जाति,
 तामें लाल लोचन लुनाइ लगि जाति है ।
 कहति कछू जो कनु यानि हँ अठान ठानि,
 आनि अधरा सो मधुराई पगि जाति है ॥

मान कियो मोहन मनीसी मन मौन मानि,
 पानि जोरि हारी जग ससियाँ, मन्यौ नहीं ।
 तन चरजोरी करि नवल रिसोरी भेस,
 रयाँई केलि भौन नैकु टेरहि गन्यौ नहीं ।
 प्यारी बनि प्रीतम भुजनि भरि लीयौ उन,
 बल छन कीन्यौ नहु जात सु मन्यौ नहीं ।
 प्रथम समागम सो सन ही बन्यौ पै एक
 अरु तैं छटकै छूटि भाजत बयो नहीं ॥

दीडि तुम्हे झूवे छली पलट्यो रँग,
 दीमत साँरी साज सत्रै है ।
 है रतनाकर रात्रे अंगनि,
 चेटक पेलि प्रतच्छ परै है ।
 देति है गोरस टाढे रही उत,
 रार कर कहु हाय न गेहे ।
 साँरे छैल छुगौगे जो मोहिं तो,
 गातनि मरे गुराइ न रहे ॥

नाक के चटानत पिनास भोह ढीली परै,
 चढत पिनाक भाह नाक मुमुसाइ दे ।
 कहै रतनाकर त्यों थीन हूँ नगाइ लिए
 मुग तैं टरै न नैन गोरस गगाइ दे ।
 अनग बटावत अनग की तरगें नटै,
 धारज घरा तैं प्रन-यायहि उटाइ दे ।
 रहति हियैं ही हाँस हिय का हमारे हाय,
 पैयो परौ नैक मान करिनी मिसाइ दे ॥

गूँथन गुपाल बैठे बेनी बनिता की आप,
 हरित लतानि कुच माँहि सुख पाइ कै ।
 कहै रतनाकर सँगारि निरगारि चार,
 चार नार निरम निलामत निमाइ कै ।
 लाइ उर लेत कर्नां फेरि गहि छोर लखैं,
 ऐसे रही रयालनि में लालन लुभाय कै ।
 काह गति जानि कै सुजान मन माइ मानि,
 “करत कहा हो” ? कह्यौ मुरि मुमुसाइ कै ॥

साँसी राधिका मान कियो,
 परि पाँदनि गोर गुनिद मनावत ।
 नैन निचोहैं रहैं उनके नहि,
 येन निनै के न ये कहि पावत ।

रोप की रुखाई रम आगत सुसीली होती,
 मद मुमरानि रौ गसीली अँलियानि की ।
 होत मृदु मीठे सीठे वचन तिहारे पाइ,
 कठ - कामलाई मधुराई अधरानि की ॥

लै लियौ चुम्बन खेलत में रहँ,
 तापै कहा इतनों सतगनी ।
 होठनि ही म बछू करि सोह,
 वृथा भरि भाँह कमान है तानी ।
 लीजिय फेरि सवेर अबै,
 अउही तौ मिठासहुँ नाहि सिरानी ।
 यों कहि साँह नियो अधरा इन,
 वे तिरछहि चितै मुक्कानी ॥

तेरो रोस रुचिर सदौस हू हवै हेरन की,
 रागी मन लालसा न नैकु डगि जाति है ।
 वहे रतनाकर रसाइ भाँह मान हूँ की,
 सहज सुभाज सरसाइ खगि जाति है ।
 फीसी चितवन हूँ न नीकी भाँति जानी जाति,
 तामे लोल लोचन लुनाइ लगि जाति है ।
 कहति बन्धु जो कटु वानि हूँ अठाठा ठानि,
 आनि अधरा सो मधुराई पगि जाति है ॥

मान नियो मोहन मनीसी मन मोच मानि,
 पानि जारि हारी जग सखियाँ, मन्यौ नहीं ।
 तन वरजोरी करि नवल निमोरी भेस,
 तयाँई केलि भौन नैकु टेकहि गन्यौ नहीं ।
 प्यारी चनि प्रीतम भुजति भरि लाचौ उा,
 कल छन वीचौ बहु जात सु मन्यौ नहीं ।
 प्रथम समागम सो सन ही वन्यौ पै एक
 अउ तै उटकि छूटि भागत वच्यौ नहीं ॥

दीठि तुम्ह छ्वै छली पलट्यो रँग,
 दीसत साँरी साज सत्रै है ।
 है रतनाकर रामे अंगनि,
 चेटक पेयि प्रतच्छ परै हँ ।
 देति हँ गोरस ठाढ़े रहौ उत,
 राम करै कछु हाथ न ऐहे ।
 साँरे छैल छुगौं जो मोहि तो,
 गातनि मेरे गुराइ न रहे ॥

नाक के चढ़ायत पिनाक भोह ढीली परै,
 चढत पिनाक भाह नाक मुसुमाइ दे ।
 कहँ रतनाकर त्यौं यौं हँ नचाइ लिपे
 मुख तँ ठरै न नैन गोरस गगाइ दे ।
 अनम बढायत अनग की तर गे नडे,
 धीरज धरा तँ प्रन-पायहि उठाइ दे ।
 गहति हियै ही हाँस हिय का हमारे हाय,
 पैयाँ परौ नैन मान करिगौ मिराइ दे ॥

गूँथन गुपाल बेठे बेनी बनिता की आप,
 हरित लतानि कुज माहि मुख पाइ के ।
 कहँ रतनाकर सँगारि निरवाहि वार,
 बार बार निरस निलोक्त रिमाइ के ।
 लाइ उर छेत क्यों फेरि गहि छोर लरै,
 ऐसे रही स्थालनि में लालन लुभाय के ।
 बाह गति जानि के सुतान मन मोद मानि,
 "करत कहा हौ" ? कह्यौ मुरि मुसुमाइ नै ॥

साँरी राधिका मान रियाँ,
 परि पौंनि गोरे गुविद मनायत ।
 नैन निचोहँ रहँ उनके नहि,
 बेन विनै के न ये कहि पावत ।

हारी सखी सिस दे रतनाकर,
 आन न भाइ सुभाइ पै छावत ।
 ठानि न आवत मान उह,
 इनका नहि मान मनावन आवत ॥

नीद लै हमारो हूँ दुनीदे हूँ सुनीदे सोए,
 सुनत पुनार नाहि परी हौं चहल में ।
 कह रतनाकर न ऐसी परित्तीति हुती,
 प्रीति-रीति हाय हिये जानो हो सहल में ।
 देसत हीं आपो दगनि हितहानी करी,
 अथ पडित्ताति परी ताहि की दहल में ।
 पार म अजान बलबीरहि निरास दियो,
 नीर-सिचे नरुनी उसार के महल में ॥

जानति हो जैस तुम छलके निधान काह,
 ताह पर मोहि प्रम-पूरन पगे लगौ ।
 वहे रतनाकर कपोलनि लै पीक-लीक,
 मोकाँ तुम मेर अनुरागहि रेंगे लगौ ।
 जैसे दरपन म दिरात उलटाई सत्र
 सृधो पर जानि जात जत्र लखिने लगौ ।
 मेरे मा-मुनुर अमल स्वच्छ माहि त्यों हौं,
 रपट जिगे हूँ प्यार निपट भले लगौ ॥

नम्रा रत्नारनि प बन-द्रुम डारनि पै,
 और कछु मनु मधुराई फिरि जाति है ।
 रहै रतनाकर त्याँ नगर अगारनि पै,
 रागनि पै नकर निराइ फिरि जाति है ॥
 गर-पमु पच्छिनि की चरचा चलारै कौन,
 पीन-गोहूँ में सरसाई फिरि जाति है ।
 तहौं जहौं बाँसुरी बजावत कहाइ चीर,
 तहौं तहौं मदन-दुहाइ फिरि जाति है ॥

चीति जाति वातनि में सुरद सँयोग राति,
 अतर धिरात नाहि सौँभ औ सनेर म ।
 कहे रतनाकर कुलिस-हिय घारी भारी,
 करत अकान आप नाम हू ह्वै हरे म ।
 मिलि घनश्याम सौ तमकि जो त्रियोग माहि,
 चमकि चमक उपजाइ उर मेरे म ।
 ताके बदले कौ दुख दुसह विचारि आज,
 गरक गई ह्वै मनौ बीजुरी अंधेरे में ॥

आइ अठरेलनि सौँ अमित उमग भरे,
 जिनके प्रमग सा तरुनि-अग धरै ।
 जीवन जुडावे रस धाम रतनाकर कौ,
 मानस में जिनसौँ तरग मनु ढहरै ।
 अग लागि मेरे त्रिन बाधक सुसेन सोइ,
 ऐसी कउ भाग-पूज होहि कुज डहरै ।
 दद हरे हीतल कौ, कौन नद-नद ? नाहि,
 सीतल सुगध मद मारुत की लहरै ॥

सोई फूल मूल से भग हैं सुन-मूल अरे,
 ताप प्रद चदन अनद-वद ही भयो ।
 न्हँ रतनाकर जो फनि-फुलमार हुतौ,
 सउ सुरामार मलयानिल वही भयो ।
 छरकि हमारे वाम अग की फरक ही सो,
 वाम सा सुदच्छिन प्रभाद सनही भयो ।
 कालिह ही भयो हा वीर निपम निपाकर कौ,
 आज मो सुधाकर सुधाकर सही भयो ॥

होरी रेनिवे कौ कपी केमरि कमोरि घोरि,
 उमगति आनंद की तरल तरग में ।
 न्हँ रतनाकर महर कौ लडैती छेल
 रोकै गैल आनि हरद्वारनि के सग म ।

मो तन निहारि धारि पिचकी-अधार अक,
 मारी मुसुकाय धारी उरज उतंग मै ।
 सोई पिचकारी रँगी सारी लाल र ग माहिं,
 सोई रँगी अखियो हमारी स्याम-र ग मै ॥



बिरह विधा की कथा अकथ अथाह महा,
 कहत वने न जो प्रीन सुक्रीनि साँ ।
 न्है रतनाकर बुझायन लगे ज्यौं काह,
 ऊधो को कहन हेत वज-जुवतीनि साँ ।
 गहनारि आयो गरी मभरि अचानक त्यों,
 प्रेम पर्यौ चपल चुचाइ पतरनी साँ ।
 नेकु वही बैननि, अनेक कही नैननि साँ,
 रही सही सोऊ कहि दीनी हिचक्रीनि साँ ॥

प्रम-भरी कातरता काह वी प्रगट होत,
 ऊधन अराइ रहे ज्ञान - ध्यान सरके ।
 न्है रतनाकर धरा कौ धीर धुरि भयो,
 भूरि भीति भागनि फनिद - फन करके ।
 सुर - सुरराज सुद्ध - स्वारथ - सुभाव - सने,
 ससय-समाण धाए धाम निधि हर के ।
 आइ फिरि ओप टाम-उम वज-गामनि के
 निरहिनि वामनि क वाम अग फरके ॥

आण हौं सिखावन की जोग मथुरा तै,
 तोपै, ऊधो य नियोग के वचन बतरावौ ना ।
 न्है रतनाकर दया करि दरस दीन्यौ,
 दुस दरिबे कौ तोपै अधिक बन्गौ ना ।
 टूक टूक हौं हे मन-मुसुर हमारी हाय,
 चूकि ह कठार बैन-पाहन चलाग ना ।
 एक मनमाहन तौ उमिके उजार्यो मोहि,
 हिय मै अनक मनमोहन बगारौ ना ॥

जोगिनि की भोगिनि की विरुद्ध प्रियोगिनि सौ,
 जग भ न जागती जमातें रहि जाईगी ।
 कहे रतनाकर न सुख के रहे जो दिन,
 तौ ये दुख द्वंद्व की न रात रहि जाईगी ।
 प्रेम-नेम छाँडि ज्ञान छेम जो बतावत सो,
 भीति ही नहीं तौ कहा छातें रहि जाईगी ।
 घातें रहि जाईगा न कबह की कृपा तैं इती,
 ऊधौ कहिनै को बस बात रहि जाईगी ॥

ढोंग जात्यौ ढरकि परकि उर-सोग जात्यौ,
 जोग जात्यौ सरकि सकष कँखियानि तैं ।
 म्है रतनाकर न लेखते प्रपंच ऐठि,
 धैठि घरा लेखने कहुँ धौ नखियानि त ।
 रहते अदेस नाहि नेप यह देखत हँ,
 देगत हमारी जान मोर पँखियानि तैं ।
 ऊधौ बख ज्ञान को बखान करते ना नैकु,
 देस लेते कबह जो हमारी अँखियानि तैं ॥

चाहत निकारन तिहँ जो उर-अतर त,
 ताको जोग नाहि जोग-भतर तिहारे में ।
 कहै रतनाकर रिलग करियै में होति,
 नीति विपरीत महा, कहति पुरारे में ।
 ताते तिहँ क्याइ लाइ हिय तैं हमारे बेगि,
 सोचिये उपाय परि चित्त चेतवारे में ।
 ज्यो ज्यो उस जात दूरि दूरि प्रिय प्रान-मूरि,
 त्यो त्यो घँस जात मन-मुकुर हमारे में ॥

धाती राखि रूप की हमारी हाय छाती माहि,
 बाल को मँधाती धाती बनि रिलगायी हे ।
 कहे रतनाकर सा सूधौ न्याय हा तौ ऊधौ,
 मधुपुगी माहि जो अरूप सा लरार्यो हे ।

परम अनूप एक कूरी रिख्य छाडि,
 रूपवती जुवती न कोऊ मोहि पायी है ।
 तातैं तुम्हें अय मनभावन सरूप सोई,
 हिय तैं हमारे काढि ल्यावन पठायी है ॥

हरि-नन-पानिप के भाजन दृगंचल तैं,
 उमगि तपन तैं तपाक करि धावै ना ।
 कहै रतनाकर त्रिलोक - शोक - मडल में,
 बेगि ब्रह्मद्रव उपद्रव मचारै ना ।
 हर को समेत हर-गिरि के गुमान गारि,
 पल में पतालपुर पैठन पठानै ना ।
 फलै बरसाने में न रागरी कहानी यह,
 बानी कहैं राधे आधे कान सुनि पानै ना ॥

रहति सदाई हरिआइ हिय - घायनि भं,
 ऊरध उसास सो भकोर पुरवा की है ।
 पीन - पीन गोपी पीर-भूरित पुनारति है,
 सोई रतनाकर पुकार पपिहा की है ।
 लागी रहे नैननि सौं नीर की भरी औ,
 उठै चित में चमक सो चमक चपला की है ।
 विनु धनस्याम धाम-धाम ब्रजमंडल में,
 ऊधौ नित बसति बहार बरसा की है ॥

हाल कहा वृकत निहाल परी बाल सनै,
 बसि दिन द्वैक देखि दृगनि मिधाइयो ।
 रोग यह कठिन, न ऊधौ कहिये के जोग,
 सृषौ सौ सँदेस याहि तु न ठहराइयो ।
 औसर मिली औ सरतान बजु पूछहिँ तो,
 कहियो क्यू न दसा देरी सो दिसाइयो ।
 आह कै कगाहि नैन नीर अनगाहि क्यू,
 कहिये कौं चाहि हिचरी लै रहि जाइयो ॥

धाई जित तित तै विदाई हेत ऊधन की,
 गोपी भरी आरति सँभारति न साँसु रो ।
 कहै रतनाकर मयूर-पच्छ कोऊ लिए,
 कोऊ गुञ अजली उमाहँ प्रेम आँसु रो ।
 भाव-भरी कोऊ लिए रुचिर सजाव दही,
 कोऊ महा मजु दानि दलकृति पाँसुरी ।
 पात पट नद जसुमति नवनीत नयौ,
 कीरति - कुमारी सुरवारी दई बाँसुरी ॥

कोऊ जारि हाथ कोऊ नाड नम्रता सौँ माथ,
 भापन की लास लालसा सौँ नहि जात है ।
 कहै रतनाकर चलत उठि ऊधन के,
 कातर है प्रेम मोँ सफल महि जात हैं ।
 सनद न पावत सो भाव उमगानत जो,
 तानि तानि आनन ठगे-से हठि जात है ।
 रञ्जन हमारी सुनौ रञ्जक हमारी सुनौ,
 रञ्जन हमारी सुनौ कहि रहि जात हैं ॥

हरिश्चोद

मद माती मुदित मयूर-मडली के काज,
 पारत पियूस कौन घन की थहर में ।
 मनु सुर मत्त या कुग्जन के हेत कौन,
 वेनसी भरत वेनु बधिक - निम्न में ।
 हरिश्चोद होति जो न मोह में महानता,
 तो वैधत मिलिद कैसे कज के उदर में ।
 मन कैसे रमत चकोर औ मरालन कौ,
 मोदवारे मनुल मयक मानसर में ॥

सरिता-सलिल है बहत कल-कल नाहि,
 सिलसिल हँसि है हुलाम-गगो हुलसत ।
 दारिम - फलन दत-राजि है निरसि लसि
 सोलि मुँह निम्न सुमन - धृन्द सरसत ।
 हरिश्चोद हरि हेरि रामा रजनी को हाम,
 मुदित दिगत है निरस - भरा निलसत ।
 हँसि हँसि लोटि-लोटि जात चारु चाँदनी है,
 मनुल मयक अहे मद मंद निहँसत ॥

दोऊ दुहँ चाहे दोऊ दुहुन सराहँ सदा,
 दोऊ रहँ लोलुप दुहन छवि न्यारी के ।
 एके भये रहँ नैन मन प्राण दोहुन के,
 रसिक घोड़ रहँ दोऊ रस क्यारी के ।
 हरिश्चोद केवल दिसात द्वे सरीर ही है,
 नातो भाग दारै है महेश गिरिवारी के ।
 प्राण-प्यारे चित में निगम प्राणप्यारी रते,
 प्राणप्यारा चमत हिये में प्राणप्यारी के ॥

नैन मदमाते वैन कछु अलसाते कड,
 उर मैं उमंग अधिराने की दुहाइ है ।
 रूप होत गात ना समात कचुकी में कुच,
 आनन लसात तेरे अजन लुनाइ है ।
 हरिऔध हेतु वीर वानरी वनी-मी डोलै
 धराते न धीर कैमी करति डिढाई है ।
 रग-ढग दीसे वृष्णि परत कुङ्क - नैनी,
 आन तेरे अगन अनग की चढाई है ॥

वयन सुधा में सनि सनि सरसन लागे,
 कान परसन लागे नयन ननेली कै ।
 याँगुरो नी पोरन में लालिमा दिपन लागी,
 गुन गरुआन लागे गरन गहली कै ।
 हरिऔध हरि हेरि हियरो हरन लागी,
 चाहि चितनन लागी कोरक चमेली कै ।
 मनु छनि छिति-तल पर छहरान लागी,
 छुअन छनान लागे केस अलबेली कै ॥

कुञ्ज में रागति ही मुख मनु ते
 केवल कवन की छनि औगुनी ।
 बात बहे तहाँ तौ लौ भइ
 नहि जाहि रही मन माहि कनों गुनी ।
 चौकि परी हरिऔध को चाहि,
 उमाहि चली बनि आनुल चौगुनी ।
 नौगुनी चानमयी चपला भइ,
 लोचन - चंचलता भई सौगुनी ॥

मधुगइ मनोहरता मुसुमानि मैं,
 औचक आइ समानी नइ ।
 रस नी रतिआन हूँ मैं हरिऔध,
 अनेक गुनी निपुनाइ ठई ।

हरिऔध

मद माती मुदित मयूर-मडली के काज,
 पारत पियूस कौन घन की थहर में ।
 मनु सुर मत्त या कुरङ्गन के हेत कौन,
 बेजसी भरत बेनु बधिक-निम्न में ।
 हरिऔध होति जो न मोह में महानता,
 तो धँघत मिलिद कैसे कज के उदर में ।
 मन कैसे रमत चकीर श्री मरालन कौ,
 मोदवारे मजुल मयक मानसर में ॥

सरिता-सलिल है वहत बल-बल नाहि,
 सिलसिल हँसि है हुलास-गगो हुलसत ।
 दारिम - फलन दत-राजि है निमसि लसि
 सोलि मुँह निरुच सुमन - वृन्द सरसत ।
 हरिऔध हरि हेरि रामा रजनी को हास,
 मुदित दिगेत है निमास - भरो विलसत ।
 हँसि हँसि लोटि-लाटि जात चारु चाँदनी है,
 मंजुल मयक अहे मद मद विहँसत ॥

दोऊ दुहँ चाहे दोऊ दुहँन सराहँ सदा,
 दाऊ रहँ लोलुप दुहन छनि प्यारी के ।
 एकी भये रहँ नैन मन प्राण दोहँन क,
 रमिक चनेइ रहँ दोऊ रस प्यारी के ।
 हरिऔध केवल दिखात है सरीर ही है,
 नातो भाव दीसै है महस गिरियारी के ।
 प्राण-प्यारे चित में निगम प्राणप्यारी रसे,
 प्राणप्यारा चमत हिये में प्राणप्यारी के ॥

नैन मदमाते वैन कछु अलसाते कढ,
 उर में उमंग अधिमाने की दुहाइ है ।
 कष होत गात ना समात कचुनी में कुच,
 आनन लखात तेर अजय लुगाई है ।
 हरिऔध हेतु गीर वागरी बनी-सी डोलै
 धरति न धीर कैसी करति डिढाई है ।
 रग-ढग दीखे बूझि परत कुगल - नैनी,
 आन तेर अगन अनग की चढाई है ॥

नयन सुधा में सनि सनि सरसन लागे,
 कान परसन लाग नयन नवेली कै ।
 आँगुरो को पारन म लालिमा दिपन लागी,
 गुन गरुआन लागे गरन गहेली कै ।
 हरिऔध हरि हेरि हियरो हान लागी,
 चाहि चितवन लागी कोरक चमेली कै ।
 मनु छनि द्विति-तल पर अहरान लागी,
 हुअन छवान लागे केम अलवेली कै ॥

कुञ्ज में राजति ही मुख मनु ते
 कै कल कजन की छनि औगुनी ।
 बात वह तहाँ तौ लो भई
 नहि जाहि रही मन माहि करों गुनी ।
 चोकि परी हरिऔध को चाहि,
 उमाहि चली बनि आमुल चौगुना ।
 नौगुनी चानमरी चपला भई,
 लोचन - चंचलता भई सोगुनी ॥

मधुराई मनाहरता मुसुरानि में,
 औचर आइ समाती नई ।
 रस की बलिआन हूँ मैं हरिऔध,
 अनेक गुनी निपुनाद ठई ।

मद छाके छगीली मिलासन हँ,
 सुमिलासिता की घर बेलि बई ।
 छलसी मा छटा अँखियान परै,
 छबि आननहँ पै छगुनी छई ॥

श्रीफल कहै ते सुरा होत सपने हँ नाहि,
 तोस होत न्यि मै न कदुक बराने से ।
 वचन कलस का कथान को उठावै कौन,
 रति को सिंधोरा कहे रहत लजाने से ।
 हरिऔध जामें बसि मत्त मन-भृग मेरो,
 कदत न दामै अजौ कौन हँ बहाने से ।
 सोभा सने साहँ सौँहँ ससि लौँ सु आनन के,
 सरम उरोज ए मरोज सकुचाने से ॥

छबि रावरी हेरि छगीली छकी,
 सिंगरे छल - छदन छोरै लगी ।
 अलकायली लात निहारी लखे,
 कुल कानि हँ ते मुख मोरै लगी ।
 हरिऔध निहारि के नेन सुहावनै,
 देसन हँ को निहोरै लगी ।
 तरुनाई तिहारी निहारि तिया,
 उकतान भगी तृन तोरै लगी ॥

वान ए वान करै फिर क्यों,
 सुनि तानन ही इन वानि विगारी ।
 मोहि गयो मन मोहन पै तो,
 नई तन हँ मन सौँ मन धारी ।
 पै हमें नूझि परी ना अनी,
 हरिऔध की मौँ रतियौ यह न्यारी ।
 वाररी रैस रँगी रँग लाल में
 मो अँखियान की पूतरी कारी ॥

सुधिये नीची लगे सप को भला,
 वक्ता भीहन को कत दीजत ।
 नूतन लालिमा लाभ किये कत,
 गोल्द कपाल की हे छवि छीजत ।
 चुक परी न चलै हरिऔष पै,
 नाहक ही इतनो रत सोजत ।
 राल हीं यो ही निहाल भट्टे,
 अब लाल कहा अँगियान को वाजत ॥

जीवन हे भिगर जग को,
 लसि जीवत तेर ही आनन ओर हे ।
 प्राण हे कामिनि को हरिऔष प,
 हेर्यो करे तव अँगियान ओर हे ।
 भाग हे गेमा तिहारा भट्टे,
 इतनो कत मीनत मान मरोर हे ।
 हे घनश्याम पै तेरो पपीहरा,
 हे मन-चद पै तेरो चरोर हे ॥

वैठी हुती मदिर में कलित दुरग नैनी,
 जाओ लसि राम मामिनी को मान मिलिगो ।
 क्यों हूँ कट्यो तहाँ आइ साँवगे छुडीलो डूल,
 जाऊ गान तानन ते ताके कान पिलिगा ।
 मुरा खोलि उम्भकि भुगेसे हरिऔष भौंके,
 लार सुदरी को मत्र रूप ऐसा मिलिगा ।
 नीलिमा गगन में मगन हूँ गयो कलक,
 आनन - उजाम में मयक निर मिलिगा ॥

चलन चहत प्राण-प्यारो परदेश आली,
 आहुन है हियग हमारो सुधि लेपे ना ।
 चकि-चकि रहत चहूनिन चिते के चित्त,
 बदन विनसत है के सुरति मरेसे ना ।

हरिऔध प्यार सग नरन पयाा ही मं,
 आपनी भलाइ पापी प्राण हूँ परेसै ना ।
 जिलसि जिलसि भरि-भरि बार बार चारि
 नैनहँ निगोरो आन नैन भरि दसै ना ॥

गामरी हचै जाती बार बार कहि वेदन को,
 बिलसि जिलसि जो विहार धरा रोती ना ।
 पीर उठे हियरा हमरो टूच टूक होत,
 ध्याइ प्राणनाथ जो कसक जिज सोती ना ।
 हरिऔध प्यारे के पधारि गये परदेस,
 नैन नसि जात जो सपन सग सोती ना ।
 तन जरि जातो नो न अँसुआ टरत आली,
 प्राण कटि जातो जो प्रतीति उर होता ना ॥

चूमि चूमि प्यार ते उचारती बचन ऐसे,
 जाते प्रेम प्रीतम का तोषे भूरि छानतो ।
 मोहित हवै तेरे चोच मोहि चारु चामीनर,
 हरिऔध हीरा हरि हिय पे लगावता ।
 ॥ रे कान बालत कहा ह कननीन धेठि,
 मंजुल मनान तेर चरा जरावता ।
 नैनन का तारो जौना बडा अँगियान-बारा,
 प्यारो प्राण बारा जा हमारो बँत आवता ॥

भार भये पे पधारे कहा भया,
 मरी सदा सुख ही की धरी है ।
 ॥ री कछु हरिऔध करै,
 हमे ता उाकी परतीति सरा है ।
 बूझि विचारि कहे किन चामरी,
 बीन ही मैं कत जाति मरी है ।
 सौंरे प्रेम पनीचि परी नहि,
 गो अँसिया अँसुआन मरी है ॥

कत पिचकारी कर माँहि लीने आवत है,
 ब्रज में जनात तू तो निपट हठीलो है ।
 नेक मेरी बातन को भूलि ना करत कान,
 हारी के गुमान में गजन गरजील है ।
 हरिऔष कहा लाभ अनरस कीने होत,
 सुनम उस हँ ब्रज कैमो तू लजीलो है ।
 ते हो लाल वा पे र ग छारिनो छत नौहि,
 गात-र ग ही सोवाको बमन रगीला है ॥

नीर बरसानो छोरि गोम्ल गड़ ही आन,
 चान्यो ना गोपाल एसा ऊधम मचाय है ।
 सारी बोरि दीनी सारी गान करि लीनो लाल,
 जैसो छल कीनो ताहि कैस बतराय ह ।
 हरिऔष अन तो न आपन रह हें नैन,
 करि कै उपाय मीन इनै समझाय है ।
 अग-लाग्यो र ग तो सलिल सो छुडाय लै है,
 नह सग लाग्यो तासो कैम छूटि पाय है ॥

छारो र ग चाप सो हमारे इा अगन पे,
 बनई बछू ना लाल भूलि हम कहि है ।
 बोरि दीनी भिगरी हमारी सारी कैमर म,
 मन में निनाद मानि मौन साधि रहि है ।
 हरिऔष अँसियाँ छकी हँ रागरी छनि में,
 इन पे दया ना मीने क्यों हँ ना निरहि है ।
 परिवो पलक को तो कैमहँ सहत प्यारे,
 परिनो गुलाल को गोपाल कैमे सहि है ॥

ताकि कै भारत हो पिचकारी,
 तऊ मन में तनमौ नहि सीतत ।
 र ग में सारी भिगोय दइ हम,
 तासो जराहनो हँ नहि दीजत ।

पे इतनी विनती हरिऔध,
 मया करि क्यों हमरी न सुनीत ।
 साँवरे रग रंगी अँसियान को,
 प्यारे गुलाल ते लाल स्यो कीजत ॥

